WAVES 2023

27th India Conference

वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृतिः आधुनिक परिप्रेक्ष्य

Man and Nature in Vedic Tradition: Modern Perspective

(Souvenir)

Dates:
1st (Friday) to 3rd (Sunday) December, 2023

Department of Sanskrit
South Campus, University of Delhi

वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति: आधुनिक परिप्रेक्ष्य

Man and Nature in Vedic Tradition: Modern Perspective

27th India Conference of WAVES

In collaboration with

Department of Sanskrit
South Campus, University of Delhi

Abstracts of 27th India Conference of Wider Association of Vedic Studies (WAVES)

Dates:
1st (Friday) to 3rd (Sunday) December, 2023

Venue:
S P Jain Auditorium & Conference Rooms
Faculty of Arts, South Campus, University of Delhi

Editors:
Shashi Tiwari
President, WAVES-India
Umesh Kumar Singh
Secretary (WAVES)
Aparna Dhir Khandelwal
Secretary (WAVES)

© Wider Association for Vedic Studies (WAVES)

Published with the technical assistance of:
INADS Press, USA
Publication wing of Institute of Advanced Sciences (INADS),
Dartmouth, USA

Conference Organization

Coordinators

Dr. Shashi Tiwari
Former Faculty
Maitreyi College
University of Delhi
President, WAVES-India.
shashitiwari_2017@yahoo.com

Prof. Bhartendu Pandey
Professor-in-charge
Department of Sanskrit
South Campus, University of Delhi
bpdu10@gmail.com

Prof. Ranjit Behera
Department of Sanskrit
University of Delhi
General Secretary
WAVES-India
rbehera@sanskrit.du.ac.in

Organizing Committee

Prof. Shashi Tiwari
Prof. Bhartendu Pandey
Prof. Satyapal Singh
Prof. Ranjan Kr. Tripathi
Prof Lallan Prasad
Dr. Dhananjay Acharya
Dr. Umesh K. Singh
Prof. Anju Seth
Prof. Omnath Bimli
Prof. Purnima Koul
Prof. Daya Shankar Tiwary
Prof. Ranjit Behera
Dr. Karuna Arya
Dr. Aparna Dhir Khandelwal
Dr. Kamna Vimal Sharma
Brig. (Prof.) JS Rajpurohit

Souvenir Editorial board

Prof. Omnath Bimli
Prof. Ranjit Behera
Dr. Aparna D. Khandelwal
Prof. Bhartendu Pandey
Prof. Shashi Tiwari
Dr. Umesh Kumar Singh

Program Committee

Prof. Shashi Tiwari
Prof. Meera Dwivedi
Prof. V P Dindoriya
Dr. Subhash Chandra
Dr. Mohini Arya
Dr. Aparna D. Khandelwal
Prof. Anju Seth
Dr. Lalita Juneja
Dr. Asha Lata Pandey
Dr. Prem Deoli
Prof. Bhartendu Pandey
Prof. Ranjit Behera
Prof. Tek Chand Meena
Dr. Uma Shankar
Dr. Vijay Shankar Dwivedi
Dr. Kamna Vimal Sharma
Dr. Dharma Sharma
Dr. Supriya Sanju
Dr.Vikas Sharma

Volunteers

Dr. Virma Sharma
Dr. Supriya Sanju
Ms. Akanksha Shree
Ms. Chanda
Ms. Sumedha Sharma
Mr. Manish Kumar
Dr. Kamna Vimal Sharma
Dr. Tahasin Mondal
Mr. Pintu Kumar
Mr. Suraj
Mr. Priti Saini
Ms. Monika Singh

Organizing Institutions

Department of Sanskrit, University of Delhi.
Wider Association for Vedic Studies (WAVES) Bharat

Introduction

I feel extremely glad to welcome all scholars, researchers and students coming from different parts of the country to participate in the 27th India Conference titled 'Man and Nature in Vedic Tradition : Modern Perspective' from December 1 to December 3, 2023 in the academically vibrant South Campus of University of Delhi. The Conference has been jointly organized by the Wider Association for Vedic Studies (WAVES) and the Department of Sanskrit, South Campus, University of Delhi. It gives us great pleasure, fulfillment and strength to our convictions, to note that an esteemed Department of Delhi University under the leadership of Prof. Omnath Bimli, and Prof. Bhartendu Pandey is with us as our knowledge partner to deliberate upon this motivating, challenging and relevant issue.

Veda is considered the eternal repository of all disciplines of knowledge. Study, contemplation and implementation of Vedic views and concepts in practical life have become more significant in modern times due to various reasons discussed by people from time to time. Academic Society WAVES aims to promote Vedic knowledge and ancient Sanskrit wisdom in all forms. Our conferences and other academic programs encourage research, study and practice of Vedic intellectual views and traditions. It is the responsibility of scholars of Veda to bring to the surface innovative ideas from the ocean of vast Vedic literature. This conference is a modest effort to advance towards achieving this objective.

It is a matter of pride for the members of Society that we are getting the support of esteemed Department of Sanskrit, South Campus, DU where fortunately I also taught since last three decades. Last two international conferences with WAVES International, and the third conference of WAVES (India) were held online, therefore, this event being offline is welcomed whole heartedly by all.

In line with its tradition, this time WAVES (India) has announced five prizes of Rs. 10000/- for outstanding research papers of young scholars, and for this 'Svargīyā Smt. Pramila Behera & Svargīya Kubera Behera Memorial Awards- 2023' is constituted by Prof. Ranjit Behera, Professor, Department of Sanskrit, University of Delhi .

The main theme of this conference is well received by scholars and researchers. About hundred papers written in English, Hindi and Sanskrit are received for presentation, among them 85 papers are selected for presentations. Their abstracts are published in the 'souvenir- 2023' after some editing by the editorial board. It also includes contributions from learned authorities and some information of both the organizing institutes. We look forward to the successful and meaningful dialogue amongst the scholars and students during the conference on this extremely important subject, which is deeply embedded in the Indian ethos.

Finally, I convey my gratefulness to all guests, delegates, members and volunteers of the conference and wish them success for their fruitful deliberations.On behalf of all the members of the Organizing Committee, I welcome all delegates and participants for making this academic activity an intellectually enjoyable experience.

November 20, 2023

Prof. Shashi Tiwari
President, WAVES (India)
Conference Coordinator

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

दृश्यमान और अनुभूयमान जगत् में जड और चैतन्य का भेद सुतरां प्रसिद्ध है। इस सर्वानुभवसिद्ध प्रसिद्ध 'सत्य-तत्त्व" का तार्किक व तात्त्विक निराकरण सम्भव नहीं है। जड ज्ञान का कर्म है और चैतन्य ज्ञान का कर्ता। कर्तृकर्मभेद का दार्शनिक सिद्धान्त इस भेदव्यवस्था को पुष्ट व प्रमाणित करता है। शुद्ध चैतन्य से अतिरिक्त सारा अस्तित्व जड'प्रकृति'क है। इस जड'प्रकृति'क अस्तित्व के यथार्थपूर्ण बोध से और उसके मङ्गलपूर्ण उपयोग से शुद्ध चैतन्य पुरुष को भोग और अपवर्ग नामक उभयविध सिद्धि प्राप्त होती है, ऐसी सांख्य-योग की व्यवस्था है- 'भोगापवर्गार्थं दृश्यम्'। पुरुष के लिए ज्ञेय व उपयोग्य जड-तत्त्व के अन्तर्गत अव्यक्त मूल प्रकृति और उस मूल प्रकृति से व्यक्त होने वाले सभी पदार्थ - महत्, अहङ्कार, इन्द्रियाँ, इन्द्रियों के विषय, पञ्चमहाभूत, और पञ्चमहाभूतों के संयोग से बनी सृष्टि- ये सब प्रकृति के ही विभिन्न रूप हैं, तत्त्वतः प्रकृति ही हैं। प्रकृति और पुरुष का सम्बन्ध अत्यन्त गहन है। मात्र शुद्ध चैतन्य-सत्ता का 'होना' ही असङ्ग पुरुष की प्रकृति से असम्बन्ध की स्थिति होती है। यह 'स्थिति' ही अपवर्ग की तात्त्विक 'उपस्थिति' है। इससे पूर्ववर्ती सभी सोपान और कुछ नहीं अपितु पुरुष और प्रकृति के बीच के सम्बन्ध के विविध आयाम हैं। मानव-जीवन में नित्य-निरन्तर घटित होने वाले सभी कार्य, चाहे वो वैचारिक हों अथवा भौतिक, प्रकृति के साथ पुरुष के सम्बद्ध होने पर ही सम्भव होते हैं। मनुष्य के द्वारा चिन्तन से आरम्भ कर 'चिन्तित' का भौतिक कार्यरूप में परिणति पर्यन्त प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों यथा बुद्धि, मन, अहङ्कार, इन्द्रियाँ, स्थूल पदार्थ आदि से सम्बद्धता अनिवार्य है, इसका यह आशय है।

प्रकृति और मनुष्य दोनों ही परम तत्त्व हैं। इनमें से प्रत्येक में जो 'ऊर्जा' है उसके बुद्धिपूर्ण सम्यक् समन्वय से ही दोनों की 'वास्तविक' 'उन्नति' सम्भव है। जब मनुष्य अपनी ऊर्जा को प्रकृति की ऊर्जा के साथ समन्वित कर लेता है तब प्रकृति स्वयं ही उसके समक्ष अपने सूक्ष्मतम रूप को अनावृत कर देती है और उसके कैवल्य लिए उसका आह्वान करने लग जाती है। तिरुचुली के चौदह वर्षीय बालक-'पुरुष' वेङ्कटरमण अय्यर को अरुणाचलम् पर्वत की 'प्रकृति' पुकारती है। प्रकृति की इस अन्तर्ध्वनि को अपने अन्तस् में अनुभव करते हुए हमारा बालक-'पुरुष' अरुणाचलम् में 'प्रकृति'स्थ हो जाता है और प्रकृति के सूक्ष्म रूप में इस प्रकार अनुस्यूत होता है कि वह परम चैतन्य को उपलब्ध होकर 'महर्षि रमण" बन जाता है !!

लौकिक मङ्गल के लिए भी आवश्यक है कि मनुष्य प्रकृति के साथ एक शान्तिपूर्ण सह-

अस्तित्व में रहे। वेदों में इस हेतु विविध प्रकार की प्रार्थनाएँ मनुष्य के मङ्गल के लिए की गई हैं। यजुर्वेद के 36 वें अध्याय के 17 वें सुप्रथित मन्त्र 'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः ..... शान्तिरेधि' के द्वारा स्थूल प्रकृति के विभिन्न आयामों के शान्तिकारक होने की बात कही गई है। अथर्ववेद के 19 वें काण्ड के 15 वें अध्याय के पञ्चम मन्त्र 'अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु' में प्रकृति के विभिन्न रूपों को मनुष्य के लिए भयरहित होने की प्रार्थनाएँ की गई हैं।

प्रकृति मानवजाति के लिए शान्तिमयी व अभयकारिणी हो, एतदर्थ प्रकृति के प्रति मनुष्य को अपनी नति उत्कृष्ट = उन्नति रखनी आवश्यक है। इस हेतु परमकारुणिक ऋषियों के द्वारा समग्र मनुष्यजाति के कल्याण के लिए अखण्ड ज्ञानराशि वेद को श्रुतिपरम्परा के द्वारा आज के मनुष्य समुदाय तक पहुँचाया गया है। यथा ऋग्वेद के पञ्चम मण्डल के 51 वें सूक्त के एकादश मन्त्र 'स्वस्ति नो मिमीतामश्विना ..... नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना' में स्पष्ट रूप से प्रार्थना की गई है कि सुचेतुना = उत्तम ज्ञान के द्वारा यह समस्त द्युलोक और पृथिवीलोक हमारे लिए कल्याणयुक्त हों। वर्तमान युग के मनुष्य के लिए भी यही धारणीय है कि प्रकृति के विभिन्न रूपों की ऊर्जाओं के साथ समन्वित होकर ही वह अपने अभ्युदय और निःश्रेयस को प्राप्त करने में सफल हो सकता है। 'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु' के रूप में अथर्ववेद 19.15.6 की सनातन भागवती श्रुति आज के मानव को भी सम्बोधित है। इस सम्बोधन का यही सन्देश दे रही है कि यदि हमें आज अपने सब अभीष्टों की सिद्धि करनी है, सब प्राप्तव्यों की प्राप्ति करनी है तो ऐसा हम प्रकृतिदेवी के साथ एक मञ्जुल सामञ्जस्य स्थापित करके ही कर सकते हैं- 'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय'।

मैं दिल्ली विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग, दक्षिण परिसर और वेव्स के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हो रहे सम्मेलन का उद्देश्य वेद के इसी शाश्वत स्वर को ध्वनि देना है। मैं इस के लिए अपने अगणित शुभाशय सम्प्रेषित करता हूँ।

नवम्बर 28, 2023

प्रो॰ ओमनाथ बिमली
आचार्य एवम् अध्यक्ष
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

विश्वासो द्रढीयान्

"वेव्ज" इति विश्वं विश्वतो वृत्त्वा वर्त्तमाना प्रवर्त्तमाना च वेदविनतानामत एव समुन्नतचेतसां विद्यावतां विद्यार्थिनाञ्च तदनुगानां काचन संस्था विद्यते। तामेतामात्मसमवेतां विधाय दक्षिणदिल्लीपरिसरे परिसरन् संस्कृतविभागो दिल्लीविश्वविद्यालयस्य राष्ट्रियामिमां शोधसंगोष्ठीं संकल्पयति। वैदिके वाङ्मये मानवः प्रकृतिश्च वर्त्तमानं तत्परिप्रेक्ष्यन्तथेति विषयोऽत्र स्वस्वविद्यावैभवेन विदुषां विचारास्पदीभवन् भवति।

साम्प्रतिके विश्वे मानवः प्रकृतिश्चानेकत्र परस्परं विरुन्धन्त्यावेव परिलभ्येते इत्येषा स्थितिर्विश्वस्थितिमेव वस्तुतो विरुन्धन्ती लोचनपथमेवातो विश्वमनुष्यताया निरुन्धन्ती निभाल्यते। ततो न केवलं भारतं वर्षं विश्वमेव विश्वं प्रत्युत वेदमनुरुन्धद्वर्त्ते। तस्यास्य वैश्विकस्य वेदानुरोधसंरम्भस्यैव कश्चनांशभूतः प्रकल्पोऽत्र प्रकृतात्मना प्रकल्प्यते। अनुरोधस्यास्य कोऽपि प्रसादोऽत्र श्रुत्याः श्रीभगवत्याः कृपाकुक्षितोऽवश्यमवाप्स्यत इति मे विद्यते विश्वासो द्रढीयान्।

नवम्बर 28, 2023

पाण्डेयो भारतेन्दुः
संयोजयिता शोधसङ्गोष्ठ्याः
प्रभारी आचार्यः संस्कृतविभागे
दक्षिणदिल्लीपरिसरे दिल्लीविश्वविद्यालयस्य

Message

WAVES, an international organization along with its New Delhi and other branches have been working since decades to promote understanding of Indian ethos developed by our ancient rishis and thinkers for the benefit of human civilization through conferences, seminars and publications.

Eminent Sanskrit scholars, philosophers, social and physical scientists, economists and experts in different disciplines have been associated with it and promoting the ideals of thinking, living and working together –

वसुधैव कुटुम्बकम्। सं गच्छध्वम् सं वद्वध्वम् सं वो मनांसि जानताम्।

to make the world a better place to live at a time when human civilization is facing challenges to its existence and development due to conflicts and wars, environmental degradation and climate change.

I congratulate Dr. Shashi Tiwari, President of WAVES India and her team for organizing the 27th. India Conference in the South Campus, University of Delhi, New Delhi from Dec.1-3, 2023 on a topic of great contemporary interest: 'Man and Nature in Vedic Tradition : Modern Perspective'. Welcome and offer my heartiest greetings to the eminent guests, delegates from different parts of India and abroad and fellow members of WAVES and wish grand success to the Conference.

November 25, 2023

Prof. Lallan Prasad
President, Kautilya Foundation
Former Head and Dean,
Department of Business Economics,
Faculty of Applied Social Sciences, University of Delhi.

वैदिक साहित्यदृशा प्रकृतिमानवयोरन्तस्सम्बन्धः आधुनिकयुगश्च

"अकल्पनीया खलु सृष्टिः प्रकृतिं विना" इति निश्चयेन वक्तुं शक्यते; अतो वैदिककालादद्य-पर्यन्तं मानवजीवनस्य कल्पना प्रकृतिं विहाय कथं भवितुमर्हति? आसर्गादेव प्रकृत्या सह मानवानामाधिभौतिकः आधिदैविकः आध्यात्मिकश्च सम्बन्धः आसीदिति निश्चप्रचम्। सम्पूर्णं वैदिकवाङ्मयमस्य प्रमाणभूतमित्यत्र नास्ति सन्देहः। सर्ववेदसारभूता मातृवत्प्रधानभूतेष्टकामप्र-दात्री सावित्री मनुष्याणां कृते आयु-प्राण-प्रजा-पशु-कीर्ति-द्रविण-ब्रह्मतेजसां प्रदात्रीति स्वीकृता, तद्यथा –

> स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
> आयुः प्राणं प्रजां पशु कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥
> (अथर्व॰ 19.71.1)

अनेनैकेन मन्त्रेण प्रकृतिमानवयोः त्रिविधः सम्बन्धः स्फुटं प्रतिभाति। आधिभौतिकदृशाधिदैवि-कदृशाच प्रकृतिरेव जलेन, वायुना ओषधीभिश्च संसारं रक्षति संधारयति च, तद्यथा -

> त्रीणि छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम्।
> आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि॥ (अथर्व॰ 18.1.17)

प्रकृतेः पृथ्वी-जल-अग्नि-तत्त्वानि मिश्रीभूतानि प्राणिनां संरक्षणं कुर्वन्ति, यथा- "त्रिवृतं सोमं त्रिवृत आपः आहुस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्भिः (अथर्व॰ 19.27.3)। एतदर्थं भृग्वङ्गिरा-दृष्टं सम्पूणमथर्ववेदीयं सुरक्षा-सूक्तं (१९.२७) द्रष्टव्यम्। प्रकृतिपोषकेषु वातादितत्त्वेषु निहिता शक्तिरेव भूतानां प्राणपोषकत्वेन दीर्घजीवनं प्रयच्छति तदा सर्वव्यापकं वायुमभिलक्ष्य वैदिकऋ-षिः कथयति –

> वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे। प्र ण आयूंषि तारिषत्। (ऋ॰ 10.186.1)
>
> यददो वात ते ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः। ततो नो देहि जीवसे॥ (ऋ. 10.186.3)

प्रकृतिरेव पर्जन्यमाध्यमेन निकामे निकामे वृष्टिं प्रदाय ओषधीभिः मनुष्याणां योगक्षेमं वहति, यथा- "निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षमो न कल्पताम्" (यजु॰ 22.22)। एषा प्रकृतिः सूर्यरश्मिद्वारा स्वकीयापूर्वदैवीशक्तिभिः भूतानां मनुष्याणां च देहं संजीवयति यथा- "अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम् (ऋ॰ 10.189.2)। ओषधिभिः सह मानवानां मातृवत् सम्बन्धः परिलक्ष्यते, यथा-

"शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत। (ऋ॰ 10.97.2)

एवमेव वैदिककाले प्रकृत्या सह मानवस्य पारिवारिकः आत्मीय-सम्बन्धोऽपि दरीदृश्यते, यथा-

भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं भ्रातान्तरिक्षमभिशस्त्या नः।
द्यौर्नः पिता पित्र्याच्छं भवाति जामिमृत्वा माव पत्सि लोकात्। (अथर्व॰ 6.120.2)
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि। (ऋ॰ 10. 186.2)
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः (अथर्व॰ 12.1.12)

इत्यादयः मन्त्राः द्रष्टव्याः। एतस्माद् व्यतिरिक्तं वैदिकऋषीणां प्रकृतिं प्रति आत्मीयसम्बन्धस्य पराकाष्ठा निस्सीमश्रद्धा च ऋग्वेदस्य अरण्यानी-सूक्ते द्रष्टुं शक्यते। मानवजीवनेन सह अरण्यरूपप्रकृतेः कीदृशः सम्बन्धः सामञ्जस्यं च परिलक्ष्यते, तत्सर्वमस्मिन् (ऋ॰ 10.146) सूक्ते प्रतिपादितम्। अत्र ऋषिः अरण्यानीं जनताजनार्दनस्य मातृरूपेणोपस्थापयति यथा-

आञ्जनगन्धिं सुरभिं बहून्नामकृषीवलाम्।
प्राह मृगाणां मातरमरण्यानिमशंसिषम्॥ (10.146.6)

प्रकृतिः स्वभावतः गुणत्वेन च निर्माणात्मिका विकासात्मिका च भवति। मानवस्य गृहस्थाश्रमोऽपि तथैव भवति। प्रकृतेः निर्माणात्मकविकासात्मकगुणाभ्यामेवाश्रमोऽयं शनैः शनैः सृष्टिप्रक्रियाद्वारा विकासं करोति, यथा शतपथ-ब्राह्मणं सङ्केतयति- "ते वाऽआर्द्राः स्युः। एतद्ध्येषां जीवमेतेन सतेजस एतेन वीर्यवन्तस्तस्मादाद्राः स्युः" (1.3.4.1); जनयत्यै त्वा संयौमीति (1.2.2.3)। तदानिन्तने काले मानवाः स्वकीयजीवनोन्नयनाय तेजसः, वीर्यस्य ओजसादिकस्य कामनयाग्निदेवं सूर्यदेवं वा स्तुवन्ति स्म, यथा यजुर्वेद उक्तम्–

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि,
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽस्योजो मयि धेहि। (19.9)

बाह्मणग्रन्थेषु प्रतिपादितं सृष्टियज्ञमभिलक्ष्यैव मनुष्यैः अपि प्रजापतित्वं प्राप्यर्थं लौकिकसम्भारैः सह सम्पाद्यमानानां बहुविधयज्ञ-यागानां परिकल्पना विहिता। तेषां यज्ञ-यागादीनामाश्रयः सामग्रीदृशा विधिदृशा च प्रकृतिरेवास्ति। "अग्नीषोमात्मकं जगद्" इति श्रुतेर्वचनमवलम्ब्यैव यज्ञ-होमादयः कल्पिताः। विषयेऽस्मिन् शतपथब्राहमणे (1.6.3.23-24; 11.1.6.19 इत्यादयः) बहुचर्चितम्। वैदिकऋषीणां दृढावधारणास्ति यदेते ब्रीहयः यवादयः सर्वेऽन्नकणाः यज्ञादेवोत्पन्नाः (यजु॰ 18.12)। तथैव अश्मा मृत्तिकाः पर्वताः, सिकताः हिरण्यं, लोहं सीसम् इत्यादयः धातवश्चापि सृष्टियज्ञेनोद्भूता विद्यन्ते, यथा यजुर्वेद उक्तम्-

> अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे
> सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च
> मे श्यामं च मे लोहं च मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। (18.13)

अनेनेत्थं प्रतीयते यत् प्रकृतिरेव भूतानां वा मनुष्याणां वा आधारभूता विद्यते। 'अतो मानवः स्वकीयाय जीवनाय प्रकृत्याश्रितः' इत्यत्र मनागपि सन्देहो नास्ति।

आध्यात्मिकदृशाऽपि मनुष्यस्य जीवनं प्रकृतेरूपादानरूपेण द्युलोके विद्यमानादित्याधीनम्, यतो ह्यसावेव स्थावरजङ्गमात्मकस्य जगतः प्राणप्रदाताऽऽत्मारूपेण स्वीक्रियते, यथा- 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' (ऋ॰ 1.115.1)। वैदिकसंहितासु संकलितेषु वेदमन्त्रेषु च प्रकृतेरात्मतत्त्वरूपेण स्तुताः सर्वे देवा अपि आधिदैविकरूपेणाध्यात्मिकरूपेण च मानवैः सह प्रत्यक्षतः न केवलं सम्बद्धाः प्रत्युत तेषां जीवनमपि सर्वथा तत्रावलम्बितमस्ति। एते देवाः प्रकृतिं प्रति वैदिकऋषीणामुदात्तभावनामपि प्रकाशयन्ति।

इत्थमुपरितनैः संक्षिप्तसन्दर्भैः प्रकृतिः मानवश्च परस्परं पोषक-पोष्य-आधाराधेयादिभिर्भावैः सम्बद्धः। परन्तु साम्प्रतिके युगे प्राणदायिनिप्रकृतिं प्रति मनुष्याणां तादृशी भावना न दृश्यते। भौतिकविकासाय भौतिकसौख्यार्थञ्च तस्याः दोहनममर्यादितरीत्या क्रियते। तस्मात्कारणात् प्राकृतविप्लवैः मानवजीवनमिदानीं कष्टप्रदमसुरक्षितञ्च जातम्। सम्भवतः मानवस्वभावाद्भीतो वैदिकऋषिर्गाथिनो विश्वामित्रः "सचेतो भूत्वा मानुषी प्रजा प्रकृतिं प्रति औदार्यपूर्वकं व्यवहरतु" इत्युपदिशति-

> द्यौश्च त्वा पृथिवी यज्ञियासो नि होतारं सादयन्ते दमाय।
> यदी विशो मानुषीर्देवयन्तीः प्रयस्वतीरीळते शुक्रमर्चिः॥ (ऋ॰ 3.6.3)

प्रो. राजेश्वरमिश्रः
कुरुक्षेत्रम्

Conference Awards

Svargīyā Smt. Pramila Behera & Svargīya Kubera Behera Memorial Awards - 2023

The Conference Awards for the 27th India Conference of the Wider Association for Vedic Studies (WAVES) aim to recognize and honor excellence in scholarly contributions.

Young Scholars Award

The "Young Scholars Award" is a distinguished recognition presented to scholars under the age of 45. This award celebrates outstanding contributions in the field of Vedic Studies, emphasizing the significance of both research paper writing and presentation skills.

Five Cash Awards

In addition to the Young Scholars Award, the Conference also presents five notable cash awards to deserving individuals. These awards are a testament to the commitment and excellence demonstrated by the recipients. The breakdown of the cash awards is as follows:

1. **First Prize:** Rs. 3500.00
2. **Second Prize:** Rs. 2500.00
3. **Third Prize:** Rs. 2000.00
4. **Encouragement Awards:** Rs. 1000.00 each (2 awards)

These cash awards not only recognize outstanding achievements but also provide encouragement to emerging scholars in the field. The Conference takes pride in fostering a spirit of excellence and dedication within the Vedic Studies community.

Committee of Judges

Prof. Kamla Bhardwaj	Former Dean, Student Welfare Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, Delhi
Prof. Shrivatsa Shastri	Department of Sanskrit Motilal Nehru College University of Delhi, Delhi
Prof. Pratibha Shukla	Head, Department of Sanskrit Dean, Sahitya Sanskrit Samkaya Uttarakhad Sanskrit University Haridwar

Contents

Introduction III

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय V

विश्वासो द्रढीयान् VII

Message IX

Keynote Address XI

I English Abstracts

1: Ecological Awareness in Vedic and Ancient Sanskrit Texts (*Prof. Shashi Tiwari*) 1

2: Interactions of Man with Nature: A Vedic View (*Dr. Aparna Dhir Khandelwal*) 2

3: *Sūkṣmāntarikṣa* (सूक्ष्मान्तरिक्ष) (*Sati Shankar*) 2

4: Nature in Vedic Thought: Veda Saṃhitā Mantras Reveal Nature Worship for Human Development (*Raghava S. Boddupalli, PhD*) 3

5: Sustainable Living: Vedic Traditions and Our Ecological Future (*Ravi Shankar Vyas*) 4

6: The Best Hospitality of Bharatiya Tradition "अतिथिः शिवो नः": A Special Reference to the Ancient Scripture (*Dr. Prashanta Kumar Dash*) 5

7: Getting back to the Drawing Board- Unsoiled and Ideal (*Vineet Mani*) 6

8: *Satya, Ṛta, Prakṛti* and *Puruṣa*: A Philanthropic Vision of The Vedas (*Dr. Partha Sarathi Bhattacharya*) 7

9: Varuna Deity, Nature and Man (*Dr. Madhav Gopal*) 8

10: Nature In Vedic Tradition And Its Relation To Modern Man (*Dr. Manasi Sahoo*) 9

11: Man And Nature In Vedic tradition- Modern Perspective (*Dr. A. Annapoorani*) 10

12: Water in *Ṛgveda*: The Real Gift of Nature to Man (*Prof. Asha Rani Tripathi*) 11

13: Man and Nature in Vedic Tradition (*Dr. Asha Lata Pandey*) 12

14: The Potential of a *Yajñya* in Spiritually Purifying the Environment (*Dr. Jayant Balaji Athavale[1] and Mr. Sean Clarke[2]*) 13

15: Man and Nature in Vedic Tradition (*Dr. Kakali Bezbaruah*) 13

16: The Glimpse of Creationism as Depicted in Śuklayajurvedīya Dayānanda-Bhāṣya (*Dr. Ranjan Lata*) 14

17: Vedic Ecology for a Better World (*Sabita Dash*) 15

18: Human Beings Required for Well-being of Nature (*Dr. Richa Sikri*) 16

19: Relationship between Man and Nature in Vedic Tradition (*Dr. Sanchita Kundu*) 17

20: Environmental Laws in *Dharmaśāstra* (*Dr. Sushree Sasmita Pati*) 18

21: Eco-Spirituality and Environmental Sustainability in Context of the *Ṛgveda Saṁhitā*: A Modern Perspective (*Ashlesha Goswami*) 18

22: Vedic Tradition and Trees (*Saurabh Awasthi*[1], *Aanchal*[2], *Ayushi Tiwari*[3], *Somya*[4], *Kasturi Saha*[5], *Mitushi Khurana*[1], *Anand Sonkar*[6], *Vijay Rani Rajpal*[7], *Romila Rawat Bisht*[8] *and Dinesh Kumar Gautam*[9]) 19

23: Importance of *Yajña* in Environmental Purification and Its Inevitability in Modern Society (*Dr. Bhagyashree Sarma*) 20

24: *Yajña* and Environmental Resilience: Integrating Ancient Vedic Wisdom into Modern Eco-Scientific Paradigm (*Dr. Bhavpreeta Thakur*) 21

25: E*maśca ityā ca ma gatiśca me yajñena kalpantām* एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् (*Dr. C. L. Prabhakar*) 22

26: Nature and Its Timeless Governing Principle for Man: Vedic *Ṛta* (ऋत) (*Charan JS Manektala*) 23

27: The Significance of the Extension of *Anna* in Different Contexts, Prevailing in the Vedas, Both from the Ancient Perspective and the Modern Outlook: A Study (*Kankana Goswami*) 24

28: Man and Nature: A Poet-Philosopher's View (*Dr. Munmun Chakraborty*) 25

29: The Agriculture and Environment During the Mauryan

Period: An Analytical Perspective for Use in Modern Era (*Brig. (Prof.) J. S. Rajpurohit, Ph. D.*) 26

30: Influence of the Veda on Vivekananda: In the Context of Human Freedom (*Lipika Roy*) 27

31: Nature and Rights of Women in Conjugal Relations as Shown by Hymns of *Ṛgveda* (*Shivam Chaudhary*) 28

32: Significance of Plants in the *Atharvaveda*: A Perspective for the Post-Covid Period (*Dr. Tahasin Mondal*) 29

33: Man in Prison (*D. Pramod*) 30

34: Harmony of Nature and Spirit: Exploring Purity and Spiritual Insights in the Vedas (*Ashruth Swaminathan Suryanarayanan*) 31

35: Man and Nature in Vedic tradition : Modern Perspective (*Kadambari Pandey*) 32

36: Vedic Management of Natural Disasters (*Dr. Umesh Kumar Singh*) 33

37: Agnihotra: A Boon to Human and Environment (*Kiran Sharma*) 34

II हिन्दी-सारांश 35

38: यजुर्वेद में वर्णित मनुष्य : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में (प्रो॰ सिद्धार्थ शंकर सिंह) 37

39: वैदिक परिप्रेक्ष्य में मनुष्य एवं प्रकृति (सत्येन्द्र लोधी) 37

40: वैदिक प्रकृति में अग्नि: आधुनिक परिप्रेक्ष्य (डॉ॰ इंदु सोनी) 38

41: वैदिक साहित्य में प्राकृतिक शक्तियों द्वारा दौत्यकर्म (सीमा शर्मा) 39

42: वैदिक साहित्य में मनुष्य और प्रकृति का पारस्परिक सम्बन्धोल्लेख: आधुनिक परिप्रेक्ष्य में (डॉ॰ विशाल भारद्वाज) 40

43: वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य (शीतल जोशी) 41

44: वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य (दुर्गाप्रसाद रथ) 42

45: योगदर्शन में जीवात्मा और प्रकृति (प्रो॰ हरीश) 43

46: अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्ध का वैदिक परम्परानुसार चित्रण (डॉ॰ दिव्या त्रिपाठी) 44

47: वैदिक साहित्य में स्वप्नविज्ञान (निखिल राज आर्य) 44

48: कालिदास-साहित्य में वर्णित पशु - वैदिक परिप्रेक्ष्य (डॉ॰ प्रतिभा शुक्ला) 45

49: वैदिक संस्कृति, प्रकृति और पर्यावरण (ज्योति अम्बष्ट) 46

50: वैदिक संस्कृति, प्रकृति और पर्यावरण (डॉ॰ साधना शर्मा) 47

51: वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य (त्रिद्वीप सरकार) 48

52: वैदिक परम्परा में प्रकृति के प्रति जागरूकता (तुषार कुमार) 49

53: अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात् (डॉ॰ अर्चना रानी दुबे) 49

54: वैदिक साहित्य में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक सन्दर्भ (डॉ॰ आशुतोष कुमार) 50

55: ईशावास्योपनिषद् में मानव एवं प्रकृति केन्द्रित चिन्तन एवं संधारणीय विकास (बलराम कुमार) 51

56: वैदिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक मानव जीवन (चन्दा) 52

57: अथर्ववेद में प्रकृति एवं मानव का सम्बन्ध (चिरञ्जीत सरकार) 53

58: वेदों मे प्रतिबिम्बित प्राकृतिक उपादानों में आत्मीयता का प्रसार (डॉ॰ दिलीप कुमार जायसवाल) 54

59: अथर्ववेद में वर्णित प्राकृतिक औषधियाँ (देवराज) 54

60: मानवीय चेतना का जागरण : वेदोक्त उषस् के सन्दर्भ में (डॉ॰ करुणा आर्या) 55

61: ऋग्वेद में नदियों की स्तुति (डॉ॰ ललिता जुनेजा) 56

62: ऋग्वेद में वर्णित मानव और प्रकृति का प्रथम संवाद 'विश्वामित्र-नदी संवाद' : आधुनिक परिप्रेक्ष्य (मनीष कुमार) 57

63: वैदिक साहित्य में वर्णित मानव-अभ्युदयार्थ मित्रदृष्टि (डॉ॰ मोहित कुमार मिश्रा) 58

64: त्रिगुणत्मिका प्रकृति - वैदिक और आधुनिक विज्ञान के परिपेक्ष्य में (डॉ॰ नीलम गौड) 58

65: ऋग्वेदीय सृष्टि उत्पत्ति विषयक विवेचन (सुश्री ऋचा) 59

66: भरद्वाज ऋषि द्वारा दृष्ट मन्त्रों में प्राकृतिक बिम्ब (पिण्टू कुमार) 60

67: वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य (डॉ॰ संगीता कुमारी) 60

68: वैदिक वाङ्मय में जल विमर्श : आधुनिक परिप्रेक्ष्य (सपना) 61

69: वेद में पारिस्थितिक तन्त्र का चिन्तन एवं उसका आधुनिक परिप्रेक्ष्य (स्मृति बाला) 62

70: वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में (सुमित कुमार पाण्डेय) 62

71: वेदों में वर्णित पर्यावरण संतुलन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महत्त्व (सुप्रिया संजू) 63

72: आधुनिक समय में यज्ञ की उपादेयता (डॉ॰ विजित कुमार) 64

73: वैदिक परम्परा के सन्दर्भ में समकालीन संस्कृत साहित्य में प्रकृति का विश्लेषण (आकांक्षा श्री) 64

74: वैदिक देवत्व परम्परा – प्रकृति संरक्षण की मानवीय योजना (प्रो॰ अंजू सेठ) 65

75: वैदिक परम्परा में ग्रहरूप प्रकृति और मनुष्य का सम्बन्ध (डॉ॰ कल्पना तिवारी) 66

76: मनुष्य और प्रकृति का अन्तर्सम्बन्ध (सुमेधा शर्मा) 67

77: वेदान्त दर्शन में मानव और प्रकृति का निदर्शन (डॉ॰ विनोद कुमार तिवारी) 67

78: महर्षि दयानन्द के वैदिक परिप्रेक्ष्य में मनुष्य व प्रकृति के मूल में अव्यक्त शक्ति का चिन्तन (डॉ॰ श्वेतकेतु शर्मा) 68

79: वैदिक वाङ्मय में वर्णित प्रकृति एवं चिपको आन्दोलन : एक विमर्श (डॉ॰ मृगाङ्क मलासी) 69

80: वेदों में पर्यावरण, वन एवं वन्यजीव का सरंक्षण: आधुनिक सन्दर्भ में (सूरज) 70

81: अथर्ववेद में वर्णित प्राकृतिक औषधियाँ : आधुनिक सन्दर्भ (प्रीति सैनी) 71

III संस्कृत-सारांशा: 73

82: आधुनिकदृष्ट्या वैदिकपरिवेशभावना (डॉ॰ शिप्रा राय) 75

83: यास्काभिमत-काल-विमर्श: (प्रो॰ रणजित बेहेरा) 75

84: वैदिकदेवतामनुष्ययोर्मध्ये अन्तर्सम्बन्धः (डॉ॰ कृष्णकान्त-सरकारः) 76

85: वैदिकदेवानां मूर्तामूर्तविचारः (हिमांशु-रायः) 76

IV Appendices 79

Department of Sanskrit, DU 81

विश्वविद्यालय कुलगीत 84

A Brief Introduction of 'WAVES' 85

वेव्स कुलगीत 87

WAVES Conferences 89

WAVES Publications 95

Author Index 100

Part I

English Abstracts

1

Ecological Awareness in Vedic and Ancient Sanskrit Texts

Prof. Shashi Tiwari

Former Professor, Maitreyi College, University of Delhi
President, WAVES (India)

Shashitiwari_2017@yahoo.com

Ecology is the science of the relationship between living organisms and their environment. It also considers the effects upon the environment and ecosystems of various human activities. Vedic views revolve around the concept of nature and life. Vedic sages visualized significance of ecological balance for the welfare of all living beings and inanimate things. They were great scientist who realized unity of cosmos and significance of *Pañcabhūtas*. They developed rituals, customs and traditions for purity of nature. According to Vedas, structure of the world is nature-oriented-*'Soma-sūryātmakam jagat'* or *'Agni-somātmakam jagat'*. Vedic supposition proves true and scientific because he energy cannot be generated without the co-operation of fire and water. For ecological study, Vedic division of the universe is the most important. The universe is well measured, into three intertwined webs/regions: *Pṛthivi*, the earth, *Antarikṣa*, the aerial or intermediate region, *Dyau*, the heaven or sky. Vedic deities are natural elements or sub-elements. *Yajña* is a tool to get hold over naturalistic atmosphere. It is a part of Vedic ecological science; as it is said to be 'Nucleus of the whole world' in Yajurveda. *Yajña* signifies the theory of give and take– *Dravya* (material), *Devatā* (deity) and *Dāna* (giving) for production and also for maintenance. Shri Krshna's ecological concern are expressed through his activities in his life. Ecology has been the inseparable part of the ancient intellectual thought, this is the essence of this paper.

2
Interactions of Man with Nature: A Vedic View

Dr. Aparna Dhir Khandelwal
School of Indic Studies
Institute of Advanced Sciences (INADS), Dartmouth, USA

dhir.aparna@gmail.com,adhir@inads.org

In present times, we find ourselves as robot working day and night. Sometimes we feel we are living a machine life as it is based on particular routine. The composition of human being and its various biological systems like respiration, digestion, reproduction etc work in perfect harmony with each other. Is it because the supreme has created a perfect model of machine or is it more than just a machine? Vedic scriptures take us to be knowledge of '*Pañcmahābhūta*s' as the power of divine – **अग्निः सर्वा देवता** (Taittirīya Samhitā 2.2.9.1). Since the beginning of cosmos- Ether (**आकाश**), Earth (**पृथ्वी**), Water (**जल**), Air (**वायु**), and Fire (**अग्नि**) are the elements that connects human being to the nature such as **अयमग्निर्वैश्वानरः। योऽयमन्तः पुरुषे, येनेदमन्नं पच्यते** (Śatapatha Brāhmaṇa 14.8.10.1) . Thus, all the bodily activities happen within the body in relation to these *Pañcmahābhūta*s or five gross elements. 'Nature is provided to man', this is the physical outer world which we all can see but 'how this nature interacts within the body', this is the Vedic wisdom will get discussed here.

3
Sūkṣmāntarikṣa (सूक्ष्मान्तरिक्ष)

Sati Shankar
GSFN Bharat, New Delhi 110024, Bharat

satishankar@gsfn.in
https://orcid.org/0000-0003-4638-1745

The Vedika tradition offers a multifaceted view of "this whole" is *Agni* [SB 7.3.1.12], pervaded *antarikṣa*, [*Tāṇḍya Br*, 15.12.2] and the *sūkṣmāntarikṣa*, the humans or more aptly, *Jīva*, along with *Śarīraṁ* [SB 6.1.1

4]. Rooted in the *Ṛta*, which represents the cosmic order or the universal principles that govern the world and the universe. Human existence is deeply interconnected with the cosmos, governed by *Dharma*. The idea of interconnectedness and unity of the *sūkṣmāntarikṣa* and *antarikṣa*, "This Whole" is *agni* [SB 7.3.1.12] = *prajāpatiḥ* [SB 6.2 1.23] = *puruṣaḥ* [SB 6.1.1.5] = *brahma* [SB 10.4.1.5]. It is beautifully encapsulated [*Chāndogya Up.* 6.1.7], which says, "All this is, indeed, Brahman" and ascertains further by *"Tat Tvam Asi"* [*Chāndogya Up.* 6.8.7], hence establishes cosmic responsibilities. [RV. 1.89.6] giving *sūkṣmāntarikṣa* the greatest strength in its capacity to depict the complexities and vulnerabilities of human existence. What we call *Prakṛti*, i.e., the nature is intricately connected to *Ṛta*, [RV.1.90.6; RV. 1.164.23; RV. 10.190.1], and [*Taittiriya Saṁhitā*, 1.2.8.1]. The order and balance between the *antarikṣa* and the *sūkṣmāntarikṣain*, the natural world as a reflection of the cosmic order. [RV.1.89.2; RV.1.25.8], harmony in nature, [RV. 5.44.4; RV. 7.49.4] and moral and ethical [RV. 10.191.1] are established. We can expect a correct reply if and only if we pose a correct question. This paper, explores man and nature from the above perspective which leads ultimately to the space and time to which the modern natural and mathematical sciences have started converging. It is a tiny part of my long discourse under preparation, *"Vedic Hṛdaya Chakṣu."*

4

Nature in Vedic Thought: Veda Saṃhitā Mantras Reveal Nature Worship for Human Development

Raghava S. Boddupalli, PhD
Institute of Sanskrit and Vedic Studies (ISVS)
Sri Siddhi Vinayaka Temple, Sastry Memorial Hall
Sanjayanagar, Bangalore 560094

raghava7boddupalli@gmail.com

Vedic texts have several references in the form of *Mantras*/liturgies on medicinal plants, crops, environmental protection, ecological balance, weather cycles, rainfall phenomena, hydrologic cycle, and related subjects that directly indicate the high level of awareness of the *Ṛṣis* and people of that time. The protection of the environment was understood to be

closely related to the protection of the dyaus or heavens and *Pṛthivi* or earth. Between these two lay the atmosphere and the environment that we refer to as the *paryāvaraṇa*. Many of the Ṛgvedic hymns therefore vividly describe the *Dyāvā Pṛthivī* that is the heaven and earth. The Ṛgveda venerates deities like *Mitra, Varuṇa, Indra, Maruts* and *Āditya*, who are all responsible for maintaining the requisite balance in the functioning of all entities of nature whether the mountains, lakes, heaven and earth, the forests or the waters. Trees are considered as devatas (deities). In the Chaturvedas, many herbs, vines, shrubs and tree species are described. Our *Ṛṣis* in the Vedas have offered hundred-fold respects and prostrations to the trees In order to perform *Yajña* and other Vedic rituals, several plants/trees grown in nature and their by-products are used for the protection of climate and environment. *Yajña*, rainfall and crop growth is the cycle of nature, which is vital for human survival. *Ṛta* is the natural law or cosmic order that is the governing principle of the universe and its events. Our *Ṛṣis* recognized that changes caused due to indiscreet human activities could result in imbalances in seasons, rainfall patterns, crops and atmosphere and degrade the quality of water, air, and earth resources. These ancient treasures of vast knowledge reveal a full cognizance of the undesirable effects of environmental degradation, whether caused by natural factors or human activities.

5
Sustainable Living: Vedic Traditions and Our Ecological Future

Ravi Shankar Vyas
Assistant Professor
Department of Philosophy
Govt M.S. College, Bikaner, Rajasthan

darshanikravi@gmail.com

In an era marked by environmental challenges, the wisdom embedded in Vedic traditions provides a profound and timely guide for forging a sustainable path forward. This abstract explores the profound relevance of Vedic wisdom in the context of contemporary ecological concerns and the imperative for sustainable living. The Vedic traditions, originating

thousands of years ago in the Indian subcontinent, have long acknowledged the intrinsic interconnectedness between humanity and the natural world. At the heart of Vedic thought lies the principle that humans are not just custodians of the environment but an integral part of it. This understanding offers invaluable insights into harmonizing our existence with the planet. The Vedic ethos emphasizes the ethical treatment of the environment, a concept that resonates deeply in an age characterized by climate change and biodiversity loss. The teachings of the Vedas invite us to perceive nature as a sacred partner and to recognize our duty in maintaining the balance of the cosmos. Vedic traditions and their potential to illuminate a sustainable way of life. By revisiting these ancient teachings, we can address contemporary ecological challenges, promote sustainable living practices, and foster a sense of unity and responsibility towards the natural world. The Vedic traditions provide a beacon of hope for a more ecologically conscious and sustainable future.

6

The Best Hospitality of Bharatiya Tradition "अतिथिः शिवो नः": A Special Reference to the Ancient Scripture

Dr. Prashanta Kumar Dash

Assistant Professor, Deptt. of Sanskrit & Hindu Studies (FACIS)
Sri Sri University, Vidyadharpur, Godisahi, Cuttack, Odisha, India-754006

pdash265@gmail.com

This is the richest tradition on the earth; because this soil clearly says *"Kaṇa kaṇa me Śiva hai"* Here Veda says Lord Shiva' consciousness exists in each particle. This tradition was started by the Ṛgvedic period **"अतिथिः शिवो नः"** (ऋग्वेद.5.1.8) The words *'Atithi'* and *'Shiva'* are so many factors in present society. For commercial purposes, the treatment of a dealer is very important for a customer; this treatment may spread like fire; the popularity of a dealer should attract and appreciate the customers; the natural dealing of the owner; then one day he or she may be a good entrepreneur. This word of the scripture has so much power which makes a good person and a good businessman. The good manners and the

practice of dealing in his store or any organization may increase day by day. If someone comes to our house without any information, at the same time our duty is to deal with that person is the major rule of; that person may be good or bad we don't know still deal as God; because it is our tradition, that person may negative mind, it may change his hospitality. The famous line from Taittiriya Upanishad "अतिथि देवो भव" (तैत्तिरीयोपनिषद् शिक्षावल्ली-1.11.2) We deal with men and women like Shiva and Parvati; this dealing may be used in various places like – conferences, airports, hotels, and shopping malls etc. There are many places that have mentioned about the good hospitality in Bharatiya scriptures.

7
Getting back to the Drawing Board- Unsoiled and Ideal

Vineet Mani
Author
Indore, Madhya Pradesh

vineetmani30@gmail.com

Inclusivity was always an integral part of our lives, in fact a way of life. With series of invasions and incorporation of other ideologies where humans were considered the supreme most beings, the significance of and the reverence we used to extend to other living beings and the entire ecosystem got confined to mere symbolic terms. The logics, scientific foundations and rational beliefs coupled with huge leap of faith in them that made our heritage rich and way ahead of its time started gathering dust and were termed as outdated, illogical, and irrational by outsiders and several insiders alike. With all kinds of reckless experiments and irreparable destructions, humans have reached the conclusion that only inclusive approach is the way out and now not only us, but the world is turning towards and looking up to the Vedic Traditions for better survival and crisis management. The contemporary world is compelled to embrace the timeless tenets and approaches wholeheartedly. The paper highlights what some such practices were prevalent and what situations made us put them on backburner and why it has now become quintessential to bring them to the forefront.

8

Satya, Ṛta, Prakṛti and *Puruṣa*: A Philanthropic Vision of The Vedas

Dr. Partha Sarathi Bhattacharya
Assistant Professor, Department of Sanskrit
Sammilani Mahavidyalaya, Bagha Jatin, Kolkata-94, West Bengal

parthakatwa.bhattacharya6@gmail.com

Nature is the cradle of civilization. Since time bygone the relation between man and nature was as genuine as that of a filial bond existing between progenitor and progeny. Now a days nature and environment both are used as similar expressions but in our ancient Vedic past nature is often used as *prakṛti* which is referred to timeless phenomenal existence. Vedas explicates the treatment of nature or modern environment with such a uniqueness that is repeatedly tested in the socio philosophical, psychosocial and bio centric assessment. Mother Nature or *prakṛti* and Man or *puruṣa* and their co-existence is so pure that in the *Bhūmi-sūkta* of the Atharva-veda it is said *mātā bhumiḥ putro ahaṃ pṛthivyāḥ* (AV 12/1/12) means Nature is my mother and I am her son. Here we mention two different concepts which are very essential to understand Vedic treatment of nature. Satya refers ultimate truth whereas *Ṛta* is conveying the sense of nature. The sense of nature or prakṛti is characterised as moving constantly; therefore *Ṛta* conveyed the sense of regularity or order. The regularity found in the realm of nature also happened to be found in the nature of Man. Man is nature, nature is contained in man – such feeling of oneness and the filial bond as true as the warmth of motherly womb is the true admission of nature or environment.The philanthropic vision soaring with the lofty ideals of Pantheism, mysticism and altruism was the saga of creation entwined with the familial bond of Man. The bond was praised with sublime gratitude to the world for lending man such holy and peaceful abode to live in. Their appeal to human conscience to treat nature with humane ethics was direct and immediate. Their appeal to human heart and discretion was done with a matchless grace, urgency and sanctity.

9

Varuna Deity, Nature and Man

Dr. Madhav Gopal
ARSD College (University of Delhi)
Dhaula Kuan, New Delhi-110021

mgopalt@gmail.com

In Vedic literature different gods seem to control different natural phenomena. The Varuna deity is regarded as the god of sky 'ākāśa'. At a later period of time, ocean 'samudra' was called sky 'ākāśa', thus Varuna god became the god of ocean or water too. Durgacharya has given the etymological meaning of the word Varuna as "the one who covers the sky through clouds (आवृणोति ह्ययं मेघजालेन वियत्). Western scholars Macdonell and Keith too believed the varuna god as sky. Some scholars have described Varuna as god of rain also. This deity is also regarded as the highest administrator of morality. He is called 'dhritavrita'; the one whose laws are very firm and stable. He severely penalizes those who violate his rules by putting them in his shackles. In Vedas we find prayers to get rid of these shackles; उदुत्तमं मुमुग्धि नो विपाशं मध्यमं चृतं अवाधमानि जीवसे। (ऋग्वेद 1.25.21). In Atharvaveda Varuna is described as the controller of the results of our actions; अक्षानिव श्वघ्नी निमिनोति तानि (अथर्ववेद 4.16.5). There is a plethora of references in Vedas where we can see the Varuna god as controlling the objects of nature and the actions of man. This vedic belief continue to exist in the Bharatiya society even today. This paper attempts to explore all the above aspects of the Varuna god in Vedic literature.

10

Nature In Vedic Tradition And Its Relation To Modern Man

Dr. Manasi Sahoo

Reader in Sanskrit,
Mangala Mahavidyalaya, Kakatpur, Puri
Odisha, India

dr.manasisahoo@gmail.com

The Vedic scriptures nourish all types of creatures in this earth. According to Manu Vedic scriptures are eternal, so they protect all in all ages. In present day also the Veda mantras can bring solution for all types of problems. Vedic tradition was existed in the eternal law of nature. The natural Deities are eulogised in the *sūktas* i.e. *Araṇyāni, Vanaspati, Āpah., Vāyu, Durvā* etc. Veda *mantra* is a sacred sound, a vibration that affects man's conscious mind, heart and nature. According to Justin O'Brien "The vibration of a mantra affects the energy levels composing one's nature, manifesting the qualities specified by the particular vibrations of the mantra". Nature, natural elements and plants are greatly honoured in Vedic period. Importance of trees is proclaimed in various mantras. For all types of diseases the Atharvaveda prescribes four kinds of medicines which are available mainly from the nature. Beauty and bounty of nature is described in the Vedas. Modern man should realise and feel its fullness in his mind and heart. Among all creatures man is the most gifted one. He is endowed with intellect, mind and memory power, which is not in other animals. He is the son of immortality. So in this modern age also man should try to be unique taking the wisdom from the Vedas. Now it is the need of time to study the basic points and values of nature in Vedic tradition. The Vedic seers observed nature keenly. So they became aware that the sun is the prime life-giver. Now also in modern age we know that air, water, trees and forests are the source of our life. So we should honour them and become careful for their protection not only for nature but also for our own sustenance.

11

Man And Nature In Vedic tradition- Modern Perspective

Dr. A. Annapoorani

Ayurveda practitioner
Srirangam, Tamilnadu, India

ayurvaidyapoorani@gmail.com

"Yat Piṇḍe Tat Brahmāṇḍe!"- Yajurveda. Man and nature are connected intrinsically in many dimensions. The human is considered as the epitome of the universe/ nature. Ayurveda , the ancient vedic medical system considers man as the microcosm of the nature (macrocosm). This theory is well established as *"Loka-Puruṣa sāmya siddhanta."* The five elemental theory (*Sarvaṃ bhūtaṃ Pāñcabhautikam*), the celestial solar system and its influence on the living beings (*Agnisaumya Siddhanta*) are the few examples to cite. Thus any alterations in the nature influences the living beings directly and affects their physical, mental, social and spiritual health conditions. Likewise the habits and behaviors of human can also affect the nature. In recent decades, the luxurious attitudes and the irrelevant behaviors of human has extensively damaged the nature resulting in an irreversible damage. The imbalance of the ecosystem, global warming, deforestation, destruction of marine eco -system and extinction of certain flora and few animal species are few of the listed man-made damages. This is impacting the earth geographically, politically, economically and socially. Its the time for us to hold the torch and understand, nurture, protect and rebuilt our nature for the future healthy generation.

12

Water in *Ṛgveda*: The Real Gift of Nature to Man

Prof. Asha Rani Tripathi
10/58 indira Nagar, Lucknow

ashatripathi12@yahoo.com

It is amazing that in the remote past the vedic seers visualized the great role of water for the survival of all living creatures on the earth and gave her the status of goddess. In Rig-Veda she has been invoked many times and seers have expressed their gratitude for her multitude services for living being. The hymns mention different categories of water. Water has been regarded as the source of healthy and long life, wealth, richness and nourishment. Sea water is the seat of sun god. The same idea has been presented in another mantra where water has been mentioned as the mother of agni. It is a fact that water contains energy in different forms known as hydroelectric or even H_3O.Underground water has been considered as the purest form of water known as mineral water. Goddess water has been associated with gods like *Indra, Parjanya* and *Varuṇa*. The poet describes the whole life cycle of the soil, plants and water and their interdependence for thriving the life on the earth. In Rigveda there are references where the gods like *Agni, Apaṃnapat, Savitṛ* and *Soma* have been regarded as the sons of water. It indicates that water is the warehouse of different types of energies. Another reference proves that the sea water contains oil which they considered as precious as *Ghṛta*. *Soma* has also been regarded as the son of water. Soma has been treated as the god of healing with excessive medicinal power. The water has also been called *Apsu* which means "formless" or "shapeless". Water is the origin of life on the earth. The first seed of life was produced in the water. Thus it may be concluded that vedic seers were possessing the knowledge of the composition of water, its different forms, the role of water for the survival of life. These difficult scientific facts have been presented in symbolic expressions. These thoughts were based on the day-to- day experiences of prudent vedic seers That is why they regarded water as goddess and offered her the prayers to express their obligation. In modern days the whole world is facing acute water shortage because of different reasons. That is causing many other problems and making the

life difficult. Now the time has come to rectify our mistakes and should offer our prayers to goddess water by saving each every drop of water.

13
Man and Nature in Vedic Tradition

Dr. Asha Lata Pandey

DPS, R. K. Puram
New Delhi

ashapandey7@gmail.com

Nurturing Nature is absolutely important for environmental and ecological protection. Vedic seers knew of this reciprocal relationship between man and Nature very well. They made a huge effort towards this in a very judicious way. Rigvedic verses talk about nature and five elements in great detail. In fact the concern about nature was taken to the extent of worshipping plants, trees, rivers, mountains, sky, earth and wind. All these were given bonding like parents, brothers and sisters. So that people do not misuse nature, religion was often combined with it. Making full use of the human psyche these elements were compared to Gods as they knew that nature can survive without man but man cannot survive without nature. Also that these natural resources are structures and processes that can be used by people but cannot be created by them. The concern shown by Sanskrit texts about Nature is not just contemporary but for future generations too as they knew that this is the first and foremost thing for healthy living and human survival. As the Rigveda says- May mother earth always be full of flowering plants and there may be no disease..... (Rigveda 10.97.3)

14
The Potential of a *Yajñya* in Spiritually Purifying the Environment

Dr. Jayant Balaji Athavale[1] and Mr. Sean Clarke[2]
[1]Clinical Hypnotherapist
Founder, Maharshi Adhyatma Vishwavidyalay (MAV) Goa.
[2]Research Team Leader, Maharshi Adhyatma Vishwavidyalay (MAV) Goa.

conferences@spiritual.university

The effect of the *Yajñya*s on man and nature has been the aim of many research studies. Recently, MAV conducted a study to evaluate the subtle impact of *Yajñya*s on the environment. On average, the positivity in the auras of the samples of soil, water and air increased by over 300% after the *Yajñya*s. Distance did not reduce the effect of the *Yajñya*. Samples collected near and at great distances from the *Yajñya* (as far as 6500 km) showed similar increases in positivity immediately after the *Yajñya*. The ability to retain the positive energy from the *Yajñya* depended on whether the residents practised Spirituality. This study indicates that *Yajñya*s when performed correctly, can emit high levels of positivity into the environment. The United Nations Environment Programme could look into formalising the use of Yajñyas as a way to bring stability to the environment.

15
Man and Nature in Vedic Tradition

Dr. Kakali Bezbaruah
Assistant Professor, Department of Philosophy
Chhaygaon College, Chhaygaon, Assam

kbezbaruah0@gmail.com

The Ministry of Education, Government of India has established the Indian Knowledge System division with a vision to promote *Jñāna, Prajña,* and *Satya*. Even the National Education Policy 2020 recommends the incorporation of the Indian Knowledge System into the curriculum of all

levels of education. The question that arises is – Why such a necessity is being felt? It is because the present era of post-modernity and globalisation is pushing human beings to a world of technological advancement as well as suffering. Human beings by standing at the crossroads fail to make the right decisions on the path that they should follow. This is the predicament that mankind is facing today. They are facing immense challenges and it is believed that it is only human beings who can change the course of development, restore their dignity and maintain equilibrium and harmony in the society. India's profound wisdom is its hidden treasure which can play a central role in transforming the present state of human society by solving contemporary and emerging problems. The past heritage of philosophical thought and ethical wisdom can illumine the present. The gamut of wisdom enshrined in the Vedas, the repository of knowledge par-excellence, endows man with an insight to understand, and contemplate the meaning of their lives and the universe in which they live. Ideal values of the Vedic heritage are the dynamic forces, driving impulses that can help human beings in understanding the concept of a holistic universe. Through this paper an attempt will be made to fathom how the knowledge of ancient sacred Vedic literature can lead to a better understanding of human relationships, and help in creating a peaceful, egalitarian, inclusive, non-violent, and progressive world.

16
The Glimpse of Creationism as Depicted in Śuklayajurvedīya Dayānanda-Bhāṣya

Dr. Ranjan Lata
Assistant Professor, Sanskrit and Prakrit Bhasha Vibhag
DDU, Gorakhpur University, Gorakhpur, U.P.

ranjanjnu13@gmail.com

Creation is the first invention by any civilization. In Indian view it is called S*ṛsīi Vidyā*. It is derived from the root *'Sṛj Visarge'* which also defines of creation. Creation can be divided in two ways according to Theist and Atheist. Theist says that Creation is the result of any Super God which is depicted in many names in the world of religion like God, Allah and others, but on the other way Atheist believes that creation

is just a natural process. Creation is not a religious matter in their view. So here we discuss the whole history of Creationism from past to present according to different opinions and focus specially on the views of Dayananda as shown in *Śuklayajurvedīya-Bhāṣya*. As we know that Dayananda is a Theist but he believes the whole world is a creation of one God whom we call from different names. He says that the world which we see is systemically created, preserved and at last ruined by that creator *'Parameśvara'* only repeatedly done by Him again and again. Thus if we want to understand the world we should know His Creationism too.

17
Vedic Ecology for a Better World

Sabita Dash
Research Scholar, P.G. Department of Sanskrit
Utkal University, BBSR, Odisha, India

sabita.us@gmail.com

Nature is the whole of the physical World. Man is in nature and an integral part of the nature. No one would reject the fact that human has been completely depending on nature for all his needs. The nature that gives us everything and does not demand anything in return. This intimacy between man and nature still continues and man's love for the nature is never to be shattered even in the future. The relationship between man and nature has been described since the Vedic period. Unlimited exploitation of nature by man has disturbed the ecological balance between organism and environment. But the concept of protection of the environment was already present in Vedic culture. Faith in country and its integrity has suffered a serious setback. Still more dangerous is the loss of faith in our civilization and culture. The greatest challenge is to humanize science that is to make it relevant to human needs and aspirations. This paper is going to have a precise look at human/nature relationship. It also explores in detail the different dimensions of Vedic ecology and also discusses its modern perspectives.

18

Human Beings Required for Well-being of Nature

Dr. Richa Sikri

Assistant Professor in History
M. L. N. College, Radaur

richa.sikri@yahoo.com

Man and nature has close relationship. Since time immemorial Man is trying to know nature. Its intricacies, mysteries, behaviour not only mesmerized him but also helped in developing different branches of Science, literature, Art, Philosophies , spirituality etc. Man of ancient times knew this fact very well that their survival is depended on nature. The respect, regard, care, protection which was given by people of Harappa Civilization, Vedic Culture through various practices religious or otherwise are proof of it. There was reverence of Nature and Natural objects like Sun, Earth, Fire, Water, Mountains and Trees etc. in the Vedas. Even the king like Ashoka the great and statesman like Kautilya was well aware of the fact that to keep ecology intact it is important to respect, care, protect and preserve the surrounding environment which encompasses all living and non –living beings. This close and delicate relationship between Man and Nature has severed with time due to man's desire to Control nature. The population increase, developmental projects, emission of green house gases, unplanned construction, use of pesticides, affluent of industries etc. further aggravate the situation. Above all, Man's forgetfulness to the notion, "use as much as required and rest should be left for generations to come" made him greedy, selfish and negligent towards nature. This caused over exploitation of nature and natural resources and created imbalance in nature. The suffocating nature shows her wrath in form of destruction of men through heavy rains, floods, tsunamis and earthquakes etc. which were quite apparent in recent times. To stop all this havoc caused by nature it is important to show care, regard and protection for preservation of nature. The example to it was Covid-19 which proved disastrous for human beings proved blessing for nature due to minimum activity/ interference of men. It gave time to nature to breathe, to revive and preserve the bio-diversity and protect the species which were distinguishing. So it is very important that human beings

change their behaviour towards nature and show attitude of gratitude, reverence, care and protection towards nature otherwise nature will destroy human beings. As men is dependent on nature and nature is not dependent on men.

19
Relationship between Man and Nature in Vedic Tradition

Dr. Sanchita Kundu

Assistant Professor, Department of Sanskrit
Hooghly Mohsin College, Hooghly

skundu.sanskrit@gmail.com

Indian philosophy has a Unique thought about the spiritual and physical life of human beings. It originated from the Vedas, Puranas and epics of India. In Indian concept, there is no differences between men and nature. In our sacred book Rigveda, we found that the sacred rivers like Ganga, Saraswati and Kaveri are worshipped as mother from ancient time. The majority of Vedic hymns are the prayers of men to nature. The rivers, mountains, stars and trees are divine and sacred to Indians. Like Rigveda, in Atharvaveda the Earth is the holy mother and all the creators in the Universe are the offspring of the earth. The eternal sky is the universal father.The mother Earth is to be worshipped as Aditi, the goddess. The Nobel sky is the brother. Man may not become an obstacle in the course of nature's journey forward. This is the holy message of the Atharvaveda. In Indian classical literature, in the drama *Abhijñāna Śakuntalam*, the duties of the kings, sages and the duties of the women are also connected with nature.

20
Environmental Laws in *Dharmaśāstra*

Dr. Sushree Sasmita Pati
Assistant Professor, School of Sanskrit
Gangadhar Meher University, Odisha

sspati2014@gmail.com

Nature is one of the essential parts of human life. Human beings are quite vigilant in making their life sustainable by protecting nature. Ancient Indian scriptures have thoroughly discussed the abilities of nature to control the living environment of humans and have given various suggestions to improve the bonding of humans and nature. Environmental law is one of those suggestions made by the scriptures which is actively involved in governing and regulating the development and protection of nature. *Dharmaśāstra* advises human beings to take necessary steps to protect the environment. It has also suggested various punishment methods to punish humans who would be violating rules and damaging the system protecting nature. This paper is going to discuss the idea of environmental laws discussed in *Dharmaśāstra*. The paper will also reflect upon the method of governance of protecting and preserving nature through environmental governance.

21
Eco-Spirituality and Environmental Sustainability in Context of the *Ṛgveda Saṁhitā*: A Modern Perspective

Ashlesha Goswami
Research Scholar & Teaching Associate of Department of Sanskrit
Gauhati University, Guwahati, Assam

asleshasg19@gmail.com

Eco-spirituality connects the science of ecology with spirituality which brings together religion and environmental activism. Eco-spirituality has been defined as "a manifestation of spiritual connection between human

beings and the environment". Man -Nature Interrelatedness, which is the basic philosophy of coexistence that has been referred to in different culture in their own ways, like harmonious coexistence as *kyosei* in Japan, harmonious society as *xiaokang* in China, African humanism as *ubuntu* in South Africa, and global family as *vasudhaiva kutumbakam* in Indian Thought. According to the environmentalist Virginia Jones, "Eco-spirituality is about helping people experience 'the holy' in the natural world and to recognize their relationship as human beings to all creation". The holy texts of Hinduism, like the Vedas and that too specially the *Ṛgveda*, all attribute divinity to Nature; motherhood to earth as mother earth and teach to save Nature as well as save the environment. The Vedas associate water, air, birds, animals, plants, sky, earth, mountains, and every bit of Nature with God and Goddesses to worship, protect, and preserve Nature. Vedic culture rebuffs the misuse and exploitation of Nature. It also impersonates the sky, earth, and mountain, keeping their importance and essentiality. The present paper tries to put forward the Vedic environmental vantage point and the canons compiled and corresponded for sustainable development and its requirement and relevance in the present-day life mainly from the context of the *Ṛgveda Saṁhitā*.

22
Vedic Tradition and Trees

Saurabh Awasthi[1], Aanchal[2], Ayushi Tiwari[3], Somya[4], Kasturi Saha[5], Mitushi Khurana[1], Anand Sonkar[6], Vijay Rani Rajpal[7], Romila Rawat Bisht[8] and Dinesh Kumar Gautam[9]

[1,2,3,4,5,6,7,8]Department of Botany, Hansraj College, University of Delhi, India
[9]Department of Zoology, Hansraj College, University of Delhi, India

[6]asonkar@hrc.du.ac.in

The Vedas being the one of the most primordial forms of literature and tool for the trans-generational passage of knowledge have existed since pre-historic times. The Vedic knowledge often relates 'Nature' and its many elements to 'Man'(purusha) in various aspects. Trees as a resource being an inherent part of the Aryan as well as the *Dravidian* culture, have been very frequently used in the circumference of the Vedic knowledge.

The Vedas and their appendages especially the '*Upaniṣad*s', *Smṛti* and *Āraṇyaka*s outline the concepts; necessity and methods of forest management, sustainability and conservation as well as reflecting upon the Plant Resource Utilization, both in medicinal and non- medicinal applications. The mention of *Araṇyānī*: the goddess of the forests in the hymns of *Ṛgveda* or the guidance worshipping of certain sacred tree species etc. Such rich knowledge has been seen to dictate the schemes of ecological conservation and ethnobotanical practices through generations. Present paper deals with the modern perspectives on the usage of the trees that are largely affected by consumerism behaviour. The western thought of utilizing the environmental resources as a commodity and not as an integral component of the environment. Effort has also been done to compare and contrast the ancient Indian practices dealing with the various ecological services provided by the nature (primarily tress) and their management, with that of the contemporary time.

23
Importance of *Yajña* in Environmental Purification and Its Inevitability in Modern Society

Dr. Bhagyashree Sarma
Assistant Professor
Dibrugarh University, Assam

bhagyashree.sarma@gmail.com

The concept of awareness towards Environment is not a recent topic of discussion. The fundamental constituent of the Indian culture is its harmony in vast diversity. The association of culture and ecology was the essential part of ancient Indian society. Vedic texts have its proof. In the Vedic period people were very much eco-friendly and they were expert in taking care of the environment. Vedic texts have some instructions, following which, the people of Vedic period kept the environment completely pollution free. Among the initiatives of Vedic lore to protect the environment, the performance of *Yajña* is a remarkable one. The ingredients like different kinds of grains, herbs, fruits, aromatic substances etc. along with clarified butter, which has defused in the fire of mango wood or sandal wood offered protection to plant life against harmful elements

of the environment in the Vedic time. *Yajña* can be regarded as the best way of resolving environment pollution. In today's society, due to the increase of vehicles, industries and other sources of pollution, the environment is getting polluted day by day. So, in the modern society, we need to take some initiatives like performance of *Yajña* to remove the calamities of environment with the revive of our ancient practices. So, in this present paper an attempt has been made to highlight the importance of *Yajña* for a pollution free environment and also try to establish its modern inevitability.

24

Yajña and Environmental Resilience: Integrating Ancient Vedic Wisdom into Modern Eco-Scientific Paradigm

Dr. Bhavpreeta Thakur
Assistant Professor, Deptt. of Ancient Studies
University of Patanjali, Haridwar

bhavpreetathakur@gmail.com

This paper delves into the profound intersection of ancient Vedic wisdom and modern environmental science, focusing on the ritual of *Yajña* and its potential for fostering environmental resilience. Rooted in the Rigveda and Yajurveda, *Yajña* is explored as a holistic practice promoting sustainable living and ecological harmony. While referencing the philosophical foundations of Dharma and cosmic order, the paper elucidates the interconnectedness between *Yajña* and environmental resilience, drawing parallels with contemporary challenges. The examination extends to modern eco-scientific paradigms, scrutinizing their limitations in addressing pressing environmental issues. Integrating insights from Vedic philosophy, the paper proposes an innovative approach to augment current environmental practices. Case studies showcase the successful integration of Yajna principles, offering a blueprint for sustainable agriculture, biodiversity conservation, and climate resilience. Through a critical analysis of challenges and potential criticisms, the paper navigates the delicate balance of merging ancient wisdom with modern science. Ultimately, this interdisciplinary exploration highlights the relevance of *Yajña* in guiding

humanity towards a more sustainable and harmonious coexistence with the environment. The synthesis of ancient Vedic principles with contemporary eco-scientific paradigms forms a bridge between traditions, paving the way for transformative solutions to complex environmental issues.

25

E*maśca ityā ca ma gatiśca me yajñena kalpantām*
एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्

Dr. C. L. Prabhakar
President, WAVES
Bangalore Chapter&NVAK, Bangalore

clprabhakar@gmail.com

This subhashita is from Yajurveda in the *Camaka Adhyaya* which contain formulas for the *Agnicayana* Sacrifice, a major Sacrifice. This statement conveys a prayer to Lord Rudra regarding Journey of Man, the past built up namely History of Man and the Future including the Goal extreme of Man. It is indicated that that needs to be prosperous. Also, a hope is provided that that could be possible owing to the effort of Man, Devotion and Dexterity clubbed together in him. For this target intended to Human life, the *Prakṛti*, the Nature and its conditions are a resort. So that should be explored and used for betterment. This line under context summarily tells what the Man is for and the birth and prosperity for which he enjoins and enjoys. In the same strain, we have another episode offered by Valmiki Maharshi in Ramayana. He makes Vasistha, a *Brahmarṣi* to simply extend a plea that he was able to get on with three things owing to the grace and *karuṇā* of *Gomātā*, the *Kāmadhenu*. He told Visvamitra, the Emperor at that time, who demanded the cow be given to him in exchange with a large number of cows for it. But Vasistha refused that want of him. As a result, enmity developed between them. Moreover, Vaśiṣṭha humbly and rightly said: *Havyam kavyam ca prāṇayātrā me pravartate* (Balakanda). With this plea he denied the wish of the King visvamitra. With this kind of expression we notice the Vedic principle and which is governed further in the epic in that context. Moreover, we can imagine the Value of Vedic pathway for Man,. "*Nara"*

is the term for Man, in Sanskrit, which has many meanings appropriately suiting to the linkage with Nature as such. This would be would be elucidated too in full paper. *Prakṛti* is a large and wide connotation. All desires and activity depended on these needs in long life and for prosperity. A connection of this kind is live in contemporary times which would also be taken into consideration in this paper.

26
Nature and Its Timeless Governing Principle for Man: Vedic *Ṛta* (ऋत)

Charan JS Manektala
Jaswant Ashram, Powhatan, VA, USA

dean.cjs@gmail.com

Nature and its timeless governing principle for man, ऋत or *ṛta*, which can also be viewed as the governing principle of natural order, was cited within Rigveda, by Vedic Rishis. Vedas guide us that nature expresses itself in its non-transactional act of giving. Surya gives light and energy, Agni gives energy to the vegetation, which in turn gives food and Oxygen, Varuna maintains the balance by spreading the resources to sustain all the Jivas, and on and on, and thus this progression path of "Act of giving" continues, per the natural order of ऋत or *ṛta*. Does nature govern us to primarily give and receive only what it grants us? Is repentance recognition of our act of receiving something, which was not granted to us, and then us consciously correcting ourselves by offering something in return, to maintain continuum of this Vedic natural order? The author shall build upon the questions cited in the preceding paragraphs and highlight Vedic verses referencing man's timeless relationship with nature. The author shall further exemplify this relationship, citing similar world thought leaderships, for example Dao and shall build his assertion referencing events and inquiries of contemporary times.

27

The Significance of the Extension of *Anna* in Different Contexts, Prevailing in the Vedas, Both from the Ancient Perspective and the Modern Outlook: A Study

Kankana Goswami

Research Scholar, Department of Sanskrit
Facility of Arts, Banaras Hindu University.

kankanagoswami1996@gmail.com

The term *Anna* bears a broader meaning in the Vedic scriptures. It is not confined only in the food but also extended to the evolution of the physical world as well as to the cosmology. The visible world is based on the *Anna* or Aliment as one of the basic needs for survival. The rituals of the Vedas are the indispensable part of the ancient social tradition. In the *Karmakāṇḍa*, *Anna* is explained as the food which includes the form of grains, herbs (*Oṣadhi*), nutrition and illumination of prosperities (Social health). In different sacrifices, *Anna* plays different roles according to the sequences, needs and the merits of the sacrifices, when then it (*Anna*) is flourishing through different names and forms. It is praised as the elements of the wellbeing of the society. *Anna* leads to the degree of social upliftment too. The Upanishads have delt with the Anna in the dimension of Cosmology. The *Anna* is one of the major components of cosmological world and its evolution. Here, the term *Anna* is established in various directions like Flora, Nutrition and the Solid State. The longevity with good health among the human race is the ultimate goal of the world human society. This whole concept is lying on *"Anna"*. The latest trending terminology "Millets" is not a newly added concept being discussed throughout the world; but, is relatively the ancient term Anna, which incorporates all kinds of 'Coarse Cereals' in itself. Now, the Millet is considered as the 'Smart-food' or 'Super-food' in respect of both health and economy. Focusing on the revival of using raw form of millets has been recognised by the world, declaring 2023 as the World Millet Year.

28

Man and Nature: A Poet-Philosopher's View

Dr. Munmun Chakraborty

Assistant Professor, Department of Philosophy
Assam University, Silchar

munmunchakraborty58@gmail.com

Among the contemporary thinkers, Rabindranath Tagore is one such creative mystic who has revised and restated the Vedic concepts of Man and Nature in the framework of modern understanding. The concepts of man and nature have received profound meaning and significance in Tagore's literature and philosophy. Mother Nature is the basis of his creative Mind and also the core idea of his entire creation. Going beyond the narrow shell of materialism and anthropocentrism, Tagore finds man in the womb of nature who are not opponents or competitors but mutually creates a cosmic totality of existence where one is unknown and undefinable without the other. He tries to emphasize this unity again and again in all his art and literature. Tagore is undeniably a Modern Vedic Sage who has realized the necessity of exploring the obscure, concise and mysterious statements of Vedas and *Upaniṣad*s; and undertook an unparallel creative approach to present this idea through the lens of modernity. On the one hand, he admits the infinite aspect in the finite man who does not seek to abolish or disregard his finitude; on the other hand, in the heart of nature he discovers the Supreme Creator who is in joyful association with his entire creation. So, nature is not an object of gratification but the ultimate source of man's existence, imagination and love. In this paper, an attempt will be made to understand the most enthralling and creative interpretation of Vedic concepts of man and nature in the magnificent works of Rabindranath Tagore.

29

The Agriculture and Environment During the Mauryan Period: An Analytical Perspective for Use in Modern Era

Brig. (Prof.) J. S. Rajpurohit, Ph. D.
Visiting Prof University of Ladakh, Leh, India
Convenor, National Testing Agency, UGC-NET
Accredited Management Teacher, AIMA, New Delhi, India
Reviewer, MPIDSA, New Delhi
Reviewer JENRS, Wyoming & ASTESJ, Walnut, USA
Governing Council Member, Wider Association of Vedic Studies, New Delhi

jsr1989@gmail.com

The central objective of this scholarly investigation is to analyse the complex interplay between agriculture and the natural surroundings during the Mauryan Era that spanned from around 322 BCE to 185 BCE in ancient India. The study takes into account insights from texts such as Vedas and Puranas. Examining agricultural practices provides a detailed understanding of cereal cultivation, horticulture, and floriculture, enabling a comprehensive view of the rural landscape during that time. The analysis of irrigation systems helps to elucidate the water management strategies employed in this historical period. One of the emerging themes is the importance of environmental consciousness, with a particular emphasis on delineating forest management and wildlife conservation policies within ancient scriptures. The paper also evaluates the challenges faced by Mauryan society, ranging from natural disasters to concerns about soil fertility. It critically evaluates the proposed mitigation measures found in these venerable sources. Additionally, the socio-economic impact of agriculture is discussed, highlighting its pivotal role in the Mauryan economy by generating employment and making substantial contributions to trade and revenue. This historical analysis provides valuable insights into the past and provides guidance for contemporary agricultural and environmental practices. The paper underscores the ongoing relevance of ancient Indian wisdom, emphasising the significance of sustainable farming techniques, soil conservation, and environmentally conscious policies. The paper concludes by accentuating the significance

of the Mauryan era as a fount of invaluable insights that provide a timeless guide for achieving a harmonious coexistence between agricultural progress and ecological preservation in the modern era.

30
Influence of the Veda on Vivekananda: In the Context of Human Freedom

Lipika Roy

Research Scholar
Facility of Arts, Banaras Hindu University.

lipika@bhu.ac.in

Vivekananda, the great religious figure and philosopher of the Indian religious tradition was the key figure who asked and practically worked for the development of masses for their freedom, emancipation and salvation both. On this context, Santi Nath Chattopadhyay stated "Fundamental object of this process is to make man free from his outer and inner limits that finally leads to the development of unity in his collective state of existence as social freedom in the background of the 'the universal spiritual source', as manifesting the transcendental value of absolute unity." And this conception is highly based on the teaching of Veda. In various texts of Vedanta, the finest part of Veda, man is mentioned as 'the son of *Amṛta*', that's shows the divinity of man and by the great sentences like 'thou art that' etc. shows the realization of the divinity or universality in the finite existence or individual. Looking to the modern perspective, the implementation of these teachings of Veda can lead the society toward a sustainable peaceful state.

31

Nature and Rights of Women in Conjugal Relations as Shown by Hymns of *Ṛgveda*

Shivam Chaudhary

M.A. Sanskrit, University of Delhi

shivamchaudhary1002@gmail.com

Conjugal relations signify a partnership where both individuals enjoy mutual respect, decision-making, and shared responsibilities, fostering a balanced and harmonious relationship. Within the confines of marital unions, women possess entitlements to autonomy, parity in decision-making, and deference, extending to sexual sovereignty, effective communication, and safeguard against maltreatment. Upholding such entitlements is crucial for gender parity and personal autonomy. In the Rigvedic society, which ardently endeavored to venerate and safeguard the natural world, women emerged as staunch advocates of their entitlements within their matrimonial unions, substantiating their stance through analogies drawn from the realm of nature. Figures such as Lopamudra (1.179), Aditi (4.18), Indrāṇī (10.86), and Lomaśā (1.126) exhibited their autonomy concerning matters of sexual rights, while Apālā (8.91) grappled with the maltreatment she endured, stemming from societal prejudice directed at her physical attributes. Union of men and women has been compared to cultivation of crops and mating of bovine creatures. Women have traditionally possessed sovereignty within matrimony. We, as vanguards of an enlightened society, must reinitiate our commitment to bestow women their rightful standing. Encouraging sincere communication among partners is essential for their mutual security, worthiness, and contentment in their private lives. Empowering women to wield their prerogatives not only nourishes more robust relationships but also enriches the collective welfare and progression of society in its entirety.

32

Significance of Plants in the *Atharvaveda*: A Perspective for the Post-Covid Period

Dr. Tahasin Mondal

Former Research Associate
Faculty of Management Studies
University of Delhi

tahasin89@gmail.com

In the year of 2019, the earth faced the most difficult challenge with human life that is corona virus which is a small virus has evolutionary resemblance with SARS virus, later it was named as Covid-19. The virus spread headed in 218 countries and territories throughout the globe and was declared as a pandemic by world health organisation (WHO). The department of AYUSH, Government of India along with other organizations like ICMR, DST, DBT and researchers had made it a priority to counter the Covid-19 in all possible ways. Meanwhile, Institute of Bioresources and sustainable Development (ISBD), Imphal, Manipur and Botanical Survey of India (BSI), Kolkata jointly research under the Ministry of AYUSH on compendium of antiviral medicinal plants. The scientists were trying to find the plants which have anti-viral properties and they succeed in identifying around seventy regional plants with medicinal value and could be used in Covid-19. We already know that the *Atharvaveda* is the treasurer of medicinal plants for curing various diseases. Interestingly, it is seen that amongst that medicinal plants, some of them are mentioned in the *Atharvaveda* like *Vacā, Bilva, Śyāmāka, Indrāṇī, Puṣkara, Āñjana, Kuṣṭha, Vṛṣa* etc. Besides this, several medicinal plants of the *Atharvaveda* are very helpful to cure fever, respiratory system, cough (which were various symptoms of Covid-19) and that's why we can say that Plants of the Atharvaveda significant in preventing the Covid-19 by boosting the immunity system.

33

Man in Prison

D. Pramod

Dean, Research and Development
Malla Reddy University
Hyderabad, Telangana, India

dpramod61@gmail.com

There are 84 lakhs of spices that are entangled in the materialistic world or nature which is said to be *dukkalayam* or a prison where the birth and death cycle takes place continuously. All these living entities endeavor to escape from this open jail. The Vedic scriptures convey the human intellect form is very rare to obtain and its aim is for liberation (*mokṣa*) to go to the Supreme abode from where he will not return back. Once the human form is obtained it should be utilized properly to go to higher levels, through self-realization otherwise he will be trapped in the birth and death cycle. The human body is trapped by the complexity of twenty-eight attributes of self as well as the material world. The *Prakṛti* plays a vital role in the behavior of the man and his actions. The three modes of nature - mode of goodness (*sāttvika*), mode of passion (*rajo*) and mode of ignorance (*tamo*) have a great influence on human senses, nature and behaviour and daily activities and are also dependent on the three types of food what he consumes every day. Among the three, the mode of goodness is the best to be acquired and eligibility conditions to go to higher planets. The intensity of the three modes of nature is highly variable to space, time and energy content bodies. All living entities are part and parcel of the Supreme Lord, and belong to one family called *Vasudhaiva Kuṭumbakam*. God is so kind that He provided all necessary ingredients in nature for His living entities for their survival in this open jail system and took them back to the Supreme abode. The goal of human life is to go back to Home where they left. In Bhagavad Gita, Lord Krishna says "One in one million will approach Me if he is fully surrender to Me". But in this materialistic world surrendering to God and acquaintance to the mode of goodness for escaping this world is difficult but not impossible. The purpose of all gifted Vedic scriptures, constructed temples and pilgrimage centers by our ancestors and kings are guiding materials to nullify our bad *karma* and understand self-realization

as well as God realization. This paper deals with the effects of modes of nature on living entities to escape from the materialistic world to the transcendental world.

34
Harmony of Nature and Spirit: Exploring Purity and Spiritual Insights in the Vedas

Ashruth Swaminathan Suryanarayanan
Ramayana Instructor
Sitalakshmi Gurukul, Bangalore

ashruthsuryanarayanan@gmail.com

The very foundation of *Sanātana Dharma*, the Vedas consist of the cornerstones of our culture, like *Dharma* and the *devatā*s. The Vedic *Saṃhitā*, in fact, is primarily hymns dedicated to these concepts. The devatas themselves are archetypal, being the external nature that surrounds us, as well as the internal forces that guide us spiritually. In fact, the Vedas seem to encourage us to internalize these concepts through worship, making the external force an ally in our spiritual upliftment. An illustration of this can be seen with *Agni*. Externally, *Agni* is the fire that we worship in the altar. *Agni* is the very foundation of *Yajña*. Internally, *Agni* represents the will of Universal welfare: त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेशां हितः । देवेभिर्मानुषे जने' ॥ (Rigveda, 6.16.1). In this mantra, the words विश्वेशां हितः indicate that *Agni* itself is the welfare of all. By growing this will of Universal welfare through the oblation-like mental impulsions and actions, one's own internal *Yajña* is sustained. This context can be seen throughout the Vedas wherever *Agni* is mentioned. In this way, for every natural representation of a devata, there is an internalization involving bringing one to inner peace. A recurring theme in these mantras is purity and purification. These devatas are constantly associated with this concept, with regards to both their existence in nature as well as their internal representations (प्रतीकाः). This paper will examine how the Vedas show the concept of purity in nature through these various devatas and how they pave a path in spirituality. It will show how this intertwining of natural phenomena and internal purity (चित्तशुद्धिः) leads to some of the

core insights in various schools of thought, such as Yoga and Vedanta. Finally, we shall try to examine what it truly means to live a Vedic life today, on the basis of the practices and concepts shown in the Vedas.

35
Man and Nature in Vedic tradition : Modern Perspective

Kadambari Pandey
Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University
Katwaria Sarai, New Delhi

pkadambari421@gmail.com

The relationship between man and nature in Vedic tradition is a profound and intrinsic aspect of ancient Indian philosophy. Vedic literature, including the Vedas, Upanishads, and other texts, emphasizes a harmonious connection between humanity and the environment. This relationship is defined by a deep reverence for nature, considering it not merely as an external entity but as an extension of one's own existence. In the Modern context, the Vedic perspective on man and nature holds significant relevance and offers valuable insights. As the world grapples with environmental challenges, the wisdom embedded in Vedic teachings presents a holistic approach towards sustainable living and ecological balance. The principles of interconnectedness, respect for all life forms, and the understanding of the universe as a unified entity resonate with contemporary environmental philosophies. This paper aims to explore the Vedic viewpoint on man and nature, examining its applicability and significance in today's world. It delves into the concepts of *'Prakṛti'* (nature) and *'Puruṣa'* (consciousness or the self) as complementary forces, highlighting the symbiotic relationship advocated by Vedic philosophy. Additionally, it discusses the practices and rituals prescribed in Vedic texts that promote ecological balance and sustainability. Moreover, the paper will analyze how these ancient principles align with and complement modern scientific understandings, offering a holistic approach to address pressing environmental concerns. It will consider the potential implications of incorporating Vedic wisdom into current environmental policies and practices for a more balanced and sustainable future. By bridging the

wisdom of the ancient Vedic tradition with the demands of the present, this study seeks to elucidate the timeless relevance of the Vedic perspective on man and nature, offering valuable insights for creating a more harmonious relationship between humanity and the environment in the contemporary world.

36

Vedic Management of Natural Disasters

Dr. Umesh Kumar Singh
School of Indic Studies,
Institute of Advanced Sciences, Dartmouth, USA
usingh@inads.org; umeshvaidik@gmail.com

Since the advent of the Vedas on Earth, there has been an inseparable connection between Vedic humanity and nature. The *Maṇḍuka-Sūkta* and *Araṇyānī-Sūkta* tell us about the close and artistic perspective of the sages towards nature. Not only that, but the rules made for grammar and other sciences were also illustrated through examples from nature. We see that for examples of short, long, and protracted vowels, the crow's cry is mentioned. During the onset of rainfall, the frog is described reciting the Vedas while sitting in the water. We also find verses that indicate that Vedic sages had knowledge about the vision of those birds who could see even in the absence of visible light, with the help of non-visible rays. With such profound insight into nature, the sages had to deal with natural disasters, and the Vedic literature provides us with the methods to attain peace in the face of these calamities. The Vedic civilization was primarily based on agriculture and animal husbandry, and descriptions related to these can be found in the Vedas. Vedic *yajña*s were performed according to the country, time, and season, and provisions for yajnas and rituals for the peace from natural calamities are also found in Vedic literature. *Mantra*s in *Atharvaveda* are available for destroying pests like insects attacking crops. In Vedic times, while the existence of chemical agriculture was nonexistent, the invasion of pests on agriculture was no less than a calamity. In addition to this, we find remedies in subsequent Vedic literature for signs related to other natural disasters. The proposed research paper will attempt to shed light on the management of Vedic-era disasters in these very subjects.

37

Agnihotra: A Boon to Human and Environment

Kiran Sharma

Department of Sanskrit
University of Delhi

sharmakiranskt@gmail.com

Agnihotra is an ancient Vedic process of healing and purifying the atmosphere through the sacred fire during the circadian biorhythm of sunrise and sunset. The *Agnihotra* is the healing fire, which is practiced in the rhythm of sunrise and sunset. The *Agnihotra* mantras invoke *Agni* and *Sūrya*, but *Agnihotra* is not the worship of *Agni* or *Sūrya*. The invocation is essentially of the God almighty. *Agni* and *Sūrya* in the two mantras are only compliance with these regulations, justifying the adoption of the right method for performing daily *Agnihotra*. Once you start this practice, you will notice that nothing is impossible or difficult in doing so, and it is much easier than can be imagined. *Agnihotra* is the process of removing the toxic conditions of the atmosphere through the agency of fire. Healed and purified atmosphere imparts beneficial effects on man, animals, and plants. *Agnihotra* neutralizes harmful radiations and cleanses the planet when we sit in front of *Agnihotra* and breathe the smoke which goes quickly into the bloodstream and lungs, having an excellent effect on the circulatory system. In this research paper, I would like to highlight the importance of *Agnihotra* for purifying and healing man and the environment as well. Through *Agnihotra*, we can heal and protect human life and the natural environment. Today's alarming conditions are recalling us to go back to Vedic civilization and remedies. In the scenario of global warming, disasters, and climate changes, global pollution, *Agnihotra* is the only way to protect ourselves and save the environment.

Part II

हिन्दी-सारांश

38
यजुर्वेद में वर्णित मनुष्य : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

प्रो॰ सिद्धार्थ शंकर सिंह
प्रतिकुलपति
कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, बिहार

sssinghprincipal@gmail.com

यजुर्वेद शब्द पर विचार करने पर हम पाते हैं 'यजुष्' और वेद। वेद का अर्थ है ज्ञान यजुष् के दो अर्थ हैं- पूजा और दूसरा अर्थ है त्याग। ये दोनों ही अर्थ वस्तुतः मानव और प्रकृति के सन्तुलन को बताते हैं। प्रकृति की पूजा और अनावश्यक सञ्चय का त्याग का ज्ञान ही यजुर्वेद है और यही कर्म, कर्मकाण्ड कहलाता है। यजुर्वेद में वर्णित विविध यज्ञ हर प्रकार से मनुष्य का सर्वांगीण विकास करते हैं और समाज के कल्याण के प्रति मनुष्य को उन्मुख भी करते हैं। यजुर्वेद में मानव, सत्रह मन्त्रों का समवाय आत्म-स्वरूप, विद्या-अविद्या के द्वारा मानव मूल्य दर्शाया गया है। इन विषयों को ही विस्तृत रूप में शोध-पत्र में प्रदर्शित किया जाएगा। आज जाति, धर्म, लिङ्ग, देश इत्यादि के नाम पर विश्व में फैलते द्वेष रूपी विष को अमृत में बदलने के लिए इस प्रकार के शोध को अग्रसारित करने की आवश्यकता है।

39
वैदिक परिप्रेक्ष्य में मनुष्य एवं प्रकृति

सत्येन्द्र लोधी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

slodhi@sanskrit.du.ac.in

आज का मानव जितनी उत्सुकता और तेजी से भौतिक विज्ञान की ओर बढ़ रहा है, उतनी ही तेजी से उसके भीतर की संवेदनाएँ समाप्त होती जा रही हैं, मानवीय मूल्यों का हनन होता जा रहा है। वेद भारतीय संस्कृति के उद्गम केन्द्र हैं। जब तक वैदिक-उपलब्धियों से भारतीय सांस्कृतिक विश्वास सिञ्चित होता रहा तब तक हमारे बाह्य (भौतिक) और आन्तरिक (आध्यात्मिक) जीवन में पूर्णता का समन्वय था, हमारे व्यवहार में उदात्तता थी। लेकिन कालान्तर में जैसे-जैसे वेदों के अक्षय अनन्त ज्ञानविज्ञान के प्रति हममें उदासीनता बढ़ती गई वैसे-वैसे हमारा समाज विवेकशून्य होता गया, विकृत होता गया। वैदिक साहित्य की सांस्कृतिक चेतना ने जीवन को अखण्ड मानते हुए न तो शरीर की उपेक्षा की और न ही आत्मा

की। इसने हमें बताया कि तप और श्रम से युक्त अर्थ और काम मानव-जीवन के व्यावहारिक विकास पथ को प्रशस्त बनाते हैं। तप और श्रम से हीन अर्थ और काम व्यक्ति को भोगी और उच्छृंखल बना देते हैं, जिससे समाज में विश्वासहीनता बढ़ती है। वेदों की संस्कृति में धर्म को जीवन के हर क्षेत्र में व्यापक स्थान मिला है। यही कारण है कि हमारे मनीषियों ने प्रकृति में सर्वत्र अपने आराध्य देव का दर्शन किया है, अपने पारिवारिक सम्बन्धों का अनुभव किया है। वस्तुतः वैदिक चिन्तन परम्परा में प्रकृति और मनुष्य को अलग-अलग कर नहीं देखा गया है इसीलिए अनेकता में अनुस्यूत एकता को अपनी अन्तर्दृष्टि से देखता हुआ वैदिक ऋषि पूरे विश्व को एक नीड़ मानता है– 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्'। यही वेद की समग्र दृष्टि है। इससे यह प्रतीत होता है कि वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति को लेकर गम्भीर चिन्तन किया है। यदि हम वेदों में प्रतिपादित मूल्यों को वर्तमान समय में अपनाते हैं तो निश्चय ही हमारा भविष्य अच्छा होगा।

40
वैदिक प्रकृति में अग्नि: आधुनिक परिप्रेक्ष्य

डॉ॰ इंदु सोनी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

indusoni15@gmail.com

प्रकृति में पञ्चमहाभूतों से ही सृष्टि निर्माण हुआ है, जिनमें ऋग्वेदीय देवों में अग्नि का सबसे प्रमुख स्थान है। वैदिक मन्त्रों के अनुसार अग्नि नेतृत्व शक्ति से सम्पन्न, यज्ञ की आहुतियों को ग्रहण करने वाला तथा तेज एवं प्रकाश का अधिष्ठाता है। वैदिक आख्यानों के अनुसार मातरिश्वा, भृगु तथा अङ्गिरा ऋषि इसे भूतल पर लाए, जहाँ इसे द्यावापृथिवी का पुत्र बताया गया है। अग्नि पार्थिव देव है, यज्ञाग्नि के रूप में इसके मूर्तिकरण के कारण ही इसे ऋत्विक्, होता और पुरोहित बताया गया है। यह यजमानों के द्वारा विभिन्न देवों के उद्देश्य से अपने में प्रक्षिप्त हविष् को उनके पास पहुँचाता है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यही अग्नि तत्व है, जो आध्यात्मिक, आधिदैविक के साथ साथ आधिभौतिक पक्ष में भी मानव को सहज और सरलता के साथ प्राकृतिक तत्वों को जानने की समझ देता है। इसी कारण अग्नि को तीन स्थानीय देवों (पृथ्वी, अन्तरिक्ष,द्युलोक) में पृथ्वी स्थान दिया है। अग्नि ही है, जो दुष्टात्माओं और आक्रामक,अभिचारों को समाप्त कर, अपने प्रकाश से राक्षसों को भगाने के कारण रक्षोहन् कहा गया है। प्राकृतिक शक्ति के रूप में देवों की प्रतिष्ठा करने के लिए अग्नि का आह्वान किया जाता है

41

वैदिक साहित्य में प्राकृतिक शक्तियों द्वारा दौत्यकर्म

सीमा शर्मा
संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

seema.sharmaaster@gmail.com

वेदों में दौत्यकर्म का निदर्शन अत्यन्त मनोरम रूप में प्राप्त होता है। ऋग्वेद में अग्नि, पूषा, सूर्य, इन्द्र, वायु, सोम, वेन, वायु आदि के द्वारा दौत्यकर्म के निष्पादन का वर्णन है। इनमें सर्वाधिक स्थानों पर अग्नि का आवाहन किया गया है कि वे देवताओं के दूत हैं, दौत्यकर्म से पूर्णतया परिचित हैं। श्यावाश्व-आत्रेय-संवाद (ऋ० 5-61) में श्यावाश्व, राजा रथवीति के पास रात्रि के माध्यम से सन्देश सम्प्रेषित करते हैं कि राजा द्वारा किए गये सोमयाग में हमारी कामनाएँ विफल नहीं हुयी हैं। श्यावाश्व रात्रि को रथवीति का निवास स्थान भी बतलाते हैं। अतः अचेतन को दूत बनाने की प्रथम परिकल्पना हमें ऋग्वेद में प्राप्त होती है। ऋग्वेद में जहाँ देवशक्तियों को दूत रूप में वर्णित किया गया है तथा इन्हें जिन विशेषणों यथा - सर्वज्ञ, महान्, सत्यरूप, धनों को प्रदान करने वाले, प्रमुदित करने वाले, यशस्वी, द्विज, सञ्चरणशील, आलस्यरहित, क्रान्तदर्शी, सुन्दर, शीघ्र गमनशील, विचारशक्ति से सम्पन्न, उपकारक, केतुस्वरूप, बुद्धि का प्रेरक, चक्षुरूप, अनुशासनप्रिय आदि से अलङ्कृत किया गया है, वे सभी विशेषण परवर्ती काल में धर्मशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों, स्मृतिकारों एवं साहित्यशास्त्रियों के द्वारा दूत के लक्षण में कहे गये हैं। ऋग्वेद में प्राप्त दूत-सम्प्रेषण के प्रसङ्गों से प्रेरणा प्राप्त कर कालिदास प्रभृति कवियों की लेखनी से मेघदूत सदृश दूतकाव्य निःसृत हुए, जिनमें अचेतन से भी दौत्यकर्म करवाया गया। वहीं देवशक्तियों के नामों के लौकिक रूपों को दूत के रूप में प्रयुक्त कर परवर्ती कवियों द्वारा पवनदूतम्, पवनसन्देश, वातदूतम्, वचनदूतम् आदि दूतकाव्यों का प्रणयन हुआ। अतः स्पष्ट है कि दौत्यकर्म का उद्गम ऋग्वेद से हुआ है तथा यह इसमें मनोरम रूप में वर्णित है।

42

वैदिक साहित्य में मनुष्य और प्रकृति का पारस्परिक सम्बन्धोल्लेख: आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ॰ विशाल भारद्वाज
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

vishal.sanskrit@gndu.ac.in

मनुष्य के चारों ओर आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमा, वृक्षों, वनस्पतियों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों आदि प्राकृतिक तत्त्वों का जो आवरण है, वह प्राकृतिक पर्यावरण कहलाता है। वैदिक साहित्य में मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्ध के प्रति जिस जागरूकता को अभिव्यक्त किया गया है, वह आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रेरणादायक है। वेदों में हमें विभिन्न देवताओं से सम्बन्धित स्तुतिपरक मन्त्र प्राप्त होते हैं। वेदों में सूर्य, उषा, वरुण, पर्जन्य, पृथ्वी आदि प्राकृतिक शक्तियों का प्रतिपादन देवता रूप में किया जाना वैदिक ऋषि की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता को अभिव्यक्त करता है। देवता शब्द की व्युत्पत्ति करते हुये निरुक्तकार आचार्य यास्क का कहना है कि दान देने के कारण इन्हें 'देवता' कहा जाता है, दीप्त होने के कारण ये 'देव' कहलाते हैं, द्योतित होने अथवा करने के कारण इनकी 'देवता' संज्ञा होती है तथा द्युलोक में निवास करने के कारण ये प्राकृतिक शक्तियाँ 'देव' कहलाती हैं (निरुक्त, 7/4)। सूर्य प्रकाश प्रदान करता है, पृथ्वी से अन्न, औषधियों तथा वनस्पतियों की उत्पत्ति होती है, पर्जन्य देवता के द्वारा जल बरसाने पर पृथ्वी संसार का भरण पोषण करने में समर्थ हो जाती है – (ऋग्वेद, 1/115/1; ऋग्वेद, 5/83/4; अथर्ववेद, 12/1/2-3) ये समस्त दृष्टान्त सिद्ध करते हैं कि ये उपर्युक्त कथित प्राकृतिक तत्त्वों का मानवीय जीवन में कितना महत्त्वपूर्ण योगदान है। अतः पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश आदि समस्त प्राकृतिक तत्त्वों को देवता कहकर इनके प्रति वैदिक ऋषियों द्वारा आदर प्रकट किया जाना वैदिक साहित्य की पर्यावरण जागरूकता को सिद्ध एवं पुष्ट करता है।

43

वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य

शीतल जोशी
शोधार्थी, संस्कृत विभागः
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

Sheetaljoshi256@gmail.com

वेदों में प्रकृति संरक्षण अथवा पर्यावरण से सम्बन्धित अनेक सूक्त हैं। बाह्य पर्यावरण में घटित होने वाली सभी घटनायें मन में घटित होने वाले विचारों का ही प्रतिफल हैं। जितना आन्तरिक पर्यावरण विशेषतया मन शुद्ध होगा, बाह्य पर्यावरण उतना अधिक शुद्ध होता चला जायेगा। वेदों के अनुसार बाह्य पर्यावरण की शुद्धि हेतु मन की शुद्धि प्रथम सोपान है। वेदकाल में प्रकृति की रक्षा करना पूजा का एक अभिन्न अङ्ग था। वैदिक परम्परा में प्रकृति को एक जीवन्त और चेतन सत्ता के रूप में देखा गया है। ऋषियों ने प्रकृति के विभिन्न तत्वों को देवी-देवताओं के रूप में पूजा है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी को माता भूमि कहा जाता है, आकाश को पिता द्यौ कहा जाता है, और सूर्य को देवता सूर्य कहा जाता है। आज हम प्रकृति के साथ अपने सम्बन्ध को लेकर गम्भीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। आज पर्यावरण के रूप में विश्वस्तरीय चिन्ता व्याप्त है। जनसंख्या का तेजी से बढ़ना तथा औद्योगिक प्रगति ने प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और शोषण द्वारा तीव्र गति से समस्त परिवेश को इस सीमा तक प्रदूषित किया है कि मनुष्य जाति का ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी जगत तथा वनस्पति समुदाय का अस्तित्व भी खतरे में डाल दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ एवं उससे सम्बन्धित संस्थाएँ इस भयानक समस्या का अध्ययन और समाधान करने में सन्नद्ध हैं। सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाएँ भी इस दिशा में सक्रिय हैं। वैदिक शिक्षा उन सभी समस्याओं का समाधान है जो हम वर्तमान में इस दुनिया में पाते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में आधुनिक पर्यावरणीय समस्याओं के सन्दर्भ में, वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्ध पर प्रकाश डाला जाएगा।

44

वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य

दुर्गाप्रसाद रथ
शोधछात्र
दिल्ली विश्वविद्यालय

rathd2390@gmail.com

एक सभ्य समाज का आधार उसकी सभ्यता व संस्कृति है। मनुष्य एवं प्रकृति के संयोग से सभ्यता का उदय होता है। इसी प्रकार वैदिक सभ्यता का प्राचीनकाल में उदय हुआ जो आज वैदिक ग्रन्थों में समावेशित हो कर रह गया है। इन्हें कतिपय संस्कृतानुरागी ही पठन पाठन में उपयोगी मानते हैं। परन्तु उस सभ्यता की छटा अद्यावधि हमारे जनमानस मे विद्यमान है। वैदिक परम्परा में केवल संहिताएँ नहीं अपितु उनसे सम्बन्धित समस्त वैदिक साहित्य आता है। वेदों में प्रत्येक देवता प्रकृति का ही अंश है जिनकी मनुष्य हवनादि द्वारा स्तुति करता है। उन प्राकृतिक देवताओं की स्तुति से हमें प्रकृति यानि अग्नि, जल, वृक्ष लताएँ, सूर्य, उषा, वनस्पति आदि के रक्षण तथा उनके सदुपयोग से अपने जीवन को उन्नत करने का मार्ग दिखाई देता है। हमें ज्ञात है की प्रकृति के गोद में जीवन एवं विनाश उभय खेलते है जिसके कारण प्रकृति के साथ खिलवाड़ अशोभनीय है। वर्तमान समय मे जिस प्रकार प्राकृतिक आपदाएँ हमारे सम्मुख उपस्थित हो रहे हैं वेदों में इतप्रकार के विपत्तियों का कदाचित ही वर्णन है। अतः इससे ज्ञात होता है वैदिक समाज में शायद प्रकृति एवं मनुष्य का एक अनूठा साझेदारी था जो वर्तमान समय मे नहीं है। प्रकृति के दुरुपयोग से प्राचीन सभ्यताएं पहले नष्ट हो चुके हैं। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मनुष्य ओर प्रकृति का आन्तः सम्बन्ध किस प्रकार होना चाहिए यह विचारधाराएँ हमारे वैदिक ग्रन्थों में सुन्दरतया प्रभुसम्मित उपदेश शैली में वर्णित है । इन सभी विषयों को इस शोधपत्र द्वारा आलोकित तथा अलोडित किया जायेगा।

45

योगदर्शन में जीवात्मा और प्रकृति

प्रो॰ हरीश

संस्कृत विभागः
किरोड़ीमल महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

harishkmcdu@gmail.com

योगदर्शन में दो प्रकार की समाधियों की चर्चा गई है - सम्प्रज्ञात समाधि एवम् असम्प्रज्ञात समाधि। एकाग्र अवस्था में होने वाली चार समाधियों का एक सामूहिक नाम सम्प्रज्ञात, सबीज अथवा सालम्बन समाधि है, जिसमें 27 तत्वों का साक्षात्कार योगाभ्यासी को क्रमशः होता है। निरुद्ध अवस्था में जो समाधि लगती है, वह असम्प्रज्ञात, निर्बीज अथवा निरालम्बन समाधि कहलाती है। इस समाधि में जीवात्मा का परमात्मा से मिलन होता है। सम्प्रज्ञात समाधि को महर्षि पतञ्जलि ने समापत्ति शब्द से भी कहा है (योगसूत्र 1.41)। स्फटिक मणि की भाँति निर्मल व अभ्यास-वैराग्य के द्वारा क्षीणवृत्तियों वाले तथा ग्रहीता (आत्मा), ग्रहण (सत्व, रजस्, तमस, महत् तत्व रूपी बुद्धि, अहंकार, मन, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्च-कर्मेन्द्रियाँ व पञ्च-तन्मात्राएँ या सूक्ष्मभूत) और ग्राह्य (पञ्च-स्थूलभूत) आलम्बनों में स्थित या एकाग्र चित्त का उन-उन आलम्बनों में तद्रूप या तदाकारित हो जाना 'समापत्ति' है। यह समापत्ति भी चार भेदों वाली है - सवितर्का, निर्वितर्का, सविचारा और निर्विचारा। सवितर्का समापत्ति में पञ्च-महाभूतों का शब्द, अर्थ और ज्ञान के विकल्पों से मिश्रित साक्षात्कार होता है। निर्वितर्का समापत्ति में इन्हीं पञ्च स्थूलभूतों का अर्थमात्र निर्भास होता है। सविचारा समापत्ति में 22 पदार्थों अर्थात् पञ्च-सूक्ष्मभूत, पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्च-कर्मेन्द्रियाँ, मन, अहङ्कार, महत्तत्वरूपी बुद्धि, त्रिधा (सत्व, रजस्, तमस्) प्रकृति व जीवात्मा का शब्दार्थ ज्ञान होता है। निर्विचारा समापत्ति में सविचारा समापत्ति के ही 22 पदार्थों का अर्थमात्र ज्ञान होता है। इस प्रकार ईश्वर एवं ये 27 तत्व योगदर्शन में निमित्त एवं कारण-कार्य के रूप में प्रतिपादित हैं। इस प्रकार प्रस्तुत शोध-पत्र में योगदर्शन में जीवात्मा और प्रकृति के स्वरूप एवं सम्बन्ध पर प्रकाश डाला गया है तथा प्रमाण-रूप में, पातञ्जल-योग-दर्शन, श्रीमद्भगवद्गीता व उपनिषद्-वचनों आदि को उद्धृत किया गया है।

46

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्ध का वैदिक परम्परानुसार चित्रण

डॉ० दिव्या त्रिपाठी
संस्कृत विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त)
डी० ए० वी० शताब्दी महाविद्यालय, फरीदाबाद, हरियाणा

divya16tripathi@yahoo.co.in

मनुष्य वस्तुत: प्रकृति का अभिन्न अंग है। वेदों में देवता से अधिष्ठित प्राकृतिक शक्तियों यथा सूर्य, इन्द्र, वरुण, अग्नि आदि से मनुष्य पर अनुग्रह करने की कामना से उनकी स्तुतियाँ की गई हैं। इसी तरह कविकुल - शिरोमणि कालिदास कृत नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में स्थान-स्थान पर प्रकृति और मनुष्य के मध्य सामञ्जस्यपूर्ण सम्बन्ध परिलक्षित होता है। लताओं के लिए शकुन्तला का सोदर-स्नेह,मृगशावक के प्रति पुत्रवत्-वात्सल्य, गर्भिणी हरिणी के प्रति ध्यान, वृक्षों का सर्वप्रथम जलसिञ्चन करना, मण्डनप्रिय होने पर भी उनके फूलों को न तोड़ना, विदाई-वेला पर वनस्पतियों द्वारा आभूषण, वस्त्र आदि भेंट दी जानी,वृक्षों से जाने की अनुमति लेना तथा उनके द्वारा भी अनुमति को दिया जाना, मृग द्वारा नायिका का मार्ग रोकना, मयूरों का नृत्य को रोक देना आदि सैंकड़ों वृत्तान्त मानव और प्रकृति के पारस्परिक सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध को प्रकाशित करते हैं। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो तपोवन-सभ्यता नागर-सभ्यता में बदलती जा रही है। मानव उत्कट स्वार्थवश धात्री, पालक, प्राणद प्रकृति का अनियन्त्रित दोहन कर अपनी कब्र स्वयं खोद रहा है। मानव का अस्तित्व एवं विकास तभी सम्भव है जब प्रकृति के घटकों यथा वायु, जल, आकाश,तेज, पृथ्वी, ओषधि, वनस्पति आदि शुद्ध रहें।

47

वैदिक साहित्य में स्वप्नविज्ञान

निखिल राज आर्य
शोध छात्र, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

aryarajnikhil0669@gmail.com

स्वप्नावस्था एक ऐसा अद्भुत लोक जो हमें कल्पनातीत प्रतीत होता है, किन्तु क्या इसका जीवन के किसी अंश से संबंध है? यह प्रश्न प्राचीन काल से लेकर आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के शोध का विषय रहा है। स्वप्न एक प्राचीन शब्द है, और ऋग्वेद में भी इसका प्रयोग मिलता

है। (ऋग्वेद 8.100.475) संस्कृत में स्वप्न शब्द निद्रा या शयन के अर्थ में अनेकत्र प्रयुक्त हुआ है। अमरकोष ने स्वप्न के इस अर्थ में को प्रमुखता दी है। स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेशः इत्यादि। (अमरकोष, प्रथमकाण्ड) प्रश्नोपनिषद् के अनुसार- जाग्रत अवस्था में जो भी पहले कहीं देखा है, अथवा सुना हे, अथवा अनुभव किया है- इस जन्म में नहीं अन्य अनेक जन्मों में भी उन सबको आत्मा स्वप्न में देखता, सुनता, अनुभव करता है। (प्रश्नोपनिषद् 4.5) नृसिंहोत्तरतापिन्युपनिषद् के अनुसार स्वप्न परब्रह्म नारायण का दूसरा पाद या स्वरूपभूत अंश 'उ' कार युक्त तैजस है। (नृसिंहोत्तरतापिन्युपनिषद्, खण्ड 2) अथर्ववेद में स्वप्नों और दुःस्वप्नों से सम्बन्धित अनेक सूक्त हैं। एक सूक्त में कहा गया है- हे स्वप्न मैं तेरी उत्पत्ति को जानता हूँ। (अथर्ववेद 16.2.5) मनोविश्लेषण के संस्थापक फ्रायड ने एक ओर जहाँ अन्तश्चेतना के अविज्ञात प्रदेशों में विद्यमान अनिष्टों, अन्धकारों पर प्रकाश डाला है, वहाँ दूसरी ओर सपनों की उत्पत्ति का मूल कारण कामेच्छा का दमन माना है। प्रश्नोपनिषद् में अन्य स्थल पर स्वप्नावस्था में दैवीय अनुभूति के वर्णन प्राप्त होते हैं। स्वप्नावस्था की इस दशा का वर्णन सी॰ जी॰ जुंग ने अपनी पुस्तक 'मार्डन मैन इन सर्च ऑफ ए सोल' में किया है। वैदिक साहित्य के इसी स्वप्नविज्ञान का प्रभाव हमें पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों व धर्मों में भी दृष्टिगोचर होता है। बाइबिल के सभी दैवी सन्देश, सपनो में ही प्रकट हुए बताए जाते हैं। हेवलॉक एलिस का मत है कि 'प्रत्येक स्वप्न विगत काल की सञ्चित अनुभूतियों और शारीरिक विकारों के योग का परिणाम होता है। वर्तमान काल में आवश्यकता है कि वैदिक साहित्य में वर्णित स्वप्नविज्ञान को और अधिक सूक्ष्मता से समझने का प्रयास किया जाए।

48

कालिदास-साहित्य में वर्णित पशु - वैदिक परिप्रेक्ष्य

डॉ॰ प्रतिभा शुक्ला

संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष - संस्कृत साहित्य
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

pratibhashukla.up@gmail.com

वैदिक ऋषियों की दृष्टि में पशुओं का महत्वपूर्ण स्थान हैं। वेद में पशु शब्द का व्यापक अर्थ है। रुद्र को पशुपति कहा गया है। पशुओं में गौ, अजा, अवि, अश्व इत्यादि प्रमुख हैं। गौ अपना विशेष स्थान रखती है। जिसप्रकार मेघ प्रसन्नतापूर्वक प्राणियों पर जल वृष्टि करते हैं उसी प्रकार गाय हमें दुग्ध प्रदान करती है। (ऋ॰ 4.34.8) गाय को रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री एवं आदित्य देवों की बहिन बताया है। गाय में सभी देवता निहित हैं। ऋग्वेद में पशु संवर्धन पर अत्यधिक बल दिया गया है। अश्वों को अन्नादि से तृप्त रखने परिणामतः सरलता से युद्ध जीतने का निर्देश मिलता है। इन्द्र से बैलों को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई है।

(ऋ॰ 3.53.18) अथर्ववेद में भी अनेक प्रकार के पशुओं की चर्चा प्राप्त होती है। यहाँ गाय, अश्व, ऊँट, व्याघ्र, बन्दर, कुत्ते, काले मृग, गधे, भेड़ बकरी, हाथी, शेर, सुअर इत्यादि पशुओं का उल्लेख प्राप्त होता है। बैल के विषय में कहा गया है कि चलने वाले में बैल श्रेष्ठ है। (ऋ॰ 19.39.4) महाकवि कालिदास ने वन्य एवं ग्राम्य दोनों प्रकार के पशुओं का उल्लेख अपने साहित्य में किया है। साथ ही इन पशुओं के स्वभाव के विषय में भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। ऋतुसंहार प्रथम के सर्ग में कहा गया है कि प्यास के कारण जिनके तालु सूख गये है ऐसे हिरण अत्यन्त सन्तप्त होकर नीले आकाश को देखकर वन में जल है ऐसा सोचकर दौड़ रहे है। (ऋतुसंहार 1.11) रघुवंश में वन्य वराह, भैंसे, गैंडे, बाघ, हाथी, चमरी मृग, रुरु मृग इत्यादि वन्य पशुओं का वर्णन मिलता है। रघुवंश के पंचम सर्ग में वरतन्तु के शिष्य ऋषि कौत्स जब रघु के पास गुरूदक्षिणा हेतु धनराशि की याचना के लिए पहुँचते हैं तो रघु उनसे उन की हरिणियों के नन्हे बच्चों की कुशलक्षेम पूछते हैं जो ऋषियों की गोद में बैठकर खेलते हैं। (रघुवंश 5.7) इस प्रकार महाकवि कालिदास के साहित्य में पशुओं के वर्णन का आधार वैदिक प्रतीत होता है।

49
वैदिक संस्कृति, प्रकृति और पर्यावरण

ज्योति अम्बष्ट
एम फिल थियोलोजी (डी ई आई,आगरा)
शिक्षिका : दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीच्युट , आगरा

atamdayal@gmail.com

वैदिक संस्कृति का प्रकृति से अटूट सम्बन्ध है। वैदिक संस्कृति का सम्पूर्ण क्रिया-कलाप प्रकृति से पूर्णतः जुड़ा हुआ है। वेदों में प्रकृति संरक्षण अर्थात पर्यावरण से सम्बन्धित अनेक सूक्त हैं। वेदों में दो प्रकार के पर्यावरण को शुद्ध रखने पर बल दिया गया है– आन्तरिक एवं बाह्य। इसे ही संस्कृत साहित्य क्रमशः अन्तःप्रकृति और बाह्यप्रकृति कहा जाता है। सभी स्थूल वस्तुएँ बाह्य एवं शरीर के अन्दर व्याप्त सूक्ष्म तत्व जैसे मन एवं आत्मा आन्तरिक पर्यावरण का हिस्सा हैं। आधुनिक पर्यावरण विज्ञान केवल बाह्य पर्यावरण की शुद्धि पर केन्द्रित है। वेद आन्तरिक पर्यावरण जैसे मन एवं आत्मा की शुद्धि के साथ पर्यावरण की अवधारणा को स्पष्ट करता है। बाह्य पर्यावरण में घटित होने वाली सभी घटनायें मन में घटित होने वाले विचार का ही प्रतिफल हैं। प्रकृति दो शब्दों से मिलकर बनी है - प्र और कृति। प्र अर्थात प्रकृष्ट (श्रेष्ठ/उत्तम) और कृति का अर्थ है रचना। बाह्यप्रकृति में पाँच तत्व - पृथ्वी , जल, अग्नि, वायु और आकाश शामिल हैं। मानव प्रकृति में मन, बुद्धि और अहंकार सम्मिलित हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पञ्चमहाभूत, मन, बुद्धि तथा अहंकार- ये आठ प्रकार की प्रकृति

समूचे ब्रह्माण्ड का निर्माण करती है। वेदों में वर्णित है की मनुष्य का शरीर पञ्चभूतों यानी अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश से मिलकर बना है। इन पञ्चतत्वों को विज्ञान भी मानता है। अतः प्रकृति के विना मानव अस्तित्व की परिकल्पना असम्भव है। छान्दोग्य-उपनिषद् में उद्दालक ऋषि अपने पुत्र श्वेतकेतु से आत्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वृक्ष जीवात्मा से ओतप्रोत होते हैं और मनुष्यों की भाँति सुख-दुःख की अनुभूति करते हैं। प्राचीन काल से वट वृक्ष, पीपल और तुलसी आदि की पूजा होती रही है, इनमें वन देवता व वृक्ष देवता की कल्पना की गई है जिससे वन की कटाई न हो और पर्यावरण सुरक्षित रहे। इसके विपरीत आज वनों की कटाई बढ़ गई है जिससे हमें जलवायु परिवर्तन,ओजोन क्षय, भूमण्डलीय उष्णता, वनोन्मूलन, असमय वर्षा, आँधी, तूफान जैसी आपदा का सामना करना पर रहा है। वैदिक संस्कृति मनुष्य को विकृति से प्रकृति और प्रकृति से संस्कृति की ओर ले जाता है। आपदाओं से बचने के लिए हमें अपने चारों ओर के वातावरण को संरक्षित करना होगा तथा उसे जीवन के अनुकूल बनाए रखना होगा। वस्तुतः हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का अस्तित्व प्रकृति की गोद में पलता -बढ़ता है।

50

वैदिक संस्कृति, प्रकृति और पर्यावरण

डॉ॰ साधना शर्मा
सहायक-आचार्य
स्नातकोत्तर-व्याकरण-विभाग
कामेश्वर-सिंह-दरभंगा-संस्कृत-विश्वविद्यालय

sadhana.shrma@gmail.com

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' अर्थात् वेद धर्म का मूल है। वैदिक सिद्धान्त के आधार पर सृष्टि की रचना हुई है। वैदिक सिद्धान्त त्रैतवाद को यदि हम देखें तो यह मनुष्य को जीने का ढंग सिखाता है इसमें तीन पदार्थ हैं- प्रकृति, जीव और ईश्वर। ईश्वर अर्थात् सच्चिदानन्द, मनुष्य का लक्ष्य है, यहाँ मेरा मत ये है कि जीव प्रकृति को संरक्षित करके ही ईश्वर की प्राप्ति कर सकता है। 'मनुर्भव' - 'मनुष्य बनो' का अर्थ प्रकृति, जीव और ईश्वर तीन सोपानों को जानना है। वेद शब्द में प्रयुक्त विद्-धातु अपने चार अर्थों द्वारा यही कहती है। जिस पृथ्वी पर पृथ्वी सूक्त वेद में वर्णित है, आज वही पृथ्वी प्रदूषित है। इस शोध-पत्र के द्वारा मेरा उद्देश्य है कि वैदिक सार-तत्त्व यथामति उद्धृत हों। प्रकृति को हम जैसा बनाएँगे वो वैसी बनेगी। इसको स्वर्ग, नरक या अपवर्ग बनाना, यह हम मनुष्यों पर ही निर्भर है।

51

वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य

त्रिद्वीप सरकार

सहायक अध्यापक
बाँकुड़ा विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल

tridwipsarkar@gmail.com

ऋषियों ने जिन विषयों का वेदों में साक्षात्कार किए हैं , उनमें प्रमुख हैं परमात्मा , जीवात्मा तथा प्रकृति । वेदों में किसी भी विषय का वर्णन सूक्ष्म रूपों में प्राप्त होता है। मन्त्रों में जो उपदेश प्राप्त होते हैं, वे सब सभी जीवमात्र के कल्याण के लिए है। वेद मानवजाति का प्राणस्वरूप है। मनुष्य अपनी विचार के माध्यम से वेदोक्त उपदेशों को अपने जीवन में धारण करने का प्रयत्न करता है। वेद ही मानव के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। वेदोक्त प्रकृति का अर्थ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ग्रहण कर सकते हैं। अतः वेदों में प्रकृति के साथ मनुष्य का तीन प्रकार का सम्बन्ध बताया जा सकता है। इनमें से प्रथम प्रकृति से मानव का यज्ञात्मकसम्बन्ध है। इसमें ऋग्वेद में उत्तरसृष्टि के लिए मानस यज्ञ है जिसमें प्राकृतिक तत्त्व हवि के रूप में प्रयुक्त हुए हैं– वसन्त ऋतु यज्ञ की घृतस्वरूप, ग्रीष्म ऋतु समिधा है तथा शरद् ऋतु हवि द्रव्य है। इसी शाश्वत यज्ञ से पृथिवी पर भिन्न भिन्न वनस्पतियाँ जीव उत्पन्न होते रहते हैं। द्वितीय प्रकृति और मानव का वृष्टिपरिपूरक सम्बन्ध है। प्रकृति और मानव वृष्टि में एक दूसरे के सहयोगी हैं। मनुष्य हव्य पदार्थ के साथ अग्नि में यज्ञ का अनुष्ठान करता है, जिस यज्ञ से वृष्टि होती है। मण्डूक सूक्त में भी वर्षाकाम वसिष्ठ ऋषि मण्डूकों की स्तुति करते हैं। क्योंकि ये मण्डूक पर्जन्यदेव के लिए प्रिय वचनों को बोलने वाले होते हैं। अतः ऋषि वृष्टि हेतु सबसे पहले मण्डूकों को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। मण्डूकों के प्रसन्न होने पर ही वे पर्जन्य के प्रियवचनों को बोलने लगते हैं, जिससे वृष्टि होती है। तृतीय प्रकृति और मानव का चिकित्साविषयक सम्बन्ध है। अथर्ववेद में अनेक ऐसे सूक्त प्राप्त होते हैं, जिनमें मानव सम्बन्धित रोगों के चिकित्सा के लिए प्रकृति का उपयोग किया किया जाता है। प्रकृति और मानव का माता-पुत्र का सम्बन्ध है। प्रकृति की अन्यतमा तत्त्व पृथिवी है, जिसे अथर्ववेद में माता तथा पर्जन्य को पिता कहा गया है। मातारूपी पृथिवी पर्जन्य के वृष्टिरूपी रेतस से रेतसावती (गर्भधारणयुक्ता) होती है। इस प्रकार से वर्तमान समय में भी वेदप्रतिपादित प्रकृति के साथ मानव का सम्बन्ध नित्य रूप में प्रवाहमान है।

52
वैदिक परम्परा में प्रकृति के प्रति जागरूकता

तुषार कुमार
एम० ए०, प्रथम वर्ष, संस्कृत विभाग
उत्तरी परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

tt174435@gmail.com

वैदिक परम्परा में मानव और प्रकृति का मौलिक सम्बन्ध प्राप्त होता है। वेदकालीन मानव प्राकृतिक संसाधनों का नियमित रूप से उपयोग करने के साथ प्रकृति के प्रति संरक्षण का भाव भी रखता था। मानव सम्बन्धी ज्ञान की उपमा प्राकृतिक उदाहरणों से दी जाती थी। अरण्यानी-सूक्त और मण्डूक-सूक्त उदाहरण हैं कि वेदकालीन मानव किस तरह से प्रकृति से जुड़ा हुआ होता था और उसमें विभिन्न प्रकार के आलंकारिक दर्शन करता था जिसका उदाहरण इन सूक्तों के मन्त्रों में दिया गया है। वेदों में यज्ञों द्वारा प्रकृति संरक्षण का विषय भी प्राप्त होता है। इस प्रकार इन सूक्तों के मन्त्रों के माध्यम से प्रस्तावित शोध पत्र का उद्देश्य मानव का प्रकृति के प्रति निकटता, जागरूकता को दर्शाते हुए, प्रदूषण आदि आधुनिक समस्याओं की वैदिक सन्दर्भ में चर्चा करना है।

53
अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्

डॉ० अर्चना रानी दुबे
पूर्व सीनियर फेलो
संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

dr.archana.dubey61@gmail.com

उपनिषद् वेदों के अन्तिम भाग हैं। तैत्तिरीय उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय आरण्यक का एक भाग है। इस उपनिषद् में तीन वल्लियाँ हैं, जो शीक्षा, ब्रह्मानन्द और भृगु नाम से प्रसिद्ध हैं। प्रथम वल्ली में उपासन और शिष्टाचार की शिक्षा शिष्य को दी गई है और अन्य दोनों में ब्रह्मविद्या का निरूपण तथा ब्रह्मप्राप्ति के उपाय वरुण और उनके जिज्ञासु पुत्र भृगु के संवाद के रूप में बताए गए हैं। उपनिषद का मूल उद्देश्य यद्यपि जीव और ब्रह्म का ऐक्य स्थापित करना है तथापि उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो सूक्ष्म प्रक्रिया समझाई गई है उस सूक्ष्म प्रक्रिया को समझाने के लिए प्रकृति के स्थूल तत्त्वों की महत्ता को भी दर्शाया गया है।

ब्रह्म जो स्वयं प्रकृति के रचयिता हैं, उस तक पहुँचने के लिए प्राकृतिक तत्त्वों का माध्यम ही ग्रहण करना होता है। परम तत्त्व एवं प्रकृति के स्थूल तत्त्व सब आपस में एक दूसरे से सम्बद्ध हैं, एकमेक हैं। वह परम तत्त्व-परम शक्ति जो भी है वह और प्राकृतिक तत्त्व सब एक दूसरे से गुथे हैं ऐसा आधुनिक वैज्ञानिक भी स्वीकार कर रहे हैं। अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्- इस श्रुति वाक्य के माध्यम से अन्न ही ब्रह्म है, ऐसा कहा जाता है। समस्त प्राणी अन्न के परिणामभूत वीर्य से उत्पन्न होते हैं, अन्न से ही उसका जीवन सुरक्षित रहता है और मरने के बाद अन्न-स्वरूप इस पृथिवी में ही समा जाते हैं। उपनिषद् में ब्रह्म के स्थूल रूप का वर्णन 'अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्' के माध्यम से किया गया है। यद्यपि ब्रह्मपरक जिज्ञासा का समाधान आत्मनिष्ठ है किन्तु उस आत्मतत्त्वबोध के लिए अपने चारों ओर व्याप्त प्रकृति के तत्त्वों का गम्भीरतापूर्वक बोध भी आवश्यक है। उस परमतत्त्व का बोध और प्रकृति के उपादान सब एक दूसरे से सम्बद्ध और आबद्ध हैं, परस्पराश्रित भी हैं। आधुनिक वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार कर रहे हैं कि जो परम ऊर्जा है जिससे यह पूरा ब्रह्माण्ड निर्मित है वह परम ऊर्जा अथवा परम तत्त्व और ब्रह्माण्ड के समस्त ग्रह, उपग्रह सब एक दूसरे से इस प्रकार आबद्ध हैं कि सब एक दूसरे को निरन्तर प्रभावित करते हैं। वह एक दूसरे की शक्ति के माध्यम से नवीन उत्पत्ति भी करते हैं। सन् 2022 का भौतिकी का नोबेल पुरस्कार जीतने वाले वैज्ञानिक एलेन आस्पेक्ट, जॉन क्लॉसर तथा एण्टन जेलिंगर का शोधपरक कार्य इसी प्रकार का संकेत करता है। प्रस्तुत शोधपत्र में तैत्तिरीयोपनिषद् को आधार बनाकर ब्रह्म प्राप्ति के साधनों की प्रक्रिया को समझाते हुए मानव एवं प्रकृति के सम्बन्ध को समझाने का प्रयास किया जाएगा साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक शोधों पर भी विचार किया जाएगा।

54

वैदिक साहित्य में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक सन्दर्भ

डॉ॰ आशुतोष कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
लक्ष्मीबाई महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय)

ashutoshkumar@lb.du.ac.in

वैदिक साहित्य समस्त ज्ञान का स्रोत है। इसमें आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक विचारधाराओं का समन्वय है। इसमें जीवन में श्रेयस् एवं प्रेयस् प्राप्ति के सभी साधन वर्णित हैं। वैदिक युग का मानव प्रकृति के प्रति जागरूक एवं कृतज्ञ था। जन-मन में प्रकृति के प्रति प्रगाढ अनुराग था। वैदिक कालीन ऋषियों ने प्रकृति को बिना क्षति पहुँचाये उसकी समृद्धि में अपना जीवन अर्पित किया। उन्होंने प्रकृति के आँचल को अपना निवास बनाया, पेड़-पौधे एवं पशु-पक्षियों के मध्य रहना प्रारम्भ किया। स्वस्थ जीवन हेतु पर्वतों का सामीप्य तथा नदीयों का

सङ्गम चुना– *"उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् धिया विप्रो अजायत" (ऋ० ८.६.२८)।* प्रकृति के समीपस्थ वैदिक काल के मानव ने प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का उपयोग बड़े सम्मान से किया है। उन्होंने पर्यावरणीय तत्त्वों में देवत्व को अनुभव किया और उनका पूजन प्रारम्भ किया। वेदों में कई स्थलों पर प्रकृति के साथ पारिवारिक सम्बन्ध भी दिखाई देते हैं। ऋग्वेद में द्युलोक को पिता, पृथ्वी लोक को माता तथा अन्तरिक्ष लोक को पुत्र कहा गया है। प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से वैदिक संहिताओं में प्रतिबिम्बित मनुष्य और प्रकृति के अन्त:सम्बन्ध को आधुनिक सन्दर्भ में बताया गया है।

55

ईशावास्योपनिषद् में मानव एवं प्रकृति केन्द्रित चिन्तन एवं संधारणीय विकास

बलराम कुमार

शोधार्थी, संस्कृत-विभाग
हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय

balramsiwan58@gmail.com

वर्तमान वैश्विक पारिस्थितिकी तन्त्र में हुए असन्तुलन एवं बढते प्रदूषण के फलस्वरूप एकांगी विकास के स्थान पर संधारणीय विकास (Sustainable Development) की अवधारणा विकसित हुई है। यह गहन पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण के अन्तर्गत आता है जिसे पोषणीय विकास भी कहते हैं। भारतीय चिन्तन परम्परा सदैव ही प्रकृति एवं उसके समस्त उपादानों को केन्द्र में रखकर समग्र विकास की आधारशिला प्रदान करती है। इसी सन्दर्भ में दर्शन, आध्यात्म एवं जीव एवं जगत के विषय में सर्वोच्चतम दृष्टि प्रदान करने वाले उपनिषदों की परंपरा में शुक्ल यजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय ईशावास्योपनिषद् है। 'ईशावास्यमिदं सर्वम्' वाक्य के माध्यम से यह ग्रन्थ इस ब्रह्माण्ड एवं जीव से सम्बन्धित गूढतम रहस्यों को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 'तेनत्येक्तेन भुञ्जीथा' के द्वारा मनुष्य एवं अन्य समस्त जीवों में सभी प्रकार के भेदभावों का परित्याग कर, भोग्य एवं भोक्ता रूपी समस्त द्वैतों का अन्त कर अधिकारों और कर्त्तव्यों को जोड़कर एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण का विकास करता है। वर्तमान विकासवादी चिन्तन मानव हित को केन्द्र में रखते हुए सम्पूर्ण सृष्टि को विजित एवं भोग्य के रूप में प्रस्तुत करता है। ईशोपनिषद में वर्णित त्यागपूर्वक उपभोग की भावना को वरीयता देनी होगी जिससे कि उपभोक्तावादी दृष्टिकोण का अन्त कर, वैश्विक समस्याओं यथा विश्व में व्याप्त संसाधनों का असमान वितरण, मानव-प्रकृति में हुए असन्तुलन, भुखमरी, पर्यावरण प्रदूषण व इससे उत्पन्न ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं को समाधान तक पहुँचाया जा सकेगा व समावेशी विकास का सपना साकार हो सकेगा। प्रस्तावित शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान पर्यावरण संकट को

देखते हुए ईशोपनिषद् सम्मत समाधान प्रस्तुत कर वैदिक संधारणीय विकास की अवधारणा की वर्तमान प्रासङ्गिकता पर विमर्श करना है।

56

वैदिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक मानव जीवन

चन्दा
शोधच्छात्रा, मानविकी विद्यापीठ (संस्कृत)
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली -110063

chandashah461@gmail.com

वैदिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक मानव सनातन संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण है । वेदों के आधारशिला के ऊपर ही प्रमुख रूप से ही भारतीय-धर्म तथा सभ्यता की इमारत खड़ी हुई है । वैदिक जीवन प्रणाली सदा ही उपत्यकाओं में ही पर्यावरण की रक्षा करते हुए पल्लवित पुष्पित हुई है। वैदिक ऋषियों के अनुसार वैदिक चिन्तन एवं जीवन नदियों के सङ्गमस्थलों, गिरि के कन्दराओं में विकसित हुआ है। जिसने कभी भी प्रकृति एवं पर्यावरण का दोहन अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं किया है। वैदिक जीवन-शैली प्रधानतया ग्राम्य समाज था अवश्य परन्तु नगरीय जीवन की छटा का एकान्त अभाव था ऐसा नहीं मान सकते है । 'नगर' शब्द हमें आरण्यकों में भी प्राप्त होता है। इसलिए यह कहना कि आधुनिक शहरी करण के कारण पर्यावरण तथा प्रकृति में जहरीलापन आया हैं, यह सत्य नहीं है। आधुनिक मानव सभ्यता ने ऋषियों के चिन्तन से प्राप्त वेदरूपी मानवीय सभ्यता संविधान को अपने जीवन में अपनाना जब से कम कर दिया वह अन्तर-बाह्य सभी तरफ से परेशान होने लगा हैं। यदि हम पीछे मुड़कर वैदिक जीवन को देखते हैं तो पाते हैं कि वैदिक-ग्राम आवश्यक सामग्रियों से परिपूर्ण रहता था। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे अन्य ग्रामों व नगरों पर निर्भर नहीं होना पड़ता था लेकिन आज के आधुनिक समय में सम्पूर्ण समाज एक दूसरे के ऊपर ऐसा निर्भर हो गया है कि यदि दुनिया में कहीं कुछ भी हो जाए तो पूरी की पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल सी मच जाती है, उदाहरण के लिए कोरोनाकाल, रुस-यूक्रेन युद्ध अभी तत्काल में इजरायल खाड़ी के देशों का युद्ध हमारे सामने है। जिससे अर्थजगत में भारी गिरावट और उथल-पुथल मची हुई है। हमारे वैदिक समाज के निवासी आर्यलोग अन्नादि भोज्य पदार्थों को कठोर परिश्रम कर कृषि-कर्म द्वारा तथा दूध, घी, दही आदि पदार्थ पशु-पालन से उत्पन्न किया करते थे। वेदकालीन ग्राम्य-जन भेड़ तथा बकरियाँ पालते थे भेड़ों के ऊन निकालकर कम्बलादि उष्ण वस्त्र का निर्माण कर स्वयं अपने को शीत से बचने हेतु प्रयोग करते थे। तथा उसे बेच कर अपने लिये अन्य वस्तुओं की व्यवस्था भी करते थे। कृषि कार्य करने वाले कृषक जन रुई की बहुतायत उत्पादन किया करते

थे। जिससे घर की स्त्रियाँ कपड़े आदि सुन्दर-सुन्दर वस्त्र निर्माण किया करती थी। बढ़ई लोग जो कि काष्ठ का कार्य करते थे, वे युद्ध, यात्रा के तथा मनोविनोद के प्रधान सहायक रथ का निर्माण किया करते थे। इसी प्रकार लोगों के स्वास्थ्य रक्षण हेतु रोगों को दूर करने वाले वैद्य हुआ करते थे। इन्हीं विषयों का अन्वेषण करके शोधपत्र में विवेचना प्रस्तुत की गई है।

57
अथर्ववेद में प्रकृति एवं मानव का सम्बन्ध

चिरञ्जीत सरकार
शोधार्थी, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

chiranjitsarkar861@gmail.com

मानव और प्रकृति का सम्बन्ध सृष्टि के प्रारम्भ से है, इनका सम्बन्ध अन्वय- व्यतिरेक सम्बन्ध जैसा है - जहाँ मानव होगा, वहाँ प्रकृति होगी ही, क्योंकि प्रकृति के बिना मानव जीवित नहीं रह सकते, इसलिए मानव उसी स्थान में बसते है जहाँ प्रकृति है। मानव को जीने के लिये प्रकृति की सहायता लेनी ही पडती हैं, किन्तु प्रकृति ऐसी नहीं है। वह मानव के बिना भी रह सकती है। प्रकति केवल देना जानती है लेना नहीं। प्रकृति मानव जीवन का प्राण है, क्योंकि प्रकृति के बिना मनुष्य कुछ नहीं है। यद्यपि मानव ही प्रकृति के ध्वंस का कारण है तथापि प्रकृति हमारे साथ माँ के समान व्यवहार करती है। अथर्ववेद में प्रकृति का महत्त्व बताया गया है कि कैसे मनुष्यों की शारीरिक रोग से लेकर मानसिक रोगों की चिकित्सा प्रकृति से ही की जाती रही। इसमें ओषधियों के गुण, उनके लाभ और महत्त्व आदि का बहुत विस्तार से वर्णन किया गया है। चिकित्सा क्षेत्र में प्रकृति एक वरदान है। इस वेद में अन्न के विषय में भी पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है। आज भी अगर हम प्रकृति को अपनाते है तो ऐसे असंख्य रोग अपने-आप ही नष्ट हो जायगा।

58

वेदों मे प्रतिबिम्बित प्राकृतिक उपादानों में आत्मीयता का प्रसार

डॉ॰ दिलीप कुमार जायसवाल
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
विवेकानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

dilip21jnu@gmail.com

भिन्न-भिन्न भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में मनुष्य के साथ प्रकृति के सम्बन्ध का रूपायन भिन्न भिन्न ढंग से हुआ है। एक विशिष्ट परिवेश के चलते ही भारत में प्रकृति और मनुष्य के अन्तर्सम्बन्धों में आत्मीयता, सहभाव और सहसंवर्धन का भाव परिपुष्ट हुआ है, जिसकी स्पष्ट झलक हमें वेदों में मिलती है। प्रथम ऋग्वैदिक सूक्त से ही अग्नि से पितृवत् होने की प्रार्थना की गई है तो वहीं अथर्ववेद के भूमिसूक्त में भूमि को माता कहा गया है। पाश्चात्य सभ्यता की मनोभूमि में प्रकृति एक अबूझ पहेली रही है, जिसके रहस्यों को जानकर जिसका दोहन और नियन्त्रण कर ही मानव अपने जीवन को सुख-सुविधापूर्ण बना सकता है। भारत में प्रकृति ने पर्यावरणीय अनुकूलताओं के रूप में मुक्तहस्त से मनुष्यों को अपना सर्वोत्तम उपहार प्रदान किया है, फलस्वरूप यहाँ का मनुष्य प्रकृति के प्रति आभार और सौहार्द के भाव से आप्यायित रहा है, इसका निदर्शन वैदिक ऋचाओं में किस प्रकार हुआ है, यही दर्शाने का प्रयास प्रस्तावित शोध-पत्र में किया जायेगा।

59

अथर्ववेद में वर्णित प्राकृतिक औषधियाँ

देवराज
शोधार्थी, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

daheriya@sanskrit.du.ac.in

भारतीय परम्परा में वेदों का स्थान अत्यन्त गौरवपूर्ण, महिमामण्डित एवं श्रद्धास्पद है। विश्व के विद्वानों ने एकमत से स्वीकार किया है कि वेद सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। वेद ऋषिओं द्वारा सुनाए गए ज्ञान पर आधारित है इसलिए इसे श्रुति कहा जाता है। वेद के चार विभाग है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद वेदों में मौजूद सामग्री के विश्लेषण से हमें ज्ञान होता है कि सभी वेदों में चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया गया है। इतना ही नहीं वेदों की महत्ता का वर्णन करते हुए यहाँ तक लिख दिया है कि जो व्यक्ति वेदों की प्रमाणिकता को

स्वीकार नहीं करता है, वह नास्तिक है। चारों वेदों में से अथर्ववेद को चिकित्सा का मूलस्रोत माना गया है और आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना गया है। प्राचीन भारत में उच्च गुणवत्ता का चिकित्सा ज्ञान प्रचलित था। प्राचीन भारत में प्रचलित चिकित्सा विज्ञान की कुछ झलकियाँ यहाँ प्रस्तुत की गई है। अथर्ववेद में गणित, विज्ञान, समाज शास्त्र, कृषि विज्ञान आदि अनेक विषय वर्णित है। इसमें तन्त्र-मन्त्र की विधियों के बारे में बताया गया है। यह वेद ब्रह्म ज्ञान के उपदेश का वर्णन करता और मोक्ष का उपाय भी बताता है। इसे ब्रह्मवेद भी कहते है। अथर्ववेद में चिकित्सा के विषय क्षेत्र में औषधियों का एक विशेष स्थान है, जिसमें औषधि चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। औषधि मानव ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीव जगत के लिए अमृत के तुल्य होती है। प्रस्तुत शोधपत्र में इनका विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

60
मानवीय चेतना का जागरण : वेदोक्त उषस् के सन्दर्भ में

डॉ॰ करुणा आर्या
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
दौलतराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

karunaskt23@yahoo.com

उषस् (उषा) एक वैदिक देवी हैं। संस्कृत में, उषस् का मतलब "उदय" है। ऋग्वेद में, वह एक युवा स्त्री हैं जो स्वर्णिम रथ से आकाशमार्ग पर यात्रा करती हैं। वे भोर की देवी हैं। उषा को ऋग्वेद में एक शक्तिशाली देवी के रूप में माना जाता है और उनके महत्त्व का उल्लेख कई अन्य पवित्र ग्रन्थों में भी किया गया है। इसमें देवी शक्ति की शक्तियाँ भी शामिल हैं। उन्हें अन्य वैदिक देवताओं जैसे इन्द्र, वरुण, अग्नि, सूर्य और सोम के समकक्ष माना जाता है। आकाश में उषा देवी कई पवित्र गायों द्वारा खींचे जा रहे सुनहरे रथ में सवारी करती हैं और एक आश्चर्यजनक और अद्भुत उपस्थिति के साथ बहुत सुन्दर दीखती हैं। उनकी बहन, रात की देवी, निधि देवी है। उषा आकाश के पिता पवित्र द्यौस् की दिव्य बेटी हैं। महर्षि अरविन्द द्वारा उषा देवी की प्रशंसा की गई है। उत्तर भारत एवं नेपाल में छठ पूजा के त्यौहार के समय उनकी पूजा की जाती है। उनकी पूजा और प्रार्थना शक्ति देवी के रूप में भोर के समय की जा सकती है। उषा सूक्त ऋग्वेद के तृतीय मण्डल का ६१वाँ सूक्त है इसके ऋषि विश्वामित्र तथा देवता उषस् हैं। सम्पूर्ण सूक्त में त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग किया गया है। उषा को सत्य एवं सत्य का उच्चारण करने वाली तथा विशेष रूप में शोभायमान बताया गया है। उषा को सूर्य की प्रेरयित्री कहा गया है। रात्रि तथा उषा को दो बहनों के रूप में चित्रित किया गया है शिक्षा को सदा नवीन रहने के कारण "पुराणी युवतिः" भी कहा गया है। वार का मतलब

दिन से भी होता है अतः विश्ववारा का अर्थ प्रतिदिन भी हो सकता है। विशेष गुण वाली मरण धर्म से रहित है। उषादेवी के घोड़े की विशेषता बतलाते हुए यह कहा गया है कि ये प्रतिभाशाली और अच्छी प्रकार से नियन्त्रित हैं और यह स्वर्ण के समान दीप्तिमान हैं। संसार में इन अश्वों की भाँति हम भी जीवन में प्रतिभा शाली बनें। यह ही तुमको हमारे सम्मुख लाए हैं। उषा की प्रशंसा करते हुए विश्वामित्र ऋषि कहते हैं कि उषा देवी तुम मरण-धर्म से रहित हो तथा तुम विशेष रूप से सुशोभित हो जाओ मेरी यही कामना है। हम भी आपके जैसे हो जायें। तुम्हारी वाणी प्रिय है तथा तुम सत्य वाणी का उच्चारण करती हो। हम सब भी सत्य का आचरण करें। उषादेवी संसार के प्रत्येक मानवों को सन्देश दे रही हैं कि प्रातःकाल काल की मनोरम वेला में उठकर भजन, कीर्तन, एवं मन और शरीर को उत्तम स्वास्थ्य से समृद्ध करो।उषाकाल में मनुष्य जो याद करता है वह उसे सदा याद रहता है। अतः स्मरण कराने में नवचेतना प्रदान करने में उषस् का बहुत महत्व है। ऐसी देवी को नित्य प्रणाम करना चाहिए। इस प्रकार के अनेकों सन्देश उषा देती हैं। प्रस्तावित शोधपत्र में मानवीय सञ्चेतना को उषस् द्वारा किस प्रकार नवस्फूर्त, नवस्पंदित, नवजागृत किया गया है इस पर विचार किया जायेगा।

61
ऋग्वेद में नदियों की स्तुति

डॉ॰ ललिता जुनेजा
सेवानिवृत्त प्राचार्या
उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा

lkj0704@yahoo.in

वैदिक साहित्य मानव तथा प्रकृति के समन्वय का प्रतीक है, जहाँ प्राकृतिक तत्त्वों को देवता के रूप में निरूपित किया गया है। न केवल उनका सौंदर्य एवं स्तुति का यहाँ पर वर्णित है अपितु उनकी प्रकृति की उपासना से मानव- समाज और सम्पूर्ण प्राणिमात्र के कल्याण की कामना यहाँ पर देखने को मिलती है। वर्तमान प्राकृतिक असन्तुलन की चिन्ताजनक परिस्थिति में वैदिक साहित्य, वैश्विक समाज के लिए मार्गदर्शक हो मकता है। भारतीय ज्ञानगङ्गा रूपी वेदों में पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिक विवरण प्राप्त होते हैं। वेदों में धर्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, कला तथा मानव सभ्यता और संस्कृति का सुन्दर समन्वय प्राप्त होता है। मानव सभ्यता का सम्यक् दर्शन तथा मानवीय संस्कृति का समुचित ज्ञान नदियों के अवदान से ही सिद्ध होता है। प्राचीनकाल में समस्त मानव-सभ्यता का विकास नदियों के तट पर हुआ। मानव मनीषा का स्फुरण भी नदी तटों पर हुआ, जिससे ऋषियों के आश्रम का नदी संगम के साथ नित्य सम्बन्ध प्राप्त होता है। नदी-तटों पर ही महर्षियों ने अपने तपःपूत हृदय के द्वारा मानव जीवन

के दर्शन का अनुभव किया इसलिए भारतीय संस्कृति, ऋषि तथा नदी-संगम इन तीनों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऋग्वेद के दशम मण्डल में नदी सूक्त में प्रैयमेध ऋषि के द्वारा सिन्धु नदी से प्रार्थना की गई है। नदी सूक्त की प्रारम्भिक ऋचा में जिस प्रकार मानव अपने आराध्य देव की स्तुति करता है, उसी प्रकार यहाँ भी सर्वकामदुघा नदियों का ऋषि के द्वारा संस्तवन किया जा रहा है। इस प्रकार समस्त ऋचाओं में नदियों का महत्त्व बताते हुए, स्तुति की गई है। जीवन का इहलोक तथा परलोक, परा तथा अपरा प्रत्येक प्रकार की विद्याओं के विषय में चिन्तन, मनन कर, पीढ़ी दर पीढ़ी ये ज्ञान प्रवाहित किया गया है। यह पुस्तकीय ज्ञान नहीं है, यह अनुभवजन्य ज्ञान है। यदि हम प्रकृति का संरक्षण करेंगे, तभी प्रकृति भी हमारी रक्षा करेगी। मानव और प्रकृति, वेदान्त की दृष्टि से देखें तो एक ही हैं। एकमात्र ब्रह्म ही है, सागर में लहरों की भाँति अनेकता, उसी में दृष्टिगत होती है।

62
ऋग्वेद में वर्णित मानव और प्रकृति का प्रथम संवाद 'विश्वामित्र-नदी संवाद' : आधुनिक परिप्रेक्ष्य

मनीष कुमार
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

manish18december1995@gmail.com

वेद शब्द ज्ञानार्थक विद् धातु से घञ् प्रत्यय के योग से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ 'ज्ञान' से लिया गया है। वेदभाष्यकार सायण के अनुसार इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट परिहार ही वेद का मुख्य उदेश्य है। इसमें भी इष्ट्यर्थ अनिष्ट परिहार आवश्यक है। अनिष्टपरिहार के उपायों का निर्देश वेद (ज्ञान) से ही सम्भव है। अतः कह सकते हैं कि आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक इष्टानिष्ट का सम्यक् ज्ञान और अनिष्ट-परिहार के लौकिक ही नहीं अलौकिक उपाय करना ही वेद का मुख्य धेय है। अनेक विशेषताओं, मान्यताओं और भाष्यों से विभूषित, मानित और ज्ञानवर्धित यह ज्ञान-राशि प्रकाशपुञ्ज की भाँति दशों दिशाओं में प्रकाशित हो रही है। मानव और प्रकृति का प्रथम संवाद हमें ऋग्वेद के तृतीय मण्डल के तैंतीसवें सूक्त के रूप में प्राप्त होता है। प्रस्तुत सूक्त को ही इस शोध-पत्र का आधार बनाया गया है। इसमें बताया गया है कि मानव और प्रकृति का तालमेल या परस्पर सहयोग ही मानव जीवन को सुलभ एवं देव तुल्य बना सकता है। प्रकृति हमारे ऊपर परोपकार करती है। यह मानव शरीर भी पञ्चमहाभूतों से ही निर्मित है इस कारण से जड़ कही जाने वाली प्रकृति भी हमारी पूर्वज ही हुई। इन सबको सञ्चालित करने वाला ब्रह्म भी एक तत्त्व है। अतः ब्रह्म द्वारा निर्मित प्रकृति का दोहन नहीं अपितु इनका पोषण हम सबको मिलकर करना चाहिए।

63

वैदिक साहित्य में वर्णित मानव-अभ्युदयार्थ मित्रदृष्टि

डॉ॰ मोहित कुमार मिश्रा
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

mmmishra1457@gmail.com

मानव सभ्यता और संस्कृति को जानने का सर्वप्राचीन और सर्वोत्तम साधन वेद हैं। वेद के आलोक में मनुष्य जीवन पुष्पित-पल्लवित होता रहा है। वैदिक ऋषियों ने ज्ञान-विज्ञान से लेकर प्रकृति के विविध तत्त्वों का वर्णन वेद में किया है। जहाँ प्रकृति को देवत्व के रूप में स्थापित किया गया है, प्रकृति का कण कण सार्वजनीन है। प्रकृति के पञ्चतत्त्वों की देव रूप में स्तुति हुई है। सार्वभौमिक प्रकृति के मूर्तीकरण का प्रतिनिधित्व करने वाली अदिति से उत्पन्न देवों में एक आदित्य है – 'मित्र'। 'मित्र' मरुद्गणों में से एक; सूर्य के लिए प्रयुक्त नाम है जिसका अर्थ निश्चित रूप से 'सूर्य' है क्योंकि 'वह पृथ्वी पर सर्वत्र सभी प्राणियों के लिए प्रकाश प्रसृत करता है और दिन-रात का आधार है। इस कारण यह सबका सहयोगी है, मित्र है। यही सहयोग भाव ही रूढ होकर मित्र (सखा) के रूप में लोक में प्रसिद्ध हो गया वा प्रयुक्त होने लगा। संस्कृत में मित्रता, अखण्डता और सद्भाव का प्रतिनिधित्व करने वाला वैदिक देवता 'मित्र' का वर्णन मिलता है। वैदिक साहित्य में लिखित मन्त्रों को देखें तो प्राणिमात्र के अभ्युदयार्थ मित्रदृष्टि स्पष्ट दृग्गोचर होती है (यजुर्वेद 36.18)।

64

त्रिगुणात्मिका प्रकृति - वैदिक और आधुनिक विज्ञान के परिपेक्ष्य में

डॉ॰ नीलम गौड
आत्माराम सनातनधर्म कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

neelam.gaur2299@gmail.com

महर्षि दयानंद सरस्वती का उद्घोष है की वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद में समस्त ज्ञान बीजरूप में उपलब्ध है, इसीलिए उन्होंने कहा- "वेदों की और लौटो।" प्रस्तुत शोधपत्र में त्रिगुणात्मिका प्रकृति को वैदिक और आधुनिक विज्ञान के सन्दर्भों से जानने का प्रयास किया गया है। सांख्य दर्शन में सृष्टि रचना के तत्वों के विषय में माना गया कि सत्व रजस् तमस् की साम्यावस्था ही प्रकृति है। जिस प्रकार संस्कृत साहित्य में प्रकृति के तीन गुण कहे गए हैं, उसी प्रकार आधुनिक भौतिक विज्ञान के अनुसार प्रकृति को ऊर्जा कहा गया है

और उसकी तीन अवस्थाएँ- सन्तुलित विश्रान्त अवस्था, गतिमय अवस्था तथा स्थिति विशेष अवस्था हैं। प्रस्तावित शोधपत्र में विभिन्न सन्दर्भों द्वारा प्रकृति के तीन गुणों का मानव पर प्रभाव का विवेचन करने का प्रयास किया जाएगा।

65

ऋग्वेदीय सृष्टि उत्पत्ति विषयक विवेचन

सुश्री ऋचा

पी॰ जी॰ डी॰ ए॰ वी॰ महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

richa@pgdav.du.ac.in

सृष्टि परिकल्पना को लेकर अनायास व सर्वप्रथम विचार मन में उत्पन्न होता है कि यह दृश्य जगत् कहाँ से आया? इसका निर्माणकर्त्ता कौन है ? इसको बनाने का विचार क्यों किया? इत्यादि अनेक प्रश्न उत्पन्न होते हैं। इसका समाधान क्या है? यह सृष्टि-क्रम और इसकी जिज्ञासाएँ अनन्त हैं। इस विषय से सम्बन्धित जिज्ञासाएँ वेदों में दृष्टिगोचर होती हैं। इस विषय पर समुपस्थित नासदीय सूक्त की यह जिज्ञासा विश्व प्रसिद्ध है कि "यह विविध सृष्टि किससे उत्पन्न हई, किसलिए हुई, इसे वस्तुतः कौन जानता है ? अथवा कौन कह सकता है? देवता भी इस सृष्टि के बाद हुए फिर जिससे भी यह सृष्टि उत्पन्न हुई उसे कौन जानता है? जिससे द्यावा-पृथिवी बनी वह वृक्ष कौन था और किस वन में था, इसे कौन जानता है? इन सबका अध्यक्ष परमाकाश में है, वही इसे जानता है अथवा वह भी जानता है या नहीं, इस कौन जाने?" सृष्टि के ज्ञान को प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण द्वारा नहीं ज्ञात किया जा सकता है। ऋग्वैदिक संहिता में वाग् सूक्त, पुरुष सूक्त, नासदीय सूक्त तथा अन्य अनेक मन्त्र जो सृष्टि विषयक चिन्तन की अवधारणा को सूत्र रूप में समाहित किए हुए हैं। इन स्रोतों के आधार पर प्रस्तावित शोधपत्र में सृष्टि, उत्पत्ति, प्रलय, ब्रह्मा, प्रजापति, आदिपुरुष, पञ्च-तत्त्व, ब्रह्म से विश्व की उत्पत्ति, विराद्पुरुष से विश्व की उत्पत्ति, प्रजापति क्रम से विश्व की उत्पत्ति आदि की विवेचना करने का प्रयास किया जाएगा।

66

भरद्वाज ऋषि द्वारा दृष्ट मन्त्रों में प्राकृतिक बिम्ब

पिण्टू कुमार
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

pintukumarsanskrit@gmail.com

वेद, विश्व के सबसे प्राचीन साहित्य हैं। वैदिक ग्रन्थों में हमारे ऋषि- मुनियों ने अपने तपोबल से मन्त्रों का दर्शन किया। इन दृष्ट मन्त्रों में विभिन्न प्राकृतिक विषयों का समावेश रहा है। जिसके अन्तर्गत जल, वायु, आकाश, मिट्टी, पेड़-पौधे, नदी, पर्वत, झरने, तालाब, समुद्र, खनिज, अनाज, फल, फूल आदि वह सभी तत्त्व प्राकृतिक है। इस शोधपत्र में महर्षि भरद्वाज दृष्ट मन्त्रों में प्राकृतिक बिम्ब से सम्बन्धित विषयों को प्रस्तुत किया जाएगा।

67

वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य

डॉ० संगीता कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
संस्कृत एवं वेदाध्ययन विभाग
देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

kmrsangeeta1@gmail.com

'वेद' भारतीय धर्म तथा दर्शन के प्राण हैं। वैदिक साहित्य समाज का समग्र चित्रण प्रस्तुत करता है, जिसमें मनुष्य और प्रकृति भी है। भारतीय परम्परा में प्रकृति को जीवनदात्री माना गया है। वैदिक मतानुसार प्रकृति के घटकों में समन्वय होना ही सुख, शान्ति व समृद्धि का आधार है। एक स्वस्थ पर्यावरण एक स्थिर और स्वस्थ मानव समाज की नींव है। प्राकृतिक घटकों के नाम अग्नि, वायु व वरूण इत्यादि के नाम पर रखे गये हैं। इसका उद्देश्य अग्नि, वायु व वरुण आदि के महत्व को रेखाङ्कित करते हुए घटक की पवित्रता स्थापित करना है। ताकि मानव समाज प्रकृति संरक्षण को धर्म की आज्ञा मानकर इसमें अपना योगदान ईश्वरीय सेवा समझकर दे। यह भाव ही प्रकृति के घटकों अर्थात पर्यावरण संरक्षण का बुनियादी आधार बनता है। वस्तुत: वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति का अटूट एवं शाश्वत सम्बन्ध बताया गया है और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी ऐसे ही सम्बन्ध की आवश्यकता है। प्रकृति संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से ही प्रतिवर्ष 28 जुलाई को 'विश्व प्रकृति संरक्षण

दिवस' मनाया जाता है। प्रकृति के साथ मधुर सम्बन्ध का यह यजुर्वेदीय भाव उल्लेखनीय है कि 'मधुर वायु हमारे लिए संचरण करें, नदियों में मधुर जल भरा रहे। सभी औषधियाँ मधुरता से युक्त हों। रात और दिन मधुर हों, पृथ्वी का अणुमात्र भूमिकण मधुरता से युक्त हो। अंतरिक्ष हमारे लिए माधुर्यपूर्ण हो (यजुर्वेद 13.27-29)।'

68

वैदिक वाङ्मय में जल विमर्श : आधुनिक परिप्रेक्ष्य

सपना
शोधकर्त्री, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

diwakersapna4@gmail.com

'वेद' भारतीय धर्म तथा दर्शन के प्राण हैं। वैदिक साहित्य समाज का समग्र चित्रण प्रस्तुत करता है, जिसमें मनुष्य और प्रकृति भी है। भारतीय परम्परा में प्रकृति को जीवनदात्री माना गया है। वैदिक मतानुसार प्रकृति के घटकों में समन्वय होना ही सुख, शान्ति व समृद्धि का आधार है। एक स्वस्थ पर्यावरण एक स्थिर और स्वस्थ मानव समाज की नींव है। प्राकृतिक घटकों के नाम अग्नि, वायु व वरूण इत्यादि के नाम पर रखे गये हैं। इसका उद्देश्य अग्नि, वायु व वरुण आदि के महत्व को रेखाङ्कित करते हुए घटक की पवित्रता स्थापित करना है। ताकि मानव समाज प्रकृति संरक्षण को धर्म की आज्ञा मानकर इसमें अपना योगदान ईश्वरीय सेवा समझकर दे। यह भाव ही प्रकृति के घटकों अर्थात पर्यावरण संरक्षण का बुनियादी आधार बनता है। वस्तुत: वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति का अटूट एवं शाश्वत सम्बन्ध बताया गया है और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी ऐसे ही सम्बन्ध की आवश्यकता है। प्रकृति संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से ही प्रतिवर्ष 28 जुलाई को 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' मनाया जाता है। प्रकृति के साथ मधुर सम्बन्ध का यह यजुर्वेदीय भाव उल्लेखनीय है कि 'मधुर वायु हमारे लिए संचरण करें, नदियों में मधुर जल भरा रहे। सभी औषधियाँ मधुरता से युक्त हों। रात और दिन मधुर हों, पृथ्वी का अणुमात्र भूमिकण मधुरता से युक्त हो। अंतरिक्ष हमारे लिए माधुर्यपूर्ण हो (यजुर्वेद 13.27-29)।'

69

वेद में पारिस्थितिक तन्त्र का चिन्तन एवं उसका आधुनिक परिप्रेक्ष्य

स्मृति बाला
शोधकर्त्री, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

smriti29bala@gmail.com

वैदिक चिन्तन मानव एवं प्रकृति के सम्बन्ध के गहन विश्लेषण पर आधारित है। प्रकृति के सभी घटकों के प्रति सजगता एवं पारिस्थितिक तन्त्र के सन्तुलन की आवश्यकता पर प्रारम्भिक चिन्तन वेद में प्राप्त होता है। स्थलमण्डल, जलमण्डल एवं वायुमण्डल का जैवीय और अजैवीय घटकों के साथ पारस्परिक सम्बन्ध ही पारिस्थितिक तन्त्र है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में वर्णन किया गया है कि पर्यावरण के तीन घटक तत्त्व हैं- जल वायु और ओषधियाँ अर्थात् वृक्ष और वनस्पति। इनके विषय में कहा गया है कि ये भूमि को घेरे हुए हैं। जीवन की रक्षा के लिए इन तत्त्वों की अत्यन्त आवश्यकता है। अथर्ववेद में पर्यावरण का महत्व बताते हुए कहा गया है कि जहाँ पर्यावरण शुद्ध होता है वहाँ मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सभी सुखपूर्वक जीवित रहते हैं (अथर्ववेद 8.2.25)। वर्तमान में पूरा विश्व पर्यावरण की समस्याओं से घिरा हुआ है। वैश्विक ताप में वृद्धि, हिमखण्डों के पिघलने से बढ़ता जलस्तर, जलवायु परिवर्तन, मौसम की अनियमितता, अतिवृष्टि अनावृष्टि की समस्या, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण इत्यादि समस्याएँ मानव सभ्यता पर प्रश्नचिन्ह अङ्कित कर रही हैं। इन समस्याओं का समाधान मनुष्य का पर्यावरण के प्रति सजगता और अपने दायित्वों के प्रति कर्तव्यनिष्ठा पर आधारित है। वेद इस स्थिति का सम्यक् उद्घाटन करता है।

70

वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

सुमित कुमार पाण्डेय
शोध-छात्र, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

pandeysumit289@gmail.com

वैदिक परम्परा में मनुष्य और प्रकृति का घनिष्ठ सम्बन्ध दिखाई देता है। वैदिक मानव अपने स्वास्थ्य एवं पोषण के लिए प्रकृति प्रदत्त औषधियों एवं वनस्पतियों पर ही निर्भर रहा है। इसीलिए हम देखते हैं कि अथर्ववेद में औषधि-वनस्पति विषयक पर्याप्त ज्ञान उपलब्ध है।

सम्पूर्ण अथर्ववेद में लगभग 289 औषधि-वनस्पतियों का परिचय प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य इस तथ्य की खोज करना है कि प्रकृति प्रदत्त वैदिक औषधियाँ एवं वनस्पतियाँ किस प्रकार मनुष्य के लिए वर्तमान समय में भी उपयोगी हैं? साथ ही इसके अतिरिक्त इन औषधि-वनस्पतियों के रासायनिक संगठन एवं इनके आधुनिक परिचय (वानस्पतिक, संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी नामों) सम्बन्धी ज्ञान को भी शोध-पत्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा।

71

वेदों में वर्णित पर्यावरण संतुलन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महत्त्व

सुप्रिया संजू

Assistant Professor
Amity Center for Sanskrit and Indic Studies
Amity School of Liberal Arts
Amity University Haryana

supriyasanju@gmail.com; ssanju@ggn.amity.edu

वेदों में वर्णित पर्यावरण-सन्तुलन से तात्पर्य है मनुष्य के समकक्ष विद्यमान समस्त जैविक एवं अजैविक परिस्थितियों के मध्य पूर्ण-सामञ्जस्य। कल्याणकारी सङ्कल्पना, शुद्ध आचरण एवं निर्मल वाणी ये चारों वेदों की मूल विशेषताएँ मानी जाती हैं और पर्यावरण-सन्तुलन भी मुख्यतः इन्हीं गुणों पर समाश्रित है। वेदों में जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, वनस्पति, अन्तरिक्ष, आकाश आदि के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। तत्त्वदर्शी ऋषियों के निर्देशों के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर पर्यावरण-असन्तुलन की समस्या ही उत्पन्न नहीं हो सकती। इनमें मनुष्यों द्वारा अवाञ्छनीय परिवर्तनों के कारण वर्तमान में जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, आदि की समस्याएँ चारों ओर व्याप्त हो रही हैं।

72

आधुनिक समय में यज्ञ की उपादेयता

डॉ॰ विजित कुमार
श्री अरविन्द महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

vijitkumar1990@gmail.com

भारतीय ज्ञान परम्परा में मानव के परम लक्ष्य की प्राप्ति में प्रकृति को अत्यंत महत्वपूर्ण साधन माना गया है इस लक्ष्य तक बिना प्रकृति के पहुँचना असम्भव है अत: भारतीय मनीषियों ने प्रकृति से सम्बन्धित उपायों का विधान किया जो इहलौकिक और पारलौकिक सुखों का मूल आधार है जिसमें यज्ञ की भूमिका अद्वितीय है । यह मात्र मनुष्य का ही कल्याण नहीं करता अपितु प्राणिमात्र की उन्नति में परम सहायक है इसलिए चारों वेदों में यज्ञ का बहुत अधिक महत्व बताया गया है इसके द्वारा पर्यावरण की सुरक्षा, वायुमण्डल की पवित्रता, विविध रोगों का नाश, भू प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण इत्यादि विशिष्ट लाभ हैं। यज्ञ वह वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा वायुमण्डल में आक्सीजन और कार्बन डाई आक्साइड का सन्तुलन बना रहता है। प्रस्तावित शोधपत्र के मुख्य बिन्दुओं में भौतिक विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान, वृष्टि विज्ञान, दैव विज्ञान, ऋतु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि यज्ञ के सन्दर्भ में सम्मिलित है।

73

वैदिक परम्परा के सन्दर्भ में समकालीन संस्कृत साहित्य में प्रकृति का विश्लेषण

आकांक्षा श्री
शोधकर्त्री
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली

Shreeakanksha130@gmail.com

सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का केन्द्र विषय ऋत्, सत्, आत्मा,परमात्मा और प्रकृति है। सदैव परिवर्तित होने वाली इस क्षणिक प्रकृति के मूल में कोई तो तत्व है जिससे यह सदैव चलायमान रहती है। इस संसार में मानव ही मात्र एक चिनतनशील और कर्मयोनि को ग्रहण करने वाला है अतः वेदोक्त सभी ज्ञान, विज्ञान, कर्मकाण्ड, उपासना यह सब मानव मात्र के लिए ही है। भारत के मनीषियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही पर्यावरण की उपयोगिता को जानकर उसकी

रक्षा, प्रकृति से सानिध्य संवेदनशीलता, रोगोपचार आदि की विवेचना की। वेदों को आधार बनाकर समकालिक संस्कृत साहित्य में भी मानव और प्रकृति के विषय में विशिष्ट विवेचन किया जा रहा है। वेदों की जड़ें केवल भारत में नहीं अपितु विदेशों तक फैली हुई हैं। वैदेशिक साहित्य की विधाएँ भी संस्कृत वाङ्मय में समाहित की जा रही है जैसे हाइकु, तांका, सीजो, सॉनेट, काव्ययाली, गजल आदि। इन सभी विधाओं में वेदों में वर्णित विषयों से प्रभावित हो कर प्रकृति और मानव चेतना को आधार बना कर काव्यों की रचना की जा रही है। वेद में यथास्थान प्रकृति सम्बन्धित मन्त्र प्राप्त होते हैं। वेदकालीन समाज प्रकृति के विषय में अत्यधिक सजग और संवेदना युक्त था। प्रकृति को देव रूप में पूजित किया गया। इसी प्रकार संस्कृत की आधुनिक विधाओं में भी प्रकृति को मूल में रख कर काव्य रचे जा रहे हैं। 'संस्कृत साहित्य की नवीन प्रवृत्तियाँ', 'काव्य-तत्व समान्विति:' प्रो॰ बनमाली बिस्वाल, 'आधुनिक संस्कृत साहित्य के नए भावबोध' डॉ॰ मञ्जुलता शर्मा, 'संस्कृत गजल संग्रह' डॉ॰ अर्चना दुबे, 'आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा' डॉ॰ केशव मुसलगावकर, प्रो. हर्षदेव माधव कृत हाइकु संग्रह आदि रचनाओं का विशिष्ट अध्ययन करके इसमें वैदिक प्रकृति वर्णन से साम्यता प्रदर्शित करना इस शोध का ध्येय है।

74

वैदिक देवत्व परम्परा – प्रकृति संरक्षण की मानवीय योजना

प्रो॰ अंजू सेठ

संस्कृत विभाग
सत्यवती महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

Dr.anjuseth@gmail.com

वैदिक साहित्य की मूल प्रतिष्ठा ही पर्यावरण संरक्षण है। सभी देवताओं का वर्णन प्रकृति के उपादानों के प्रतीकात्मक रूपों में किया गया है इन्द्र, वरुण, सूर्य, अग्नि, रुद्र, अश्विनौ, उषा आदि देवी-देवताओं की उपासना ही प्रकृति की उपासना है। यह वैदिक युग का प्रथम ध्येय था ताकि सामान्य मानव अपनी प्रकृति से समन्वित होकर भावनात्मक रूप से उससे जुड़ा रहे। प्रकृति के सभी उपादान नि:स्वार्थ भाव से मानव सेवा में रत होकर मानवता का संवर्धन एवं संरक्षण करते हैं। अक्षरा, अघ्या संस्कृत भाषा की जीवन्तता एवं सातत्य स्वतःसिद्ध है। संस्कृत भाषा में प्रकृतिप्रदत्त संरक्षण एवं संवर्धन अत्यन्त सूक्ष्मता से विश्लेषित किया गया है क्योंकि वैदिकयुग के ऋषियों ने प्रकृति के सभी तत्त्वों का साक्षात् दर्शन कर उनको आत्मसात् कर उनके देवत्वरूप का वर्णन किया है। सभी ऋषि त्रिकालदर्शी एवं भविष्यद्रष्टा थे जिन्होंने पर्यावरण पर आने वाली समस्याओं की सम्भावनाओं को सूक्ष्मरूप से देखकर जनसामान्य को

जागरूक करना एवं सावधान करना अपना परम कर्त्तव्य समझा था। भारतदेश तो स्वयं ही प्रकृति के संरक्षण से ओतप्रोत है। पर्वत, सागर, नदियाँ, जलप्रपात एवं सर्वप्रमुख यहाँ की पावन धरा, सर्वत्र ही प्रकृति ने चारों तरफ से मानो भारतभूमि को अपने आँचल में समेट रखा है। संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध प्रकृति-प्रेम एवं पर्यावरण चेतना हम सभी भारतीयों के लिए अनुकरणीय है। प्रकृति के अस्तित्व संरक्षण का कदम उठाएँ अन्न, जल, वृक्ष आदि के संरक्षण द्वारा धरती को बचाएँ।

75

वैदिक परम्परा में ग्रहरूप प्रकृति और मनुष्य का सम्बन्ध

डॉ॰ कल्पना तिवारी
NLP Trainer
Indian Council of Astrological Sciences

kalpanatwr1961@gmail.com

यह सर्वविदित है कि मनुष्य प्रकृति का अभिन्न अंग है। प्रकृति के विभिन्न घटकों के अन्तर्गत ब्रह्माण्ड में स्थित ग्रह-नक्षत्र एवं राशियों का ज्ञान और उनके मनुष्य आदि पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्योतिष शास्त्र में प्रतिपादित किया जाता है। 'यद्ब्रह्माण्डे तत्पिण्डे' की मान्यतानुसार ब्रह्माण्ड एवं मनुष्य का सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इसलिए भचक्र को काल पुरुष की संज्ञा दी जाती है। भचक्र के ग्रहों में सूर्य व्यक्ति की आत्मा, चन्द्रमा मन, मङ्गल ऊर्जा-शक्ति, बल एवं मानव शरीर में स्थित मांसपेशियों, बुध बुद्धि एवं तन्त्रिका तन्त्र, गुरु ज्ञान, शुक्र इच्छा-शक्ति, शनि क्रिया-शक्ति एवं न्याय का कारक है। कुण्डली के रात्रि भाग (1-7 भाव) में स्थित राशि एवं ग्रह मनुष्य के अवचेतन मन (प्रारब्धज-संस्कारों) की शुद्धि में बहुत सहायक होते हैं और अहो-भाग (8-12 भाव) शोधन के साथ-साथ अपने मुक्तकर्म (free will) एवं संकल्प के द्वारा आत्मोन्नति एवं सकारात्मकता को पुष्ट करने का निर्देश देते हैं। व्यक्ति के प्रारब्धकर्म तथा मुक्तकर्म (फ्री विल) में अन्तर होने के परिणामस्वरूप समान समय एवं स्थान में उत्पन्न जातकों की कुण्डली में समान ग्रह होने पर भी भाग्य फलादेश में अन्तर दृष्टिगत होता है जो व्यक्ति के आगे के भाग्य को निर्धारित करता है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में दैनन्दिनी समस्याओं के समाधान के लिए ही व्यक्ति फलित ज्योतिष की ओर उन्मुख हो रहा है जिससे इस विद्या के वैश्वीकरण से भ्रम फैला है । ग्रहों से सम्बन्धित मन्त्र-जाप, प्रार्थना, उपासना, साधना, दान, सत्सङ्ग आदि का प्रयोग कर भी दैवी शक्तियों का उद्बोधन किया जा सकता है जिससे समस्या के निदान के प्रति संकल्पशक्ति (फ्री विल) के सकारात्मक होने में सहायता होती है।

76
मनुष्य और प्रकृति का अन्तर्सम्बन्ध

सुमेधा शर्मा
शोधकर्त्री, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

sumedhas827@gmail.com

मानव और प्रकृति का सम्बन्ध सदैव से चर्चा का विषय रहा है। आधुनिक समय में भी यह एक ज्वलन्त विषय है और इसलिए भी प्रासङ्गिक हैं क्योंकि पिछले करोड़ों वर्ष में प्रकृति का जितना दोहन नहीं हुआ उतना मात्र पिछले ५० से सौ वर्षों में किया जा चुका है और संसार के सभी राष्ट्र मिलकर स्थायी विकास पर बल दे रहे हैं जिससे भविष्य के लिए भी सुरक्षित रखते हुए प्रकृति का उपभोग किया जा सके। वैदिक परम्परा में मानव और प्रकृति के मध्य जो सामञ्जस्य था वही उस युग के स्वस्थ और खुशहाल जीवन का आधार था। मानव स्वयं को प्रकृति का अधिष्ठाता न समझ कर स्वयं को उसका एक भाग, प्रकृति की ही एक कृति समझता था। वैदिक संहिताओं और उनसे इतर वैदिक साहित्य का प्रतिपाद्य भी मनुष्य और प्रकृति के मध्य विद्यमान अन्तर्सम्बन्ध को संसार के, पर्यावरण के और स्वयं मनुष्यों और प्रकृति के हित में उपयोगी बनाना ही है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इसी अन्तर्सम्बन्ध के आधुनिक परिप्रेक्ष्य के विषय में चर्चा की जाएगी।

77
वेदान्त दर्शन में मानव और प्रकृति का निदर्शन

डॉ० विनोद कुमार तिवारी
लेखक
नई दिल्ली

dr.binodkrtiwari@gmail.com

वैदिक वाङ्मय मानव की गरिमा के सर्वोत्तम आख्यान से आपूरित अप्रतिम विश्वकोश हैं। वैदिक वाङ्मय में प्रकृति के सौन्दर्य की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। वैदिक वाङ्मय देश और काल से निरपेक्ष सम्पूर्ण विश्व को मानवता के उत्थान का सन्देश देते हैं। वैदिक वाङ्मय में प्रकृति के संरक्षण की चेतना का उत्कृष्ट निदर्शन है। प्रकृति और पर्यावरण का प्रदूषण वर्तमान विश्व की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। पृथ्वी, आकाश, वन-प्रान्तर, पर्वतों, नदियों के समक्ष उनके अस्तित्व का संकट उठ खड़ा हुआ है। यह समस्या प्राकृतिक संसाधनों के मूर्खतापूर्ण

दोहन से उत्पन्न हुई है। लेकिन यह बड़े ही हर्ष और सन्तोष का विषय है कि इस समस्या का सर्वोत्तम समाधान भी हमारे वैदिक दर्शन में ही उपलब्ध है। ईशावास्य उपनिषद् संसाधनों के त्यागपूर्वक भोग का उपदेश देता है- "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।" अर्थात् लालच को छोड़कर इसका बुद्धिमत्ता पूर्ण उपयोग ही हम सब का पुनीत कर्तव्य है। वेदान्त दर्शन उपनिषदों का दर्शन है जिनसे उपर्युक्त समस्याओं को सुझाया जा सकता है। प्रस्तावित शोधपत्र में इसे सिद्ध करने का प्रयास किया जाएगा कि वेदान्त ही वर्तमान और भविष्य का जीवन दर्शन है।

78

महर्षि दयानन्द के वैदिक परिप्रेक्ष्य में मनुष्य व प्रकृति के मूल में अव्यक्त शक्ति का चिन्तन

डॉ॰ श्वेतकेतु शर्मा

वैदिक प्रवक्ता; संस्थापक संयोजक:
वेद प्रचार मन्डल
10/12, केलाबाग, सावित्री सदन, बरेली, उ॰ प्र॰

shwetketusharma@gmail.com

यह लेख महर्षि दयानन्द सरस्वती के वैदिक परिप्रेक्ष्य में मनुष्य और प्रकृति के मूल में अव्यक्त शक्ति के चिन्तन पर केन्द्रित है। इस अध्ययन में मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्ध को वेदों के साक्षात्कार से जोड़ा गया है, जिससे अव्यक्त शक्ति की महत्ता को समझाया गया है। ऋग्वेद का सुप्रसिद्ध अस्यवामीय सूक्त कहता है कि 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' अर्थात् सत्य एक ही है जिसे विद्वान् लोग कई तरह से कहते हैं। कभी परमसत्य को अग्नि, कभी इन्द्र, कभी मातरिश्वा अग्नि तो कभी यम के नाम से सम्बोधित करते हैं। दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में ईश्वर ही मनुष्य व प्रकृति का मूल है जिसे वेद मन्त्रों में प्रकट किया गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी इसे अपने भाष्यों में भलीभाँति स्पष्ट किया है। महर्षि दयानन्द ने भी अस्यवामीय सूक्त के उपर्युक्त भाव को ही स्वीकार करते हुए वेदों में बहुदेववाद को अस्वीकार करके अपने भाष्य में परमात्मा का बहुधा उल्लेख किया है। उपनिषद् कहते हैं कि देवता परोक्षप्रिय होते हैं- 'परोक्षप्रिया इव हि देवाः'। महर्षि दयानन्द ने परमात्मा को ही सर्वोच्च देवता माना है और इसी परोक्षप्रियता के कारण परमात्मा सर्वत्र रहते हुए भी अव्यक्त रहता है। प्रस्तावित अध्ययन में परमात्मा के रूप में इस अव्यक्त शक्ति, प्रकृति और मनुष्य के ऊपर विचार विमर्श किया गया है।

79

वैदिक वाङ्मय में वर्णित प्रकृति एवं चिपको आन्दोलन : एक विमर्श

डॉ॰ मृगाङ्क मलासी

सहायक आचार्य
डॉ॰ शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कर्णप्रयाग (चमोली) उत्तराखण्ड

mrigankmalasi@gmail.com

इतिहास लेखन का आधार विगत और वर्तमान का अन्तरावलम्बन, वृत्त और वर्त्तिष्यमाण के मध्य एक सतत चलने वाला संवाद है। नित्य परिवर्तित वर्तमान नित नूतन प्रकार से समीक्षा करता हुआ अतीत की कथा को नये-नये परिवेश में उपस्थित करता रहता है। यही कारण है कि इतिहास के लेखन में पूर्व का काल और आज का समय दोनों रहते हैं। अर्धनारीश्वर के समान नहीं जिसमें शिव और शक्ति अपने आधे-आधे व्यक्तित्वों के साथ एक-दूसरे से सम्पृक्त हैं अपितु वाक् और अर्थ के सदृश जो दोनों अविशकलित रूप में सम्पृक्त हैं। अतीत के कथा की जो नवीन व्याख्या होती है उसका आधार है वर्तमान की अपनी दृष्टि और अपनी विधा। व्यक्ति अपने परिवार, समाज आदि के माध्यम से अनुभवों को अर्जित करता है। अर्जित अनुभवों से वह अपनी नियति की रचना करता है। कर्मप्रधान माने जाने वाले हमारे देश में सभी प्राणियों हेतु सुख की कामना की जाती रही है। वैदिक विचारधारा के अनुसार मानव के लिए समस्त संसार ही पर्यावरण है। सृष्टि के प्रत्येक उपादान की रचना पंचतत्त्वों से हुई है। मानव प्रकृति को वैदिक काल से ही ईश्वर मानकर आराधना करता रहा है। आधुनिक समय की बात करें तो उत्तराखण्ड का सुप्रसिद्ध चिपको आन्दोलन यह दर्शाता है कि व्यक्ति और प्रकृति के किस प्रकार का सम्बन्ध है जिसे हमारे वेदों में प्रतिपादित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह बताने का प्रयास किया जाएगा कि वेदों में वर्णित प्रकृति के जिस रूप के दर्शन हमें होते हैं उसका साक्षात् क्रियान्वयन किस प्रकार चिपको आन्दोलन में किया गया। वृक्षों को कटने से बचाने के लिए पहाड़ के लोगों ने स्वयं की आहुति देनी स्वीकार की परन्तु अपने जीते जी वृक्षों का कर्तन नहीं होने दिया। यह आन्दोलन कई सारे तथ्यों को उद्घाटित करता है जिसे प्रस्तावित शोध पत्र में स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा।

80

वेदों में पर्यावरण, वन एवं वन्यजीव का सरंक्षण: आधुनिक सन्दर्भ में

सूरज
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-११०००७

surajsingh130296@gmail.com

वेद अर्थात् ज्ञान। वेद सृष्टि के ज्ञान-विज्ञान के आधार हैं। वेद संसार की प्राचीनतम ज्ञानराशि हैं। संसार के मानव-इतिहास में किसी देश और किसी काल में भी ऐसी कोई चिन्तनधारा नहीं रही, जिसमें सृष्टि सम्बन्धी चिन्तन मानव-जाति को मूल मानकर न किया गया हो। सम्पूर्ण वैदिकदर्शन के केन्द्रीभूत विषय हैं- परमात्मा, आत्मा, प्रकृति, ऋत एवं सत्य । इसलिये आधुनिक विषयों का प्रवर्तन भले ही नया दिखाई देता है परन्तु उनके मूलस्वरूप बीज-रूप में हमें वेदों में प्राप्त होते हैं। सृष्टि का हर जीव परस्पर एक दूसरे के लिये है न कि घात (हानि) के लिये। वन एवं वन्य जीवों की उपयोगिता के कारण इनका संरक्षण भारतीय-संस्कृति का विशिष्ट और अभिन्न अङ्ग है। इस उपग्रह पर सभी पौधों एवं पशु-पक्षी जो कि मानव द्वारा पाले नहीं जाते, वन्य जीवों में आते हैं। अथर्ववेदीय ऋषियों ने शुद्ध तथा समृद्ध पर्यावरण को मानव-जीवन के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण एवम् अनिवार्य माना है।बात चाहे पर्यावरण की हो अथवा वन्यजीव-संरक्षण की; वैदिकसाहित्य में इसके पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में वेदों में पर्यावरण के साक्ष्यों का निर्देशन देते हुए वन एवं वन्यजीव का सरंक्षण और उसकी महत्ता के विषय में बताया जाएगा, तथा आधुनिक काल में उसकी उपयोगिता वन एवं वन्यजीव संरक्षण के लिए भारत सरकार द्वारा चलाई गई नीतियाँ, कानून, वन्यजीव संस्था की भूमिका, विषय एवं कार्य के विषय में बताया जाएगा। इसके अतिरिक्त वन एवं पर्यावरण से सम्बन्धित आन्दोलनों के विषय में भी बताया जाएगा।

81

अथर्ववेद में वर्णित प्राकृतिक औषधियाँ : आधुनिक सन्दर्भ

प्रीति सैनी
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

वेद संस्कृत शब्द से निर्मित है जिसका अर्थ ज्ञान है। वेदों में मौजूद सामग्री के विश्लेषण से हमें ज्ञान होता है कि सभी वेदों में चिकित्सा के बारे में बताया गया है। इतना ही नहीं वेदों की महत्ता का वर्णन करते हुए यहाँ तक लिख दिया है कि जो व्यक्ति वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार नहीं करता है, वह नास्तिक है। चारों वेदों में से अथर्ववेद को चिकित्सा का स्रोत माना गया है और आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना गया है। प्राचीन भारत में उच्च गुणवत्ता का चिकित्सा ज्ञान प्रचलित था। प्राचीन भारत में प्रचलित चिकित्सा विज्ञान की कुछ झलकियाँ यहाँ प्रस्तुत की गई है। अथर्ववेद में गणित, विज्ञान, समाज शास्त्र, कृषि विज्ञान आदि अनेक विषय वर्णित है। इसमें तन्त्र मन्त्र की विधियों के बारे में बताया गया है। यह वेद ब्रह्मज्ञान के उपदेश का वर्णन करता और मोक्ष का उपाय भी बताता है। इसे ब्रह्मवेद भी कहते हैं। अथर्ववेद में चिकित्सा के विषय क्षेत्र में औषधियों का एक विशेष स्थान है, जिसमें औषध चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। औषधि मानव ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जीव जगत् के लिए अमृत के तुल्य होती है। जीव की पीड़ा हरण में औषधियों का विशेष योगदान है। प्रस्तुत शोधपत्र आधुनिक सन्दर्भ में अथर्ववेद में वर्णित प्राकृतिक औषधियाँ से सम्बन्धित विषयों का विवेचन किया जाएगा।

Part III

संस्कृत-सारांशा:

82

आधुनिकदृष्ट्या वैदिकपरिवेशभावना

डॉ॰ शिप्रा राय
अध्यापिका, संस्कृत विभागः
त्रिपुरा विश्वविद्यालयः

sipraray@tripurauniv.in

भारतीयसंस्कृतेराधारं वैदिकसंहिता। चत्वारो हि वेदाः, ऋग्-यजुः सामाथर्वभेदात्। वेदस्यैव अपरं नाम संहिता इति। संस्कृतसाहित्यस्य बहुषु स्थेलेषु परिवेशभावनाया उल्लेखः दृश्यते। वैदिकसाहित्ये तथा काव्यनाटकादिष्वपि परिवेशविषये विविधम् आलोचनम् अस्माकं दृष्टिपथमागच्छति। वैदिकवाङ्मयस्य बहुषु स्थलेषु परिवेशभावनाविषये ऋषयः नानाविधानि मतानि उपस्थापितवन्तः। वैदिकयुगस्य मानवाः जीवनधारणस्य कृते प्रकृत्याः उपरि सर्वं समर्पितवन्तः। ऋग्वेदे, सामवेदे, यजुर्वेदे, अथर्ववेदेऽपि ऋषयः परिवेशस्य गुरुत्वम् उपलब्धवन्तः। ऋग्वेदे उच्यते- जलं हि जीवनम्। जलं हि मनुष्यस्य प्राणाः। वैदिकसंहितासु परिवेशस्य विषये या आलोचना प्राप्यते तस्य प्रयोजनं सर्वेषु कालेषु समानतया समुपयोगि भवति। वैदिकऋषयः जगतः कल्याणार्थं परिवेशविषयकानि बहूनि सूक्तानि प्रोक्तवन्त यस्य प्रयोजनं इदानीन्तनकालेऽपि आवश्यकम्। शोधपत्रेऽस्मिन् मया संक्षेपेण 'आधुनिकदृष्ट्या वैदिकपरिवेशभावना' इति विषयमधिकृत्य आलोचितम्।

83

यास्काभिमत-काल-विमर्शः

प्रो॰ रणजित बेहेरा
संस्कृतविभागः
दिल्ली-विश्वविद्यालयः, दिल्ली – 110007

ranjit1213@rediffmail.com

वैदिकवाङ्मये ऋषिभिरभिलाषाप्राप्यै विविधैः मन्त्रैः प्रकृतयः स्तुताः वर्तन्ते, तद्यथा – यत्काम ऋषिर्यस्यां देवतायामार्थपत्यमिच्छन्स्तुतिं प्रयुङ्क्ते तद्दैवतः स मन्त्रो भवति (निरुक्तम्, 7.1)। पृथिवी-अन्तरिक्ष-द्युस्थानाभिधाना प्रकृतिरूपा देवताः विश्वमेतत् परिपालयन्त्येव। देवतास्वासु कालोऽपि स्तुतो वर्तते। कालपदमिदं प्राथम्येन समयार्थे ऋग्वेदस्य दशममण्डल एव प्रयुक्तम् – उत प्रहमतिदीव्या जयाति कृतं यच्छ्वघ्नी विचिनोति काले (ऋग्वेदः, 10.42.9)। परमथर्ववेदे कालपदमिदं भाग्यमित्यर्थे प्रयुक्तम्। काल-सन्दर्भे यास्काचार्येण नैकाः देवताः सन्दर्शिताः विविक्ताश्च निरुक्तस्य द्वादशाध्याये। तद्दृष्ट्यैव शोधपत्रेऽस्मिन् अश्विनौ-उषा-सूर्या-वृषाकपायी-सरण्यू-त्वष्टादीनां कालसम्बन्धीनि तत्त्वानि समुचितरूपेण प्रतिपादयिष्यन्ते।

84

वैदिकदेवतामनुष्ययोर्मध्ये अन्तर्सम्बन्धः

डॉ॰ कृष्णकान्त-सरकारः
संस्कृतविभागः
दिल्ली-विश्वविद्यालयः, दिल्ली – 110007

sarkarkrishnakanta33@gmail.com

वेद-संहिताणां सूक्तेषु वैदिक-देवतानां वर्णनं वर्तते। तात्पर्योऽस्ति यत् सूक्तेषु यस्य वर्णनमस्ति सैव देवता इति कथ्यते। देवतामनुष्योर्मध्ये अन्तर्सम्बन्धः वर्तते। मनुष्याणां शरीरस्य निर्माणं देवताभिः भवति। यथा- अग्निः देवता वेदेषु प्रसिद्धा देवता अस्ति। मनुष्याः सर्वाणि कार्याणि अग्नि-माध्यमेन कुर्वन्ति। मनुष्याणां शरीरे अपि अग्निः वर्तते। वायुदेवोऽपि मनुष्याणां शरीरे वर्तते। शरीरस्य बहूनि कार्याणि वायुमाध्यमेन भवन्ति। आपो देवता अपि मनुष्याणां शरीरे वर्तते। लोकोक्ति अपि अस्ति यत् 'जलेन विना जीवनं नास्ति'। आकाशः देवता अपि मनुष्याणां शरीरे अस्ति। पृथिवीदेवतया मनुष्याणां शरीरस्य निर्माणं भवति। अन्ततोगत्वा एवं वक्तुं शक्नुमः यत् सर्वाः देवताः मनुष्याणां शरीरे विद्यन्ते। अतः अथर्ववेदे मनुष्याणां शरीरं 'देवबन्धुः' इति उच्यते। वैदिकदेवताः एव प्रकृतिः इति उच्यन्ते। यदि प्रकृतिः मध्ये यदि सर्वाः देवताः विकार-रहिताः भवेत् तर्हि मनुष्याणां शरीरः रोगरहितः भवति। अतः वैदिक देवाः विकारयुक्तं न भवेयुः तदर्थं देवानां शान्तये प्रार्थनाः वर्तन्ते। अस्मिन् शोधपत्रे वैदिकदेवतानां स्वरूपं तथा च देवता-मनुष्योर्मध्ये अन्तर्सम्बन्धः कथमस्ति इति? एतस्य विषयस्य दार्शनिक-विवेचनं भविष्यतीति।

85

वैदिकदेवानां मूर्तामूर्तविचारः

हिमांशु-रायः
शोधच्छात्रः
बाँकुरा-विश्वविद्यालयः, पश्चिमबंगः

khimangshuroy2014@gmail.com

मैकडानल्-महाभागेन तदीये ग्रन्थे ऋग्वेदस्य सूक्तानां संख्याधिक्यं विचार्य येषां देवानां बहुधा उल्लेखः ऋग्वेदे दृश्यते, तेषां देवानां पञ्चधा विभागः उपस्थापितः। तत्र प्रथमः इन्द्रः, अग्निः सोमश्च, द्वितीयः अश्विनौ, मरुद्देवाः च, तृतीयः ऊषा, सविताः, बृहस्पतिः, सूर्यः पूषा च, चतुर्थः वायुः, द्यावापृथिव्यौ, विष्णुः रुद्रश्च, पञ्चमः यमः पर्जन्यश्च। देवाधिकृतसूक्तानां संख्या-याः क्रममनुसृत्य निर्मिता देवतानां एषा पौर्वापर्यतालिका युक्तिसङ्गता इति प्रतिभाति। केचिच्च

देवानां समयकालं युगं वानुसृत्य इन्दो-इउरोपीयदेवाः, इन्दो-इराणीयदेवाः, भारतीयदेवा इत्येतादृशमपि विभागं प्रदर्शयन्ति। एवञ्च ऋग्वेदसंहितायां पुनः देवानां स्थानान्यनुसृत्य विभागत्रयं देवानां प्रपञ्चितं दृश्यते। एतान् सर्वान् विषयान् संगृह्य परभाविनि समये ऋग्वेदस्य प्राचीनेन व्याख्याकर्त्रा आचार्येण यास्केन तदीये निरुक्तग्रन्थे देवताः पृथिवीस्थानीयाः, अन्तरिक्षस्थानीयाः, द्युःस्थानीयाः इति भेदत्रयेण विभक्ताः। प्रागुक्तान् देवतानां विभागान् एतान् अभ्युपगम्य अध्यापकेन मैकडानल्-महाभागेन तदीये ग्रन्थे पुनः देवानां काश्चन श्रेणयः विभज्य उपस्थापिताः। तासु अमूर्त्तदेवताः, युग्मदेवताः, गणदेवताः, निम्नस्तरीयदेवताः, स्त्रीदेवताश्च वर्तन्ते। ऋग्वेदस्य देवानां विविधान् एतादृशान् विभागान् तथा तद्विषयकानि विविधानि मतानि पर्यलोच्य कथयितुं शक्यते यत् वैदिकदेवेषु श्रेणीविभाग इति शब्दबन्धो न युज्यते। तथैव कश्चिद् देवो महद्गुणोपेतः, देवः कश्चिद्वा गुणहीन इति कथनमपि न उपपन्नम्। वस्तुतः सर्वे देवा एव विभूतिगुणादिविचारेण समाना एव। तत्र श्रेष्ठ-निकृष्टादिविचारः बालवदाचरणमेव। ऋग्वेदसंहितायां देवानां पर्यालोचनकाले अन्यदेकं वैशिष्ट्यं दृक्पथमायाति, तद्धि ऋग्वेदसंहितायां केषुचित् केषुचित् सूक्तेषु कश्चिदेक एव देव एककतया स्तूयते। एवं केषुचित् सूक्तेषु द्वौ देवौ युगपत् एव स्तुतौ दृश्येते। एवञ्च, केषुचित् सूक्तेषु द्व्यधिका एव देवा एकत्र युगपत् स्तूयमाना भवन्ति। एककतया स्तूयमानेषु देवेषु प्रसिद्धाः इन्द्रः, अग्निः, यमः, वायुः, ऊषाः, मित्रः, प्रजापतिः इत्येते। युग्मतया स्तूयमानेषु देवेषु प्रसिद्धाः द्यावापृथिव्यौ, मित्रावरुणौ, अश्विनौ इत्यादयः युग्मदेवाः। युगपत् एकत्र गणरूपेण स्तूयमानेषु देवेषु प्रसिद्धाः सन्ति आदित्याः, वसवः, मरुद्देवाः, ऋभुगणाः, विश्वेदेवाः प्रभृतयः गणदेवाः। प्रागुल्लिखितान् एतान् ऋग्वेदीयदेवान् अतिरिच्यापि ऋग्वेदे केषुचित् सूक्तेषु श्रद्धा, मन्युः, अक्षः, ज्ञानम्, सविता, त्वष्टा, हिरण्यगर्भः, विश्वकर्मा, बृहस्पतिः, अदितिः इत्यतेषां केषाञ्चित् अशरीरिणाम् अमूर्त्तानां वा भावात्मकदेवानां स्तुतिः प्राप्यते। अथ स्वाभाविकी एव जिज्ञासा अस्माकं मनस्सु समुपजायते यत्, एता देवताः मूर्त्ताः अमूर्त्ताः वा? एते देवा शरीरिणः अशरीरिणो वा? निरुक्तकारा आचार्याः यास्काः साकार-निराकारार्थे शरीरि-अशरीरि-अर्थे वा पुरुषविध इति अपुरुषविध इति शब्दयोः व्यवहारं कृतवन्तो निरुक्ते। तथाहि केषाञ्चित् सम्प्रदायानां मतानुसारं देवतानां मनुष्याणामिव आकारः भवति इति। मनुष्याणां रूपमिव तेषामपि रूपम्। एतस्य मतस्य ये पोषकाः, ते स्वमतानामुपस्थापनार्थं तथा परमतानां खण्डनार्थम् अधोलिखिताः युक्तीः अवतारयन्ति – वैदिका मन्त्रद्रष्टारः ऋषयः महर्षयः च मन्त्रेषु शरीरिणः चेतनसत्तावन्तो एव देवान् स्तुवन्ति। यथा बलवीर्यशौर्यादिवर्णनेन मनुष्याणां स्तुतिः क्रियामाणा लोके दृश्यते तथैव ऋग्वेदीयेषु मन्त्रेषु अपि मन्त्रद्रष्टारो महर्षयः बलवीर्यशौर्यविभूत्यादिवर्णनेन देवतानां स्तवं स्तुतिं कुर्वाणाः दृश्यन्ते। अतः यथा मनुष्याणामाकारः तथैव आकारः देवानामपि इति अवश्यं ध्येयम्। अन्यथा महर्षीणाम् एतादृशं रूपकल्पनं शौर्यवीर्यादिवर्णनं निरर्थकम् अनृतं च प्रतिपन्नं भवेत्। तेन मन्त्राणाम् अर्थहीनत्वादिदोषाः चार्वाकादिविरोधिप्रतिपादिताः सत्यमिव प्रतिभातं स्यात्।

Part IV

Appendices

Department of Sanskrit University of Delhi

The history of the Department of Sanskrit, DU begins with the history of the University itself. The Department came into existence in 1922 when the University had come into existence. During the first two years of its commencement, the Department ran without postgraduate students. It was only in 1924 that the Department had one student in its M.A. program. Following the practice of the time Mahāmahopādhyāya Pandit Lakshmidhar Shastri Kalla, the senior most of the teachers among the constituent colleges of the University occupied the position of Teacher-in-charge of the Department. As the Department had no faculty members of its own officially recognized some of the senior teachers from the colleges as Readers.

Pandit Lakshmidhar Shastri Kalla, the first in-charge of the Department belonged to St. Stephen's College. Those days the Postgraduate classes of the subject of Sanskrit were held at St. Stephen's College. Pandit Kalla pioneered the research programs in the Department of Sanskrit. He had come to the department with an illustrious background to his credit. After completing an archeological apprenticeship under Sir John Marshal, he had joined St. Stephen's College as a lecturer in October 1916. He was an elected member of the Royal Asiatic Society. Apart from being well-versed in several Indian languages, he had the knowledge of Persian, Arabic, Greek, Latin, German, French, Russian and English. His books 'The Birthplace of Kalidasa' and 'The Homeland of Aryans' got high accreditations from the scholars across the globe. It goes without saying that his contributions in building the Department are unparalleled.

Dr. N. N. Choudhuri of Ramjas College took over as Head of the

Department in the year 1949. A full-fledged University Department saw its inception only in the year 1953 when a post of Reader in Sanskrit was created and filled up. Dr. N. N. Choudhuri of Ramjas College, who was already working as the Head of the Department, was appointed in the said position of Reader and was asked to take over as the first regular Head. In 1955 a position of Professor was created. Dr. N. N. Choudhuri was appointed as the first Professor. For a long time the principal focus of the Department was to provide instructions to Undergraduate and Postgraduate courses. Research occupied prime attention only few years later. Dr. Ram Gopal was the first Ph.D. student of the Department in the academic year 1953-54. Even in the late fifties, there used to be only five or six students in its M.A. program and one or two students in Ph.D. program. This situation continued for a number of years. It was only during the early sixties that a marked improvement in the numbers of students was seen. From being a small Department it has now grown to be one of the biggest Departments in the University with more than four hundred postgraduate students, more than one hundred fifty research scholars and more than one hundred fifty teachers in colleges and the University Department.

The Department of Sanskrit enjoys the pride of having some of the stalwarts in the subject as its faculties in the past. Prof. R V Joshi, an internationally acclaimed Sanskritist introduced the modern European research methods to the Department. He is the recipient of Sahitya Academy award and 'Pravasi Bhartiya Sammana'. The special feature of the creative strength of Prof. Joshi has been his ability to author in Hindi, Sanskrit, French, Spanish and Latin with equal ease. He has the credits of publishing books and articles in all these languages. He has published the books from USA, Europe and India. He has composed fifteen Kāvyas and Mahākāvyas in Sanskrit and has edited and translated several books with detailed introductions and critical notes. Dr. Joshi has published more than thirty eight books and hundreds of scholarly articles in national and international journals. Some of his major works are 'Satyam' - The Eternal Truth, Radhāpanchashati, Upasanacintamani (A book in eight volumes consisting of 400 pages), Swarnamala - An Encyclopedia in four volumes, Bhaktimimansa in four volumes, Shivalinga Rahasya, an epic Ramapratapacaritam in two volumes, Yogsutra Patanjali (in Spanish), Laxmi-nrsimha-sahasra-nama-stotras, Vide di un Saggio Parma, Italia etc. Prof. Satyavrat Shastri, former Professor and Head

of the Department is another highly acclaimed Sanskrit scholar, writer, grammarian and poet. He has written three Mahakavyas, three Khandakavyas, one Prabandhakavya, one Patrakavya and five works in critical writings in Sanskrit.

During his career he has won many national and international awards including the Sahitya Akademi Award for Sanskrit. Sahitya Academy conferred on him an award in the year 1968 for his poetry work, Sri-gurugovindasiṁha-charitam. He became the first recipient of the Jñanpith Award in Sanskrit language. He also served as Vice-Chancellor of Shri jagannath Sanskrit University, Puri, Odisha.

Dr. S S Rana, Former Reader of the Department served as Dean of the Colleges, University of Delhi for more than 12 years. He also served as Principal of Shivaji College, University of Delhi. Prof. Vachaspati Upadhaya, the former Professor and Head of the Department served as Vice-Chancellor of Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, New Delhi for a longest period of time (1994 to 2011). Prof. Satyapal Narang, Former Professor and Head of the Department served as Director, Institute Francaisede Indologies, Pondicherry. Former Professor and Head of the Department Prof. Dipti Sharma Tripathi served as Director of National manuscript Mission, Government of India for two consecutive terms -2010-2014. Prof. Shashi Prabha Kumar, former Professor of the Department served as Founder Vice-Chancellor, Sanchi University of Buddhist-Indic Studies, Sanchi, MP. She also served as Chairperson, School of Sanskrit and Indic Studies, JNU, New Delhi. Prof. Ramesh C. Bharadwaj is serving as Vice-Chancellor, Maharshi Valmiki Sanskrit University, Kaithal, Haryana.

कुलगीत
दिल्ली विश्वविद्यालय

जयति जय जय-जयति जय जय
ज्ञान का आलोक अनुपम
श्रेष्ठ सुन्दर दिव्य दिल्ली
विश्व विद्यालय विहंगम
सकल वसुधा निज कुटुंब की
भावना संस्कृति सनातन
आधुनिक शिक्षा पुरातन
ज्ञान धाराओं का संगम
देश की स्वाधीनता हित
भूमिका शत कोटि वंदन
निष्ठा धृति सत्यम के मंगल
दिव्य भावों का समागम
जयति जय जय-जयति जय जय
ज्ञान का आलोक अनुपम
भव्य महाविद्यालयों के
परिसरों से चिर सुशोभित
श्रेष्ठ गुरुजन कर रहे नित
छात्र और छात्राएँ दीक्षित
सदचरित्राचार पावन
साधना संकल्प संयम
नवल वैश्विक चेतना
नव क्रान्ति संस्कारों का उद्गम
जयति जय जय-जयति जय जय
ज्ञान का आलोक अनुपम
श्रेष्ठ सुन्दर दिव्य दिल्ली
विश्वविद्यालय विहंगम

रचनाकार-
गजेन्द्र सोलंकी
अंतरराष्ट्रीय कवि, गीतकार

A Brief Introduction of 'WAVES'

(Wider Association for Vedic Studies (Regd.)

WAVES (Wider Association for Vedic Studies (Regd.), formerly known as "World Association for Vedic Studies (WAVES), India Branch", is a forum for all scholarly activities and views on any area of 'Vedic Studies' variously called Indian Studies, South Asian Studies or Indology. WAVES is not confined to study related to Vedas alone or to India alone. It encompasses all that applies to traditions commonly called Vedic tradition of past, present and Future, anywhere in the world.

This organization was established at Atlanta, USA in 1996 by a group of academics interested in Vedic knowledge under the chairman-ship of Prof. Bhu Dev Sharma. It is a non-religious society with no rigid ideology. Its membership is open to all without any discrimination . Today, Vedic traditions are not confined to Indian subcontinent but have spread virtually to all parts of the globe, through persons of Indian origin and through scholars and admirers of these traditions.

For several centuries Vedic people in India made significant contributions in various academic fields-science, literature, culture, technology, etc. For most of the world, these contributions are unknown, unrecognized, and sometimes rather distorted. There is a need, particularly among scholars to work for the proper understanding and appreciation of such religious, cultural and other contributions.

The general purposes for which the Society is formed are as follows: To promote Vedic and ancient Indian studies in all its forms and in all countries; To conduct multi-disciplinary activities for research and study of Vedic traditions; To support researches and studies in various Vedic subspecialties, Sanskrit, other Indian languages and contemporary works;

To encourage research in developing all aspects of Vedic and ancient Indian traditions; and To promote universal, intellectual, ethical traditions enshrined in Vedas and other works of ancient Indian origin.

WAVES's head office is in Delhi, while its four Chapters are working in Bangalore, Jodhpur ,Lucknow, and Haridwar. WAVES has published eight volumes of edited and selected papers of its National conferences which are edited by Dr. Shashi Tiwari The books are published from Pratibha Prakashan, Delhi and are available in market. Annual newsletter is another publication of WAVES, India.

वेव्स कुलगीत

वेदाध्ययन है लक्ष्य हमारा,
वेव्स है माध्यम जिसका न्यारा ॥

अपरा से जीवन निखारकर, परा से पाएँ अक्षर-ज्ञान।
सत्यं शिवं सुन्दरं के हम, सिद्ध कर पाएँ सब वरदान ॥
यही परम उद्देश्य हमारा, वेदाध्ययन है लक्ष्य हमारा ॥
वेव्स है माध्यम जिसका न्यारा ॥

वेव्स दे रहा बोध-तरंगें, भारत की विद्या पहचानें।
वेद-पुराण-स्मृति-ग्रंथों में निहित अमूल्य सार हम जानें ॥
तत्त्वज्ञान ही बोध्य हमारा, वेदाध्ययन है लक्ष्य हमारा ॥
वेव्स है माध्यम जिसका न्यारा ॥

दशकों से है वेव्स दे रहा, अवसर चर्चा का, चिंतन का ॥
एक मंच पर सबको लाना, ध्येय रहा हर सम्मेलन का ॥
वैश्विक-हित कर्तव्य हमारा, वेदाध्ययन है लक्ष्य हमारा ॥
वेव्स है माध्यम जिसका न्यारा ॥

ऋतंभरा प्रज्ञा से युत हों, भ्रमजालों से दूर बचें हम।
स्वस्ति भावपूरित जीवन हो, अनृत-मार्ग से दूर रहें हम ॥
चिदानंद गंतव्य हमारा, वेदाध्ययन है लक्ष्य हमारा ॥

वेदाध्ययन है लक्ष्य हमारा,
वेव्स है माध्यम जिसका न्यारा ॥

-- डॉ॰ शशि तिवारी

WAVES Conferences

International Conferences

1. Indus Saraswati Age and Ancient India
   Atlanta (Georgia) USA, Oct. 4-6, 1996

2. History of Ancient Indian Sciences
   USL, Lafayette LA, USA, Oct. 25, 1997

3. New Perspectives on Vedic & Ancient Indian Civilization
   Los Angeles, USA, Aug. 7-9, 1998

4. Tulsidasa & His Works
   Miami, Florida, USA, Nov. 26-28, 1999

5. Contemporary View's on Vedic Civilization
   Hoboken, NJ, USA, July 28-30, 2000

6. India's Contribution and Influences in the World
   University of Massachusetts, Dartmouth, MA, USA, July 12-14. 2002

7. India's Intellectual Traditions-Contemporary Global Conext
   University of Maryland, Shady Grove Campus, Washington DC, USA, July 9-11, 2004

8. Vedic Ideas for Global Harmony and Peace
   University of Houston, TX, USA, July 8-10, 2006

9. Vedic Heritage for Global Welfare
   Orlando, 2008

10. Vedic Knowledge for Civilization Harmony
    Trinidad, 2010

11. Vedic Cultures - Epic and Pauranic Phase
    Dartmouth, Massachusetts, 2012

12. Vedic Living in Modern World
    Fairfield, Iowa, 2014

13. Scientific Aspects of Vedic Knowledge
    Delhi, India, 2016

14. Vedic Traditions for Education and Learning
    Dallas, Texas, Aug. 2-5, 2018

15. Impact of Vedic Wisdom on the World Today
    Online, 2020

Conferences Held in India & Nepal

1. 26th India Conference
   Innovative Applications of Vedic Knowledge in Today's World
   New Delhi; 23-25 December, 2022

2. 25th India conference
   The Concept of Liberty and Equality in the Vedic Perspective
   Online, December, 10-12, 2021

3. 23rd India conference
   Vedic Wisdom and Women : Contemporary Perspective
   Delhi, December, 5-7, 2019

4. 22nd India conference
   Vedic Perspective of Indian Arts
   Delhi, November, 27-29, 2018

5. 21st India conference
   Practical Aspects of Vedic Knowledge
   Delhi, December, 10-12, 2017

6. 20th India & 12th International Conference
   Scientific Aspects of Vedic Knowledge
   Delhi, December, 15-18, 2016

7. 19th India Conference
   Science and Spirituality in Vedic Traditions: Modern Context
   Delhi; November, 27- 29, 2015

8. 18th India Conference
   Vedic Philosophical Traditions : Modern Context
   Varanasi, November, 15- 17, 2014

9. 17th India Conference
   Vedic Views on Education and Morality : Modern Context
   Lucknow; November, 22- 24, 2013

10. 16th India Conference
    Vedic Views on Man and Nature : Modern Context
    Delhi; December, 24- 26, 2012

11. 15th India Conference
    Veda And Thought Revolution
    Haridwar; March, 14-17, 2012

12. 14th India Conference
    The Opportunities and Challenges of Ayurveda
    Hyderabad; 21-23 Jan, 2011

13. 13th India Conference
    Creation and Existence: Indian Perspective
    New Delhi; Dec. 24-26, 2009

14. 12th India Conference
    Harappan Civilization and Vedic Culture
    New Delhi; Dec. 24-25, 2008

15. 11th India Conference
    Vedic Value System: Contemporary Relevance & Challenges
    Vrindavan, UP; Dec. 14-16, 2007

16. 10th India Conference
    Cultural Consciousness in Ancient Indian Society
    New Delhi; Dec. 15-17, 2006

17. 9th India Conference
    Approach to Health & Happiness in Indian Thought
    Jaipur, Rajasthan; Dec. 16-18, 2005

18. 8th India Conference
    Science, Consciousness & Vedic Heritage
    Bangalore, Karnataka; Dec. 31, 2004 - Jan. 2, 2005

19. 7th India Conference
    Contemporary World Order: A Vedic Perspective
    Pondicherry; Dec. 27-29, 2003

20. Nepal Conference
    Vedic Traditions in South and South-East Asian Region
    Kathmandu, Nepal ; July 12-13, 2003

21. 6th India Conference
    Vedic Intellectual Tradition: Modern Context
    New Delhi, Dec. 27-28, 2002

22. 5th India Conference
    Vedic Wisdom & Global Issues
    Srisailam, Andhra Pradesh; Dec. 28-30, 2001

23. 4th India Conference
    State & Society : An Ancient Indian Perspective
    New Delhi; Dec. 15-16, 2000

24. 3rd India Conference
    Challenges of Modernity: The Vedic View
    New Delhi; Jan. 7-8, 2000

25. 2nd India Conference
    Ancient Indian Wisdom & Contemporary Challenges
    New Delhi; Dec 24-25, 1998

26. 1st India Conference
    Indian Identity and Cultural Continuity
    New Delhi; Dec. 27, 1997

WAVES Publications

WAVES International Publications:

1. **Revisiting Indus-Sarasvati Age and Ancient India**
   (Proceedings of the 1st International Conference held at USA)
   Editors:- Prof. Bhu Dev Sharma and Dr. Nabarun Ghose
   Edition :- 1998
   Price :- $ 25.00 for Members, | Rs. 250/- for Members
   $ 40.00 for Non-Members, | Rs. 500/- for Non-Members
   $ 99.0 for Libraries | Rs. 1000/- for Libraries

2. **New Perspectives on Vedic and Ancient Indian Civilisation**
   (Proceedings of the 2nd International Conference held at USA)
   Editor :- Prof. Bhu Dev Sharma
   Edition :- 2000
   Price :- $ 25.00 for Members, | Rs. 250/- for Members
   $ 40.00 for Non-Members, | Rs. 500/- for Non-Members
   $ 99.0 for Libraries | Rs. 1000/- for Libraries

3. **Contemporary Views on Indian Civilization**
   (Proceedings of the 3rd International Conference held at USA)
   Editor :- Prof. Bhu Dev Sharma | Edition :- 2003
   Price :- $ 25.00 for Members, | Rs. 250/- for Members
   $ 40.00 for Non-Members, | Rs. 500/- for Non-Members
   $ 99.0 for Libraries | Rs. 1000/- for Libraries

4. **India's Intellectual Tradiations And Contributions to the**

World
Editors:- Bal Ram Singh, Surendra N. Dwivedi, Satish C. Mishra, Bhu Dev Sharma, Dhirendra A. Shah
Edition :- 2010
Price :- $ 25.00 for Members, | Rs. 250/- for Members
$ 40.00 for Non-Members, | Rs. 500/- for Non-Members
$ 99.0 for Libraries | Rs. 1000/- for Libraries

5. **Vedic Heritage for Global Harmony and Peace in Modern Context**
   Editor :- Bal Ram Singh and Surendra N. Dwivedi
   Edition :- 2012
   Price :- $ 25.00 for Members, | Rs. 250/- for Members
   $ 40.00 for Non-Members, | Rs. 500/- for Non-Members
   $ 99.0 for Libraries | Rs. 1000/- for Libraries

6. **Vedic Traditions for Education and Learning**
   (Proceedings of the 13th International Conference held at Dallas, Texas, USA.)
   Editors:- Prof. Narayanan Komerath & Dr. Shashi Tiwari
   Edition:- 2018
   Publisher:- SCV Inc, USA.

How to purchase:
Send your order with check of appropriate amount in the name of 'World Association for Vedic Studies' to purchase any of these works, please send enquiries to:
Mr. Dhirendra A. Shah
Address: 780 Ullswater Cove, Alpharetta, GA-30202, USA
Contact: 770-664-8779 | Fax: 770-664-8780
Email: treasurer@wavesinternational.net, sairam@aol.com

WAVES India Publications:

1. **Contemporary World Order: A Vedic Perspective**
   (Ancient Indian Literary Heritage Volume-I)
   (Proceedings of the 7th India Conference held at Pondicherry)
   Editors:- Dr. Shashi Tiwari, Sub-Editor: Dr. Alka B. Bakre
   Edition :- 2009
   Publisher : Pratibha Prakashan, 7259/20
   Ajendra Market, Premnagar, Shakti Nagar, Delhi-110007
   Price :- Rs. 250/- for Members | Rs. 500/- for Non-Members
   Rs. 1000/- for Libraries

2. **Harappan Civilization and Vedic Culture**
   (Ancient Indian Literary Heritage Volume-II)
   (Proceedings of 12th India Conference held at New Delhi)
   Editor :- Dr. Shashi Tiwari | Edition:- 2010
   Publisher : Pratibha Prakashan, 7259/20
   Ajendra Market, Premnagar, Shakti Nagar, Delhi-110007
   Price :- Rs.1,795/-

3. **Creation and Existence in Indian Tradition**
   (Ancient Indian Literary Heritage Volume-III English & Sanskrit)
   (Proceedings of the 13th India Conference held at New Delhi)
   Editor :- Dr. Shashi Tiwari | Edition:- 2011
   Publisher : Pratibha Prakashan, 7259/20
   Ajendra Market, Premnagar, Shakti Nagar, Delhi-110007
   Price :- Rs.995/-

4. **भारतीय परम्परा में सृष्टि एवं स्थिति**
   (Ancient Indian Literary Heritage Volume-IV Hindi)
   (Proceedings of the 13th India Conference held at New Delhi)
   Editor :- Dr. Shashi Tiwari | Edition:- 2011
   Publisher : Pratibha Prakashan, 7259/20
   Ajendra Market, Premnagar, Shakti Nagar, Delhi-110007
   Price :- Rs.1,250/-

5. **Health and Happiness in Indian Perspective**
   भारतीय परम्परा में स्वास्थ्य एवं सुख
   (Ancient Indian Literary Haritage Volume-V)
   (Proceedings of the 9th India Conference held at Jaipur)
   Editor :- Dr. Shashi Tiwari | Edition :- 2016
   Publisher : Pratibha Prakashan, 7259/20
   Ajendra Market, Premnagar, Shakti Nagar, Delhi-110007
   Price :- Rs.2,495/-

6. **Scientific Aspects of Vedic Knowledge**
   (Ancient Indian Literary Heritage Volume-VIII)
   (Proceedings of the 20th India Conference & 12th International Conference held at Delhi)
   Editor :- Dr. Shashi Tiwari | Edition :- 2018
   Publisher : Pratibha Prakashan, 7259/23
   Ajendra Market, Premnagar, Shakti Nagar, Delhi-110007 Price :- Rs.3,595/-

7. **वैदिक परम्परा में विज्ञान और अध्यात्म**
   (Ancient Indian Literary Heritage Volume-VII)
   (Proceedings of the 19th India Conference held at Delhi)
   Editor :- Dr. Shashi Tiwari | Edition :- 2018
   Publisher : Pratibha Prakashan, 7259/23, Ajendra Market,
   Premnagar, Shakti Nagar, Delhi-110007
   Price :- Rs.1,995/-

8. **Science and Spirituality in Vedic Tradition**
   (Ancient Indian Literary Heritage Volume-VI)
   (Proceedings of the 19th India Conference held at Delhi)
   Editor :- Dr. Shashi Tiwari | Edition :- 2018
   Publisher :- Pratibha Prakashan, 7259/23
   Ajendra Market, Premnagar, Shakti Nagar, Delhi-110007
   Price :- Rs.1,995/-

Author Index

अम्बष्ट, ज्योति, 46
आर्य, निखिल राज, 44
आर्या, करुणा, 55
ऋचा, 59
कुमार, तुषार, 49
कुमार, पिण्टू, 60
कुमार, बलराम, 51
कुमार, मनीष, 57
कुमार, विजित, 64
कुमारी, संगीता, 60
गौड, नीलम, 58
चन्दा, 52
जायसवाल, दिलीप कुमार, 54
जुनेजा, ललिता, 56
जोशी, शीतल, 41
तिवारी, कल्पना, 66
तिवारी, विनोद कुमार, 67
त्रिपाठी, दिव्या, 44
दुबे, अर्चना रानी, 49, 50
देवराज, 54
पाण्डेय, सुमित कुमार, 62
बाला, स्मृति, 62
बेहेरा, रणजित, 75
भारद्वाज, विशाल, 40
मलासी, मृगाङ्क, 69
मिश्रा, मोहित कुमार, 58
रथ, दुर्गाप्रसाद, 42
राय, शिप्रा, 75
राय, हिमांशु, 76
लोधी, सत्येन्द्र, 37
शर्मा, श्वेतकेतु, 68
शर्मा, साधना, 47
शर्मा, सीमा, 39
शर्मा, सुमेधा, 67
शुक्ला, प्रतिभा, 45
श्री, आकांक्षा, 64
संजू, सुप्रिया, 63
सपना, 61
सरकार, कृष्णकान्त, 76
सरकार, चिरञ्जीत, 53
सरकार, त्रिद्वीप, 48
सिंह, सिद्धार्थ शंकर, 37
सूरज, 70, 71
सेठ, अंजू, 65
सोनी, इंदु, 38
हरीश, 43

Aanchal, 19
Annapoorani, A., 10
Athavale, Jayant Balaji, 13
Awasthi, Saurabh, 19

Bezbaruah, Kakali, 13
Bhattacharya, Partha Sarathi, 7
Bisht, Romila Rawat, 19

Boddupalli, Raghava S., 3

Chakraborty, Munmun, 25
Chaudhary, Shivam, 28
Clarke, Sean, 13

Dash, Prashanta Kumar, 5
Dash, Sabita, 15

Gautam, Dinesh Kumar, 19
Gopal, Madhav, 8
Goswami, Ashlesha, 18
Goswami, Kankana, 24

Khandelwal, Aparna Dhir, 2
Khurana, Mitushi, 19
Kundu, Sanchita, 17

Lata, Ranjan, 14

Manektala, Charan JS, 23
Mani, Vineet, 6
Mondal, Tahasin, 29

Pandey, Asha Lata, 12
Pandey, Kadambari, 32
Pati, Sushree Sasmita, 18
Prabhakar, C. L., 22
Pramod, D., 30

Rajpal, Vijay Rani, 19
Rajpurohit, JS, 26
Roy, Lipika, 27

Saha, Kasturi, 19
Sahoo, Manasi, 9
Sarma, Bhagyashree, 20
Shankar, Sati, 2
Sharma, Kiran, 34
Sikri, Richa, 16
Singh, Umesh Kumar, 33
Somya, 19
Sonkar, Anand, 19
Suryanarayanan, A. S., 31

Thakur, Bhavpreeta, 21
Tiwari, Ayushi, 19
Tiwari, Shashi, 1
Tripathi, Asha Rani, 11

Vyas, Ravi Shankar, 4